जिनवाणी

नमस्कारमंत्र

णमोअरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमोआयरियाणं
णमोउवज्झायाणं
णमोलोएसव्वसाहूणं
एसोपंचणमुक्कारोसव्वपावप्पणासणो
मंगलाणंचसव्वेसिंपढमंहवइमंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

अक्टूबर, 2001, आश्विन, 2058

आह्वान है हमारा -

उन इतिहास प्रेमियों को जो सुधर्मा स्वामी से लेकर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण तक के इतिहास का सांगोपांग अध्ययन करना चाहते हैं।

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2 की परीक्षा में शामिल होने के लिए।

चौंकिये नहीं।

इस परीक्षा का अग्रिम प्रश्न-पत्र जिनवाणी पत्रिका के अगस्त माह के अंक में प्रकाशित हो चुका है जिसमें से ही प्रश्न-पत्र भाग ''ब'' के सभी 70 अंक के प्रश्न पूछे जावेंगे। केवल भाग ''अ'' के 30 अंक के प्रश्न पुस्तक से रहेंगे।

100 में से 100 अंक प्राप्त करने वालों को 21 हजार रु. का विशिष्ट सम्मान पुरस्कार। 25 वर्ष से कम उम्र को युवा वर्ग और 25 से अधिक को प्रौढ़ वर्ग। दोनों वर्गों के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः 11, 9 व 7 हजार रुपयों का तथा सभी उत्तीर्ण होने वालों को आकर्षक पुरस्कार।

जुट जाइये। शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए।

परीक्षा तिथि - 16 जून, 2002
आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि - 31 मार्च, 2002
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

रतनलाल सी. बाफना, ज्वैलर्स
नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव - 425001
फोन व फैक्स नं. 223903, 222630, 225903, 227332

हमारी आगामी योजनाएँ (प्रस्तावित)-

1. जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग - 3,4
2. उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3
3. सामायिक सूत्र (उपाध्याय अमरमुनिजी)
4. जैन तत्व प्रकाश (आचार्य अमोलक ऋषिजी)

जिनवाणी

1032

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेंति जे भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी।।
मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **प्रधान सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र**
  3 K 25, कुड़ी भगतासनी
  हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.
- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	5000 रु.
संरक्षक सदस्यता	2000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

visit us at:www.jinwani.com

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जे,
न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा,
उभयस्संतरेण वा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र 1.25

सावद्य, व्यर्थ और मर्मन्तुद,
पूछे जाने पर भी मुनिजन
अपने या पर दोनों के हित,
बोले न भूलकर कभी वचन ।।

अक्टूबर 2001
वीर निर्वाण सं. 2527
आश्विन, 2058

वर्ष : 58 **अङ्क.** : 10

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस,
जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

8140

प्रवचन / निबन्ध

साधना के ज्ञातव्य सूत्र (2)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	7
अपने चरित्र को ऊँचा उठाइए	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	10
संघ का उन्नयन : कर्त्तव्यपालन से	: महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.	15
उपभोग–परिभोग परिमाण व्रत	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	21
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्मय (3)	: श्री जशकरण डागा	24
नारी अपने आसपास स्वर्ग का निर्माण कर सकती है	: श्रीमती शान्ता मोदी	27
पति पत्नी का अहं : दरार का कारण	: श्री कैलाश जैन	36
आओ वैराग्य में मन रमाएँ	: श्री नेमीचन्द जैन	38

विचार / आगम–परिचय / तथ्य

महावीर वाणी (सम्यग् ज्ञान)	: संकलित	6
अनमोल तथ्य	: श्री त्रिलोकचन्द जैन	23
अप्राकृतिक जीवन शैली : रोग का मूल	: श्री चंचलमल चोरड़िया	26
भगवान महावीर : 101 तथ्य (4)	: श्री राजेश जैन 'देवकर'	32
आत्मश्लाघा : एक विष	: डॉ. गुलाबसिंह दरड़ा	37

कथा / कविता / प्रसंग

सुख भोग में नहीं, त्याग में है	: भण्डारी सरदारचन्द जैन	9
कैसे निर्मल मन होगा	: श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'	28
प्राणिवध का त्याग	: श्री लालचन्द्र जैन	29
करूणामूर्ति धर्मरुचि	: श्री दुलीचन्द जैन	34

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	39
समाज–दर्शन	: संकलित	40
श्रद्धांजलि	: संकलित	47
पर्युषण रिपोर्ट	: संकलित	49
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	68

सम्पादकीय

हिंसा का समाधान हिंसा नहीं

●डॉ. धर्मचन्द जैन

सम्प्रति हिंसा एवं आतंकवाद देश और विश्वस्तर पर चिन्ता के विषय बने हुए हैं। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के 'वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर' एवं 'पेण्टागन' भवनों से विमान टकराकर जो जन–धन का विनाश किया गया, उससे आतंकवाद का सशक्त रूप सामने आता है। इस घटना ने अमेरिका सहित पूरी दुनिया को दहला दिया।

1 अक्टूबर 2001 को जम्मू काश्मीर के विधानसभा भवन में बम विस्फोट से विनाश का घृणास्पद चित्र उपस्थित हुआ। इससे पूर्व भी जम्मू काश्मीर में आये दिन आतंककारी एवं निरपराधों के विनाश की घटनाएँ होती रही हैं।

आतंकवाद के अनिष्टकारी भयंकर रूप को देखकर सभी चाहते हैं कि दुनिया से आतंकवाद समाप्त होना चाहिए। अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने प्रमुख आतंककारी ओसामा बिन लादेन को लक्ष्य बनाकर अफगानिस्तान पर आक्रमण की पूरी तैयारी कर ली है। ब्रिटेन सहित अनेक राष्ट्र अमेरिका का सहयोग कर रहे हैं। भारत जैसा शान्तिप्रिय राष्ट्र भी आतंककारी समस्याओं से ग्रस्त होने के कारण अपने को अमेरिका का सहयोगी घोषित कर रहा है।

चिन्तन का विषय यह है कि क्या आतंकवाद की इस समस्या का समाधान प्रस्तावित युद्ध के द्वारा संभव है? जैनागमों का अध्ययन करने से विदित होता है कि हिंसा का समाधान प्रतिहिंसा/हिंसा से सम्भव नहीं है। ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में स्पष्ट रूप से कहा गया है– "रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स णत्थि सोही।" अर्थात् खून में सने हुए वस्त्र को खून से धोकर शुद्ध नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार हिंसा को हिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता। दैनिक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि हिंसा का उत्तर हिंसा से देने पर प्रतिहिंसा भड़कती है एवं दोनों पक्षों को हानि होती है।

युद्ध जैसी विभीषिका का प्रभाव एक देश पर नहीं सारी दुनिया पर पड़ता है। जन–धन की तो हानि होती ही है, अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ता है। भूखमरी, अशान्ति एवं संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में हुई हानि का आकलन करते हुए अनेक राष्ट्रों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना की। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने शान्ति की स्थापना को प्रमुख लक्ष्य माना तथा यथासम्भव युद्ध की स्थिति को टालने का निर्णय लिया। किन्तु अब फिर युद्ध की स्थिति बनने लगी है। लघुस्तर पर तो युद्ध चलते रहे हैं, किन्तु अमेरिका जैसी महाशक्ति का कदम युद्ध का भयंकर रूप भी ग्रहण कर सकता है। मानव जाति की मांग यह है कि यह युद्ध बृहत् रूप धारण न करे।

प्रायः सत्ता, सम्पत्ति, भूमि आदि को लेकर एक दूसरे व्यक्ति के प्रति हिंसात्मक कार्यवाही होती है। एक के पास ये वस्तुएँ/शक्तियाँ अधिक होने पर

दूसरा उसका विरोध करने के लिए तत्पर हो जाता है। कभी व्यापार व्यवसाय में एक–दूसरे को उखाड़ने के लिए भी हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। कभी अपने शत्रु का विनाश करने के लिए आतंकवाद को पनपाया जाता है, जो समय आने पर वह उस पनपाने वाले के लिए ही विघातक बन जाता है।

अधिक खतरा तब होता है जब धर्म एवं जिहाद के नाम पर आतंकवाद अपने पाँव फैलाता है। दूसरे जिन्हें आतंकवादी समझते हैं, वे (आंतकवादी) अपने आपको न्याय/धर्म की लड़ाई के योद्धा मानते हैं। यह सच है कि कोई भी धर्म हिंसा को अच्छा नहीं बंताता, किन्तु धार्मिक कट्टरता के कारण अन्य धर्मावलम्बियों को मिथ्यात्वी, काफिर आदि समझा जाता है, जिसके कारण दूसरों के प्रति घृणा एवं अनादर का भाव जन्म लेता है। इससे अपने को उच्च एवं दूसरे को निम्न मानने की प्रवृत्ति को बल मिलता है। मानवीय दृष्टिकोण से यह बहुत ही हेयभाव है। इसके परिणामस्वरूप अपना हित एवं दूसरों का अहित करने का भाव जागृत होता है। इसलिए धर्म की कट्टरता का ऐसा एकांगी बीभत्स रूप त्याज्य है। अपने धर्म में दृढ़ रहकर भी अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति सौहार्द का भाव होना चाहिए। धर्मनिरपेक्षता, सर्वधर्मसमभाव आदि अनेक शब्दों का इसके लिए प्रयोग भी किया जाता है, किन्तु इन दोनों से भी बढ़कर एक शब्द हो सकता है– सर्वधर्मसद्भाव। सभी धर्मों एवं उनके अनुयायियों के प्रति हमारा सद्भाव होना चाहिए। भावात्मक रूप से उनकी हानि का चिन्तन मन में नहीं आना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो हम नाम के धार्मिक है, सच्चे धार्मिक नहीं बने हैं। धर्म में भी जब राजनीति प्रवेश कर जाती है तब लोग अपने धर्मावलम्बियों एवं अपने धर्म का प्रचार–प्रसार व उन्नयन चाहते हैं तथा अन्य धर्मावलम्बियों एवं अन्य सम्प्रदायावलम्बियों को वे नीचा दिखाकर प्रसन्न होते हैं। यह प्रवृत्ति भी धीरे–धीरे आतंकवाद/जिहाद का रूप ग्रहण कर लेती है।

आतंकवाद के अनेक मार्ग भले ही हों, किन्तु स्पष्टतः वह सामान्य मानवजाति के लिए विनाशकारी एवं भयावह है, इसलिए उस पर नियन्त्रण करना आवश्यक है।अब सोचना यह है कि आतंकवाद या हिंसा पर नियन्त्रण किस प्रकार हो? इस संबंध में अधिकतर लोगों के मन में तो यही विचार उत्पन्न होता है, जो जॉर्ज बुश एवं अमेरिकी सरकार में उत्पन्न हुआ। अमेरिका प्रमुख आतंककारी ओसामा बिन लादेन का ही नहीं समस्त आतंककारियों का मूलोच्छेदन करना चाहता है, किन्तु क्या ऐसा सम्भव है?

1. युद्ध की कार्यवाही से कतिपय आतंककारियों एवं उनके ठिकानों को नष्ट किया जा सकता है, किन्तु आतंकवाद का समूल–उच्छेद नहीं किया जा सकता। आतंकवाद मन में बसता है, जिसके बीज कब किसके मन में अंकुरित हो जायें, कह नहीं सकते। युद्ध से ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक रूप से आतंकवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता।

2. युद्ध के द्वारा अनेक निरपराधों की जान जा सकती है, जो मानवता की

दृष्टि से कितना घृणित कार्य होगा।

3. इससे देश की अर्थव्यवस्था भी चरमराती है तथा उसके साथ ही देश को अनेक आपदाएँ आ घेरती हैं।

4. हिंसा से हिंसा भड़कती है, शान्त नहीं होती। बदले की भावना का बीज हिंसा के माध्यम से नष्ट नहीं होता, वह सृष्टि में कहीं न कहीं जड़ें जमा लेता है।

5. आचारांग सूत्र में कहा गया है–

"अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण परं'

अर्थात् हिंसा तो एक से बढ़कर एक होती है। उसके साधनों एवं रूपों का विस्तार हो सकता है। आधुनिक युग में हिंसा के साधनों की होड़ लगी हुई है किन्तु इनसे विनाश ही सम्भव है, जो मानवता के हिमायती को स्वीकार नहीं हो सकता।

6. सूत्रकृतांग सूत्र में स्पष्ट कथन है कि हिंसा करने, हिंसा कराने एवं हिंसा का अनुमोदन करने से वैर बढ़ता है–

"सयं तिवायए पाणे, अदुवऽन्नेहिं घायए।
हणंतं वाणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो।।–सूत्रकृतांग 1.1.1.3

इस प्रकार युद्ध या हिंसा के द्वारा आतंकवाद के विनाश का चिन्तन न व्यावहारिक रीति से समुचित है और न ही जैनागमों के आधार पर। यदि आतंकवाद एवं हिंसा को इस प्रकार नहीं मिटाया जा सकता तो फिर दूसरे क्या उपाय हो सकते हैं? इस संबंध में कतिपय बिन्दु प्रस्तुत हैं–

1. आतंकवाद या हिंसा को नियन्त्रित किया जा सकता है, पूरी तरह नष्ट नहीं किया जा सकता।

2. जिन कारणों से आतंकवाद पनपता है उनके मूल में जाकर उन्हें रोकना चाहिए।

3. आतंककारियों को अपने स्वार्थ के लिए भी बढ़ावा देने की प्रवृत्ति को रोकना चाहिए।

4. उनकी गलत प्रवृत्तियों को रोकने हेतु सम्बद्ध राष्ट्रों को सावधान किया जाना चाहिए। वे यदि वे फिर भी नहीं रोकते है तो गांधीजी के असहयोग आन्दोलन जैसा रुख अपनाना चाहिए।

5. गुप्तचर सेवा को सुदृढ़ बनाकर आतंककारी गतिविधियों का प्रारम्भ में ही समापन करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

6. यदि अत्यन्त विवशता में मानव समुदाय को बचाने के लिए हिंसा के अलावा अन्य कोई उपाय न रह गया हो तो ऐसी परिस्थिति में विरोधी हिंसा का सहारा लिये जाने की अनुमति भी जैनाचार्यो ने दी है।

अहिंसा से बढ़कर शान्ति का कोई उपाय नहीं हो सकता। अहिंसा में सबका कल्याण निहित है–**"अहिंसा तस-थावर-सव्व भूयखेमंकरी"**–प्रश्नव्याकरणसूत्र 1.2

अर्थात् त्रस एवं स्थावर सभी प्राणियों का कल्याण अहिंसा से सम्भव है। हिंसा किसी भी स्थिति में विश्वकल्याण का साधन नहीं बन सकती।

महावीर वाणी

सम्यग् ज्ञान

पढमं नाणं तओ दया। -दशवैकालिक 4.10

प्रथम ज्ञान होना चाहिए तत्पश्चात् दया अर्थात् आचरण।

जहा सूई ससुत्ता, पडिआ वि न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे वि न विणस्सई। -उत्तराध्ययन सूत्र 29.59

जिस प्रकार धागे में पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती है, उसी प्रकार ज्ञानरूप धागे से युक्त आत्मा संसार में कहीं भटकती नहीं, अर्थात् विनाश को प्राप्त नहीं होती।

तम्हा पंडिए नो हरिसे, नो कुप्पे -आचारांगसूत्र 1.2.3

आत्मद्रष्टा साधक को ऊँची या नीची कैसी भी स्थिति में न हर्षित होना चाहिए और न कुपित ही।

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं।। -उत्तराध्ययनसूत्र 32.2

सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश से, अज्ञान और मोह के त्याग से, राग और द्वेष के क्षय होने से, आत्मा एकान्त सुखमय मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

नाणेण जाणई भावे। -उत्तराध्ययनसूत्र 28.35

जीव ज्ञान से पदार्थों के स्वरूप को जानता है।

नच्चा नमइ मेहावी। -उत्तराध्ययनसूत्र 1.45

प्रज्ञाशील ज्ञानोपार्जन कर के विनम्र हो जाता है।

जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्त–परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए,एवं हवइ बहुस्सुए।। -उत्तराध्ययनसूत्र 11.25

जिस प्रकार नक्षत्र परिवार से परिवृत ग्रहपति चन्द्रमा पूर्णिमा को परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार सन्त जन के परिवार से परिवृत बहुश्रुतज्ञानी समस्त कलाओं से परिपूर्ण होता है।

नाणसंपन्नयाए णं जीवे,
सव्वभावाहिगमं जणयइ।। -उत्तराध्ययनसूत्र 29.59

ज्ञान की सम्पन्नता से जीव सभी पदार्थ स्वरूप को जान सकता है।

सुयस्स आराहणयाएणं अन्नाणं खवेइ।। -उत्तराध्ययनसूत्र 29.24

ज्ञान की आराधना करने से जीव अज्ञान का क्षय करता है।

नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा। -उत्तराध्ययनसूत्र 28.30

ज्ञान के अभाव में चारित्र–संयम नहीं होता।

जावन्तऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा। -उत्तराध्ययनसूत्र 6.1

जितने अविद्यावान् पुरुष हैं वे सब अनेकानेक दुःख उत्पन्न करने वाले हैं।

(क्रमशः 2)

साधना के ज्ञातव्य सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

लोक में धर्मास्तिकाय के अस्तित्व का प्रमाण

संसार के समस्त जीव अजीव तत्त्वों को चलने–गति करने में जो सहायक बने, उस द्रव्य का नाम है धर्मास्तिकाय और इनके एक स्थान पर रुकने–स्थिर होने में जो सहायक बने वह है अधर्मास्तिकाय। लेकिन यह कैसे समझावें कि धर्मास्तिकाय है? केवल लाखों, करोड़ों, अरबों, खरबों ही नहीं, अपितु अनन्त पदार्थ चल रहे हैं, गति कर रहे हैं। यदि गति करने में कोई सहायक नहीं हो तो जीव चलते–चलते अलोक में घुस जाने चाहिये। सिद्ध आत्मा ऊर्ध्व गति वाली है। संसार छोड़ते ही वह एक सैकिण्ड से भी कम समय में 14 रज्जू प्रमाण लोक को लांघ लेती है, लेकिन लोक का अन्त आते ही रुक जाती है। आगे क्यों नहीं जाती? अलोक में आकाश है, जगह है, फिर भी जीव वहाँ जाता क्यों नहीं? इसीलिए नहीं जाता कि वहाँ उसे गति करने में सहायक बनने वाला धर्मास्तिकाय नहीं है। लोक के आकाश तक ही धर्मास्तिकाय है, अलोक में नहीं। इसीलिये सिद्धात्मा अलोक में गति नहीं करती। पानी में मछली एक किनारे से दूसरे किनारे और दूसरे किनारे से तीसरे किनारे तक बड़ी तेजी से दौड़ती है, लेकिन किनारे के बाहर क्यों नहीं आती? इसीलिये कि आगे पानी नहीं है। ठीक इसी प्रकार जीव लोक के बाहर इसीलिये नहीं जाता कि वहाँ गति करने में सहायक तत्त्व धर्मास्तिकाय नहीं है। इस प्रकार जीव और पुद्गल को गति करने में सहायक होने वाले द्रव्य का नाम है धर्मास्तिकाय और स्थिति में सहायक होने वाला है अधर्मास्तिकाय। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि पांचों कायों का भगवती सूत्र में प्रसंग–प्रसंग पर अनेक जगह वर्णन किया गया है।

सैद्धान्तिक ज्ञान को समृद्ध बनाने का उपाय

पुराने समय के श्रावक बड़े ज्ञान रसिक होते थे। उनका सैद्धान्तिक ज्ञान इतना समृद्ध होता था कि वे अन्य लोगों के तर्क को निरस्त करने में सदा सक्षम–समर्थ रहते थे। श्रावक आप भी हैं। आपको अभी–अभी धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय की बात बताई गई है। पर कदाचित् 10 दिन बाद कोई जैनेतर बन्धु आपको यह पूछ ले कि जैन धर्म में अस्तिकाय का वर्णन है, वह समझ में नहीं आता। धर्मास्तिकाय क्या है, अधर्मास्तिकाय क्या है? वे कैसे माने जाते हैं, उनका क्या प्रमाण है, क्या सबूत है, यह आप हमको समझा दीजिए। तो क्या 10 दिन बाद आप उनको यह सब कुछ अच्छी तरह समझा सकेंगे?

आप जवाब नहीं दे सकेंगे, इसका कारण यह है कि आपने स्वतः स्वाध्याय करने की, स्वयं चिन्तन करने की प्रवृत्ति को छोड़ रखा है। यही कारण है कि जो बातें आपको बतलाई गई हैं, उन्हें आप याद नहीं रख सकेंगे। हमने अपनी ओर से

यथासंभव खुलकर समझाने की कोशिश की है। अब भी आप भूल जायें तो यह बड़े खेद का विषय होगा। किस पद्धति से आपको याद करावें? मेरे ख्याल से स्वाध्याय के अतिरिक्त इसका दूसरा कोई तरीका नहीं है। अतः अपने धार्मिक ज्ञान को सैद्धान्तिक ज्ञान को समृद्ध बनाये रखने के लिए हमारे सम्यक्दृष्टि श्रावक–श्राविकाओं का कर्त्तव्य हो जाता है कि वे नियमित स्वाध्याय द्वारा अपने आप में इस प्रकार का ज्ञान–बल जगावें। ज्ञान बल निर्मल होगा तो दर्शन और चारित्र बल अधिक मजबूती के साथ बढ़ेगा। फिर आपके यहाँ तो ज्ञान बल का वातावरण भी है। अनार्य मुल्कों में रहने वाले भाइयों को तो यहं वातावरण मुश्किल से मिलता है। महाराष्ट्र और दक्षिण में जिन गांवों और नगरों में साधु महात्मा नहीं पहुँच पाते हैं, उनको वीतराग वाणी सुनने का अवसर नहीं मिलता, इसलिये वे लोग भूल जावें तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि उनके सामने सैद्धातिक ज्ञान को बनाये रखने का निमित्त नहीं है। लेकिन आप लोगों को तो साधुओ का, सतियों का निमित्त मिलता ही रहता है, जो श्रुत–धर्म और चारित्र–धर्म की बातें निरन्तर आपके सामने प्रस्तुत करते रहते हैं। ऐसे निमित्त के होते हुए भी आप न जगें तो यह खेद का विषय होगा, दुर्भाग्य का विषय होगा।

कोरो रह्यो रे सींधड़ा, सदा तेल के संग

बाबाजी सुजानमल जी महाराज जिनके दर्शन आपमें से बहुतों ने किये होंगे। वे कहा करते थे–

"कुसंगत में बिगड़िया नहीं व्हांरो बड़ो सुभाग"

कुसंगत पाकर भी जो बिगड़े नहीं उनका भाग्य बहुत अच्छा गिना जायेगा लेकिन जो–

"सुसंगत में सुधरिया नहीं, व्हांरो बड़ो अभाग"

साधु–साध्वियों का संयोग पाकर भी न सुधरे तो उनका कितना बड़ा दुर्भाग्य है, यह शब्दों द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। जिनको निमित्त नहीं मिले उनकी बात अलग है। कई गांवों के लोगों को साल में पांच दिन भी साधु संतों की वाणी सुनने का संयोग नहीं मिलता, वे किसी बड़े आचार्य के पास बैठ कर चारित्र और ज्ञान को कैसे बढ़ावें और अपने जीवन का विकास कैसे करें? लेकिन जिन नगरवासियों को रात–दिन साधु–साध्वियों का संयोग मिलता है, प्रतिवर्ष संतो के चौमासे जिनके यहां होते हैं, सदैव जिन्हें साधु–साध्वियों से धर्मशास्त्र सुनने को मिलते हैं, वे यदि कुछ भी प्राप्त न करें तो कहा जायेगा–

"कोरो रह्यो रे सींधड़ा सदा तेल के संग"

मारवाड़ में पुराने समय में तेल जमा रखने के लिए चमड़े का कूड़िया होता था। उसमें निरन्तर रात–दिन तेल भरा रहता था। देशी जूती यदि करड़ी हो जाती है तो उस पर तेल लगा देने से वह नर्म पड़ जाती है। जूती का चमड़ा तो तेल लगाने से नर्म पड़ जाता है, परन्तु कूड़िये का चमड़ा इतना कठोर होता है कि उसमें निरन्तर तेल भरा रहने पर भी वह नर्म नहीं पड़ता । इसी तरह रात–दिन सत्संग

का सुअवसर पाकर भी और शास्त्रों में वर्णित गम्भीर आध्यात्मिक विवेचनों को अहर्निश सुनते रहने पर भी किस प्रकार के लोगों का हृदय कोमल नहीं बनेगा— यह तो आप स्वयं ही मन में सोच सकते हैं। मिथ्यात्वी का मन कोमल नहीं बने तो और बात है, लेकिन समदृष्टि श्रावक का हृदय कोमल नहीं बनने का क्या कारण है, इसे थोड़ा गहराई से सोचकर अन्तर्मन से आध्यात्मिक रसास्वादन करने की आवश्यकता है। किसका निमित्त पाकर जीवन में परिवर्तन होगा, थोड़ी इतिहास की कड़ियाँ देख लें। निमित्त में बड़ा निमित्त है संत और इससे छोटा निमित्त है साधर्मी भाई। (क्रमशः)

सुख भोग में नहीं, त्याग में है

भण्डारी सरदारचन्द जैन

एक शहर था। उससे कुछ ही दूरी पर एक जंगल था। जंगल की गुफा में एक विशिष्ट पहुंचे हुए योगी रहते थे। योगी बड़े ही मस्त और करुणाशील प्रकृति के थे। थोडी सी सेवा और अनुनय-विनय से वे प्रसन्न हो जाते थे।

उनके आशीर्वाद मात्र से व्यक्ति को इच्छित वरदान मिल जाता था। एक बार 4 व्यक्ति उनके पास आये और कहने लगे— "हे! संन्यासी महात्मन् योगीराज, हम सब बहुत दुःखी हैं। हमको जरा भी शांति नहीं है। हमारा जीवन अभाव ग्रस्त है। हे! महात्मन्, हम सब पर दया करो और हमें क्रमशः यश, धन, पुत्र, स्त्री प्राप्त करने का कृपया वरदान दें।"

योगी महात्मा ने कहा— "बच्चों! यश, धन, पुत्र और स्त्री से शाश्वत शांति नहीं मिल सकती। अगर शांति चाहिए तो भोग का नहीं, त्याग का रास्ता अपनाओ।"

उन चारों ने कहा— योगीराज! आप हमें मन इच्छित वरदान दें। हम इन्हें प्राप्त कर कुछ समय संसार में सुख से बिताकर फिर आपकी आज्ञानुसार चरणों में आ जायेंगे। बस, एक बार आप दया कर दिरावें। योगीराज ने तथास्तु कहकर उन चारों को विदा कर दिया और स्वयं साधना-स्थल पर चले गये।

समय पर चारों के मनपसन्द वरदान फलित हो गए। चारों मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। समय गुजरता गया, चारों ही व्यक्तियों के लिए वे वरदान सुख के बजाय अब दुःख के कारण बन गए। अब वे चारों बड़े दुःखी रहने लगे। बहुत दुःखी होने के कारण, अब पुनः सब उन योगीराज के पास पहुँचे और अपने-अपने दुःख का भीतरी पिटारा खोलते हुए चारों ने कहा— "हे! महात्मन् हम पर करुणा जल बरसायें, हम बहुत दुःखी है।" योगीराज ने कहा— "बच्चों! सुख बाहर की चीजों में नहीं है, सुख का वास्तविक सच्चा स्रोत तो अन्दर आत्मा में है। तुम्हें सही मायने में सुखी बनना है तो मेरे पूर्व कथनानुसार भोग का रास्ता छोड़कर त्याग के रास्ते पर अग्रसर हो जाओ, तभी शाश्वत शांति को प्राप्त कर सकोगे।"

—त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)

युवकों से आह्वान

अपने चरित्र को ऊँचा उठाइए

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

जैनसमाज में अनेक प्रकार की विकृतियाँ है– नामवरी के लिए तप करना, भोजन में जूठन छोड़ना, विवाह प्रसंग पर आतिशबाजी, सड़कों पर नाच, भ्रूण हत्या, होटलों में विवाह आयोजन, जमीकंद का प्रयोग आदि। करुणामूर्ति, परमाराध्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. समाज को इस प्रकार की विकृतियों से रहित बनाना चाहते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण एवं सम्वत्सरी महापर्व पर उन्होंने धुलिया नगर में प्रवचन के समय महती प्रेरणा की। इससे वहाँ के समाज पर सकारात्मक प्रभाव हुआ। सकल जैन समाज (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर) की एक मीटिंग 2 सितम्बर 2001 को सम्पन्न हुई, जिसमें सर्वानुमति से 13 प्रस्ताव पारित किए गए। (द्रष्टव्य 'समाज–दर्शन' में रिपोर्ट) सम्वत्सरी महापर्व पर 22 अगस्त 2001 को दिए गए प्रवचन का संक्षेप यहाँ प्रस्तुत है।– **सम्पादक**

तप से कर्मों का ताप मिटाने वाले सिद्ध भगवंतों को, ज्ञान–दर्शन को अनंतता प्रदान कराने वाले अरिहन्त भगवन्तों को तथा तप में शूर कहलाने वाले संत भगवंतों को कोटि–कोटि वन्दन!

तन की पुष्टि, वाणी की तुष्टि और मन की संतुष्टि कराने वाली वीतराग वाणी का वागरण मोक्षगामी महापुरुषों के वर्णन से महेन्द्र मुनि जी कर गए, महासती सुशीलाकंवर जी एवं उपाध्यायप्रवर (पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.) ने क्षमा के महत्त्व का प्रतिपादन सरल एवं सहज भाषा में किया।

आज का दिन अहिंसा दिवस भी है एवं तप दिवस भी। आपने अंतगडदसा सूत्र का श्रवण किया है। उसके विवेचन से आपको ज्ञात हुआ होगा कि कल तक एडी से चोटी तक शरीर को वस्त्रों एवं अलंकारों से सजाने वाली राज-रानियों ने शुभ चिन्तन, शुभ ध्यान से आत्मा को सजाना जब प्रारंभ किया तो एक दिन भी ऐसा नहीं बीता जिस दिन उन्होंने आत्मा को तप से नहीं सजाया हो, नहीं संवारा हो। तप के पारणक में भी तप की विशेषता, उनके जीवन में देखने को मिलेगी, उपवास का पारणा आयंबिल से, आयंबिल का पारणक उपवास से। वर्षों तक तपस्या चलती रही, पर कहीं स्वागत सम्मान की बात तक नहीं और आज अठाई तप में मालाओं का ढेर लग रहा है।

हमारा तप नामवरी में लुटाने के लिए, सम्मान के बदले बेचने के लिए एवं उपहारों के द्वारा लुटाने के लिए न हो, कर्म काटने के लिए हो। जो तप नहीं कर सकते वे अनुमोदना के लिए तपस्वी का स्वागत करने हेतु

भावना से सम्मान कर रहे हैं, कुछ दे रहे हैं। पर लेने वाले चिन्तन करें, जब अन्न तक का त्याग कर दिया है तो इन उपहारों को ग्रहण करने में क्या रखा है? स्वागत करने वालों से भी मेरा सुझाव है कि **जैसे आज आपके समाज में सगाइयाँ–शादियाँ मँहगी हो गई, वैसे आप इन अठाइयों को मंहगा मत कीजिए।** मायरा भरने की स्थिति न होने पर, जीमनवार करने की जोगवाई नहीं होती, ऐसे में कर्म-निर्जरा कराने वाली ये अठाइयाँ कहीं रुक न जाएँ, आप इस पर विचार करें। निर्जरा के साधनों को महंगे व दूषित नहीं करें:–

पर्युषण पर नाज मनाओ नर नारी, संयम का दिन आज
मनाओ नर-नारी।।टेर।।

चार दिनों की यह जिंदगानी, संयम अपनाओ भव्य प्राणी,
करलो आतम काज, मनाओ नर नारी.... ।।

मन वाणी को वश में करना, काया की चंचलता हरना,
संयम धर्म जहाज, मनाओ नर नारी.... ।।

तप के मार्ग में आप अपने चरण नहीं बढ़ा सकते तो कम से कम जो थाली में आ गया है उसमें से एक दाना भी जूठा (जूठन) नहीं जाएगा, इसका ही लक्ष्य बनावें, यह भी एक तप है। घर में संतवृत्ति से रहने वाले तिरुवल्लुवर के जीवन का उदाहरण है, उन्होंने प्रतिदिन भोजन की थाली के साथ पत्नी से एक सुई और एक गिलास पानी रखने को कहा। पतिव्रता पत्नी ने सुई मंगाने का क्या कारण है, यह कभी नहीं पूछा। अपनी पत्नी के जीवन के अंतिम दिनों में एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी से प्रतिदिन सुई एवं गिलास मांगने का कारण बताते हुए कहा "मैं जैन हूँ, भोजन में जूठा डालना पाप है। खाते-खाते रसदार चावल का कोई कण नीचे गिर जाए तो चींटियां आ जाय, उनकी विराधना न हो इसलिए सुई से उठाकर पानी से धोकर उसका उपयोग कर सकूँ जिससे जीव हिंसा का बचाव हो जाए।" इतनी सावधानी रखने का प्रयास आज कितने लोग करते हैं? आज जूठा छोड़ना अमीरों की निशानी माना जाता है।

सुना है मद्रास में मूर्तिपूजक संत कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराज के सान्निध्य में मूर्ति-प्रतिष्ठा के प्रसंग में नवकारसी का आयोजन 11 दिनों तक चला। प्रतिदिन लगभग लाख लोगों के भोजन में संघ सेवकों की ऐसी सुन्दर व्यवस्था थी की एक दाना भी जूठा नहीं गया। स्वयं सेवक कहने लगे कि "आप नहीं खा सकते तो हमें यह अवसर दे दीजिए, हम खा लेंगे।" 22 जून 1997 को जोधपुर (राज.) में क्रियोद्धार द्विशताब्दी साधना–दिवस (आचार्यप्रवर श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के क्रियोद्धार की स्मृति रूप में) मनाया

गया। उस प्रसंग में विधान सभा के अध्यक्ष शांतिलाल जी चपलोत ने कहा– "आज हिन्दुस्तान की आबादी एक अरब के लगभग है। यदि एक–एक व्यक्ति, एक–एक कौर जूठन छोड़ता है तो 4 चार करोड़ आदमियों को भूखा रखता है। एक तरफ अकाल की आवाज उठ रही है, दूसरी तरफ जूठन छोड़ा जा रहा है। यही नहीं जीव हिंसा में भी जूठन निमित्त कारण बनता जा रहा है।

आप जिनकी उपासना करते हैं वे संत जब कण भर भी जूठा नहीं डालते तब, ओसवालों! श्रमणोपासकों! जूठन डालने के इस झूठे अहं को छोड़ो। इसी प्रकार रात्रि भोज को त्यागो। दिन भर बाहर रहने वाला सुरेश भाई श्री श्रीमाल (सुरेश दादा जैन) जैसा एवं विधान सभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत जैसा आदमी जूठन नहीं डालता, रात्रि भोजन नहीं करता तो आप अपने घर में रहने वाले, क्यों रात्रि भोजन करके पंचेन्द्रिय जीवों तक की हिंसा कर रहे हो? जूठा डालकर क्यों करोड़ों आदमियों को भूखा रख रहे हो? (आचार्यप्रवर के प्रेरणास्पद प्रवचनों से प्रभावित होकर प्रवचन सभा के लगभग सभी श्रोताओं ने जूठन नहीं डालने का नियम अंगीकार किया)।

आचार्य रत्नसूरीश्वरजी महाराज ने ओसियां में क्षत्रियों को जैन बनाया, ओसवाल वंश की स्थापना की। तब चार नियमों की प्रतिज्ञा करवाई, यह ओसवाल वंश का इतिहास बता रहा है। चार नियम थे– 1. नवकार मंत्र पर दृढ़ श्रद्धा वाला होना 2.मदिरा सेवन का त्यागी होना 3. मांस–भक्षण का त्यागी होना 4. रात्रि भोजन नहीं करने वाला होना। **आज ओसवालों ने अच्छे कपड़े, मार्बल के आंगन के बंगले-फर्नीचर आदि बसाकर अफसर की तरह जीना तो सीख लिया, पर जाति एवं धर्मगत नियमों को भूल गए।** आज इस रसना पर, जिह्वा पर, लाली बाई पर कन्ट्रोल न होने से "आप डूबे बाणियो, ले डूबे जजमान" की कहावत चरितार्थ हो रही है।

दृढ़ता रखने वाले भी मिलते हैं। एक भाई अमेरिका जाकर आया। वह जमींकद का त्यागी था, नियम का दृढ़ था। उसने अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए मुझसे कहा–"मेरे जमीकंद का त्याग है, और होटलों में बिना जमीकंद के मिलना मुश्किल है, पर गुजराती भाई के होटल में जैन भाजी के नाम पर बिना जमीकंद के भोजन मिल गया।" गुजराती भाई, देश–विदेश कहीं चले जाएं, नियमों में पक्के, बिना भोजन रह जायेंगे पर जमीकंद नहीं खायेंगे।

हमारे देश में आज पार्टियों में, शादियों में– आलू, प्याज, शलजम जैसे किन–किन जमीकंदों का प्रयोग होता है? किन–किन आकृतियों में

सलाद खायी जाती है? पशु, पक्षियों की आकृति बनाकर सलाद रखना कहाँ तक उचित है? ऐसे अनेक प्रश्न चिन्तन के लिए मजबूर करते हैं। काल सौकरिक कसाई ने मैल उतार–उतार कर पाडों को मारा, तो भाव हिंसा से कर्मों का बंध किया। आज जैनी मछली, कछुआ जैसी आकृतियों की चीजों को सलाद के रूप में खाकर भावों को कैसे निर्मल रखते होंगे? ओसवाल समाज में जन्मा हूँ, ओसवालों के बीच बैठा हूँ, इसलिए कह रहा हूँ। आज समाज की बहिनें कैसे पारदर्शी कपड़े पहनती हैं? रियाँ के सेठजी के पास अढलक संपत्ति थी, जिसके लिए कहा जाता है कि रियां (पीपाड़) से जोधपुर तक धन के छकड़े राज–दरबार में पहुँचाए गए, वे सेठ जी ऊँची धोती, बदन पर गमचा डाले गोबर बीन रहे थे। जोधपुर के दरबार के दीवान ने पूछा– आपके पास अढलक सम्पत्ति और आपकी ऐसी वेशभूषा? सेठ जी बोले "भाई मैं समाज का एक अंग हूँ, मेरे न जाने कितने भाई सामान्य स्थिति वाले हैं, मुझे उनके साथ चलना है, मैं उनका सहयोग कर सकूँ तो ठीक, नहीं तो कम से कम उनको ऐश्वर्य का प्रदर्शन कर संकट में तो नहीं डालूँ।"

आज अमीरों की शादियाँ पांच सितारा होटलों में हो रही हैं, जहाँ फूलों की सजावट, विद्युत सज्जा एवं प्रदर्शन की होड़ लग रही है। महापर्व संवत्सरी के दिन मैं अहिंसा, तप, क्षमा की बात कहने के बजाय कुरूढ़ियों के कीचड़ की बात कह रहा हूँ, कारण कि आज संवत्सरी ही ऐसा दिन रह गया है जो युवा–बंधुओं को धर्मस्थान तक खींचकर ले आता है। इसलिए इन प्रसंगों को आज प्रस्तावित किया है।

अब रात्रि भोज की बात लीजिए, अनेक बुराइयों एवं हिंसा प्रसंगों के साथ। एक शहर में एक शादी में रात को एक बजे खाने का कार्यक्रम चला। पति पत्नी रिक्शे में बैठकर घर आ रहे थे। 4–5 बदमाशों ने घेर लिया। पति को हाथ पकड़कर नीचे उतारा व उसकी पत्नी के साथ कुशील व्यवहार किया। दिन में भोज हो तो ऐसी घटनाएं न घटें। पर अमीरों के अजब चोंचले हैं। ओसवाल मंगल कार्यालय में शादियां गरीबों की होती हैं, हम तो प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, अतः पाँच सितारा होटल में कार्यक्रम रखेंगे। किन्तु पाँच सितारा होटल में रात्रि भोज होता है तो एक–एक बजे तक खाने वाले खा पीकर निबटते हैं। 50–50 आइटम बनते हैं, और **जूठन बचा हुआ खाना नालियों में फेंक दिया जाता है। जीवोत्पत्ति का दोष अलग, विद्युत के कारण कीड़ों की उत्पत्ति अलग, विद्युत का खर्चा अलग, शराब का दौर अलग रूप से चलता है। ये सब विकृतियाँ रात्रि में भोज होने से एक के बाद एक पनपती जा रही हैं।** रात्रि में विवाह एवं रात्रि में भोज न हो तो सहज इन विकृतियों से

बचा जा सकता है।

नई परम्परा एक और कि शादियों में बैंड बाजों की धुन के साथ पुरुष भी नाचते हैं, बहन–बेटियाँ भी नाचकर एवं अपने शारीरिक अंगों का प्रदर्शन करती हैं। छोटे समाज भी आराम से जी सकें, वे भी ऊँचे उठ सकें, इसलिए अमीरी का अहं छोड़ दीजिए, समाज में प्रेम गंगा बहेगी। अहं पोषण के लिए करोड़ों रूपये लगते हैं, पर स्वधर्मी भाई के लिए हाथ नीचे से ऊपर नहीं होते हैं। **एक बाथरूम में लाख रूपये लग सकते हैं, मर हम चिंतन तो करें, हमारे स्वधर्मी भाई कैसे आराम से जी सकें? आज उपदेश अच्छा से अच्छा सुन रहे हैं, पर दिनों दिन समाज में प्रदर्शन बढ़ते जा रहे हैं। मैं घर–घर में ओसवालों भोपालों को खड़ा करना चाहता हूँ, जो भामाशाह बन सकें।**

एक नगर में चातुर्मास किया। वहाँ शराब का प्रचलन अधिक था, जैनियों के यहाँ जन्मे युवकों में भी था। निवर्यसनी परिवार की एक सूची बनायी गई और एक–एक निर्व्यसनी युवक अपने एक व्यसनी दोस्त को संतों की सेवा में रात में लाता। संतों की प्रेरणा से लगभग 150 युवकों ने शराब छोड़ी। आप युवा जो काम कर सकते हैं वे अब माता–पिता नहीं कर सकते, क्योंकि बच्चे अब उनकी नहीं मानते, क्योंकि पहले माता–पिता ने संस्कार दिए नहीं।

अब संघ–समाज, माता–पिता एवं गुरुओं की गर्दन ऊचीं हो, इसलिए चरित्र को ऊँचा उठाइये, जीवन में से विकारों की भेंट हमें दे दीजिए और समाज में चार चाँद लगाइए, पाप कर्म से बचिए, जीवन को पवित्र बनाइए।

अंत में तीन दिन पूर्व संघ में की गई प्रेरणा से आज महापर्व के दिन पहली बार सकल जैन समाज ने अपने व्यवसाय बंद कर संवर, सामायिक आदि धर्म-आराधना में/निर्जरा में आगे बढ़ कर भाग लिया, इसका प्रमोद है। इसके साथ महापर्व संवत्सरी के दिन उपदेश, जिज्ञासा-समाधान, प्रेरक–प्रसंगों की वार्ता आदि में मेरे से, साथी संतों से महासती मण्डल से किसी का मन दुःखाने की भावना नहीं होते हुए भी किसी का दिल दुःखाया हो तो अंतर हृदय से क्षमायाचना के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ। ऊँ शान्ति......

भोग भावना दुःखकारी हैं, त्याग वृति अपनाओ।
धन से बढ़कर धर्म है श्रेयकर, समझो और समझाओ।।
मिला है मौका भव्य जनों, अवसर लाभ उठाओ।
जिनवाणी का अमृत पीकर, जीवन सफल बनाओ।।

–नितेश नागोता 'जैन', भवानीमण्डी

संघ का उन्नयन : कर्त्तव्यपालन से

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.

संघ व समाज से आशय

संघ व समाज का सामान्य अर्थ है– अनेक व्यक्तियों का परस्पर मिलना। एक एक व्यक्ति मिलकर परिवार बनता है और अनेक परिवारों का मिलन समाज कहलाता है। जैसे – ईंट और चूना मिलने से एक अच्छी दीवार का निर्माण हो जाता है। अनेक धागों के मिलने से एक सुन्दर वस्त्र बन जाता है। बहुत से तिनकों के एकत्रित होने पर झाड़ू व मजबूत रस्सा बन जाता है। एक एक बूंद मिलने से कासार बन जाता है। एक–एक फूल मिलने से गले का हार बन जाता है। एक–एक अंक्षर मिलने से मंत्र बन जाता है। इसी प्रकार अनेक मनुष्य मिलकर समाज बनता है।

समाज व संघ का विशिष्ट अर्थ भी है। संघ का नाम जुबां पर आते ही हृदय आमोद, प्रमोद व खुशी से बासों उछलने लगता है, क्योंकि जिनशासन में संघ का विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण स्थान है। देव वाचक क्षमाश्रमण ने तो नन्दीसूत्र के प्रारंभ में संघ को आठ उपमाओं से विभूषित कर उसकी वंदना की है, यथा –

"नगर-रह-चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्दमेरुम्मि।
वो उवमिज्जइ समयं, तं संघगुणायरं वन्दे।।"

चतुर्विध संघ तीर्थ कहलाता है। साधु, साध्वी जो पंच महाव्रत धारी हैं, श्रावक व श्राविका जो 12 व्रत धारी हैं,इस संघ में इन चारों का निवास है।

समाज के विभिन्न रूप

समाज के मुख्य दो रूप हमारे समक्ष आते हैं। एक पाशविक समाज है, और दूसरा दैविक समाज। पाशविक समाज में निरन्तर–अशांति, संघर्ष, अधर्म एवं पाप का बोलबाला होता है। न्याय नीति का जरा भी भान नहीं होता।

दूसरे प्रकार का समाज वह है, जहाँ–शांति, सद्भाव, प्रेम एवं संगठन की वीणा निरन्तर बजती रहती है। क्षमा, सहिष्णुता व वात्सल्य की धारा सदा प्रवाहित रहती है। परोपकार व तप-त्याग की त्रिवेणी हमेशा बहती रहती है। उसे हम दैविक समाज कहेंगे।

धर्मनिष्ठ समाज व संघ की प्राप्ति पुण्यवानी से

सर्वश्रेष्ठ मानव जन्म का मिलना, सुयोग्य माता–पिता एवं परिजनों का मिलना, उत्तम कुल व आर्य भूमि का मिलना निरोग शरीर व पांचों इन्द्रियों का पूर्ण मिलना, श्रुतवाणी एवं सुगुरु का मिलना महान भाग्योदय से होता है। इन सब संयोगों का मिलना जीवन के लिये महत्त्वपूर्ण है। समाज अच्छा होगा तो उसके सदस्य भी अच्छे होंगे, संस्कारी होंगे, निर्व्यसनी होंगे व प्रामाणिक होंगे। कुल मिलाकर यों कहना चाहिए कि उस संघ के व्यक्तियों का जीवन शुद्ध, निर्मल, लोक कल्याणकर एवं सभी प्राणियों के लिए हितैषी होगा।

शुद्ध आचार विचार की भूमिका पर समाज और संगठन का निर्माण

स्वस्थ, सुदृढ़, लोक कल्याणकारी संगठन के लिए यह आवश्यक है कि वह संगठन शुद्ध आचार-विचार पर खड़ा हो। नहीं तो प्रचार तंत्र निरर्थक हो जायेगा। एक दिन ऐसा आयेगा जबकि वह जीर्ण शीर्ण होकर ढह जायेगा। जिस गहरी नींव में कंकरीट, सीमेंट, चूना पर्याप्त मात्रा में डला हुआ होगा तो उस मकान को बड़े बड़े तूफान भी गिरा नहीं सकते। इसी प्रकार संगठन एवं संघ की नींव में आचार–विचार की प्रधानता होगी, वह संगठन मजबूत, स्थायी व स्वपर कल्याणकारी होगा। आचांर्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. फरमाया करते थे कि शुद्ध आचार पहले और प्रचार बाद में हो। वे अपने साधु–साध्वियों को भी जोर देकर फरमाते थे कि–कथनी करनी में समानता होना जरूरी है।

संघ पदाधिकारियों के दायित्त्व व कर्त्तव्य

पदाधिकारियों का जीवन संयमित हो, अहं भाव से रहित हो, छोटों के प्रति प्यार हो, बड़ों के प्रति आदर भाव हो और प्रत्येक संघ-सदस्य के प्रति आत्मीय भाव हो। आत्मीय भाव होने पर ही उनका दुःख दर्द अपना दुःख दर्द बनेगा। एक दूसरे स्वधर्मी के साथ भी कभी मनमुटाव एवं टकराहट हो सकती है अथवा टकराहट का वाताकरण बन सकता है, किन्तु उस प्रसंग को लेकर कभी भी न्यायालय में नहीं जाना चाहिए। घर में बैठकर अथवा तो अपनी समाज में बैठकर ही निपटारा कर लेना चाहिए, क्योंकि कोर्ट कचहरी चढ़ने पर तो अधिक विषमता बढ़ेगी, घटेगी नहीं।

संघ पदाधिकारियों के जीवन में पदलोलुपता न होने पर ही वे संघ की पीड़ाओं को समझ सकेंगे। संघ की तकलीफों को समाज का हर सदस्य नहीं समझ सकता है, और उन कष्टों को मिटा भी नहीं सकता है। संघ के दर्द को संघ के पदाधिकारी समझने की कोशिश करें और संघ का प्रत्येक सदस्य भी समझे। दोनों मिलकर सामूहिक शक्ति से उन कष्टों का प्रतिकार भी करें। जैसे पैर में कांटा लगने पर सम्पूर्ण शरीर हिल जाता है। मस्तिष्क हाथ को आदेश देता है, आओ शीघ्रता से पैर का कांटा निकालो। आंख भी, हाथ भी और मस्तिष्क भी सक्रिय हो जाते हैं। कांटा निकालकर ही संतोष होता है। ठीक वैसे ही संघ का मुखिया एवं कर्णधार जो सब कुछ करके धरने की सामर्थ्य रखने वाले हैं, वे उन दुःखियों के दुःख दर्द को हटाकर ही चैन की श्वास लें।

समाज के एक–एक व्यक्ति को आप अगर संघ, से जोड़ना चाहते हैं तो आप स्वयं उनसे जुड़ने की चेष्टा करें। आप उनके सुख दुःख में साथी बनें। उनकी दुःख दर्द भरी कहानियों को प्रेमपूर्वक सुनें। उनके प्रत्येक कार्यों में हाथ बंटावें। इस प्रकार करने से वे आपके होंगे और आप जब उनके होंगे, तब संघ, संघनायक और संप्रदाय की जाहोजलाली होने में एवं उत्थान और विकास में कोई देर नहीं लग सकती है।

समाज को सुधारना है तो कई व्यक्तियों के द्वारा निकले हुए ऊँचे–नीचे,

कटु एवं मीठे वाक्य रूपी कड़वी घूंटों को अमृत समझकर पीना पड़ेगा। समय पर प्रेम से उनका समाधान करना होगा। बड़ों का गौरवशाली पद हीरों का नहीं, कांटों का ताज है। चाहे श्रमणों का मुखिया हो, चाहे श्रावकों का, उसका मार्ग फूलों का नहीं, शूलों का मार्ग है। जिस पर चलना एकदम आसान और सरल नहीं, किन्तु बहुत कठिन है। किन्तु शूरा, वीरा, धीरा और गंभीरा सकुशल पार पहुँचते हैं। बाकी इस सेज पर सोकर कोई भी सुखद नींद के खर्राटे नहीं भर सकता है। पदाधिकारी स्वयं जागृत हों और संघ के सदस्यों को जागृत कर धर्मनिष्ठ बनावें।

मंद कमजोर वर्ग के लोगों को भरसक सहयोग कर ऊपर उठाना चाहिए। जब उनकी प्रत्येक आवश्यकता की समय पर पूर्ति हो जायेगी, तब वे आपसे जुड़े रहेंगे। सामाजिक कार्यों के प्रसंगों पर आपको उन्हें जगाने की आवश्यकता ही नहीं होगी। वे स्वयं जगकर अर्द्धरात्रि में भी संघ व संस्था के कार्यों मे हाथ बटायेंगे।

संघ-सदस्यों के दायित्व एवं कर्त्तव्य

संघ सदस्यों का यह परम कर्त्तव्य होता है कि वे संघ व धर्माचार्य के प्रति समर्पित रहे। संघ में समर्पण भाव होगा तो संगठन सुरक्षित रह सकेगा, अन्यथा विघटन में बदल जायेगा। समर्पण भाव जब बन जाता है तब फिर आलोचना, प्रत्यालोचना का प्रश्न ही खड़ा नहीं हो सकता है। समर्पण में श्रद्धा का बाहुल्य होता है, पर तर्क का नामोनिशान भी नहीं होता। अन्तर जीवन में श्रद्धा होने पर न शर्त होगी और न आकांक्षा। जहाँ समर्पण होगा वहाँ गुरु भगवंतों के द्वारा तथा पदाधिकारियों के द्वारा दिये गये निर्देशों की प्राणप्रण से पूर्ण पालना होगी।

संघ-सदस्य किसी बात में अपनी असहमति होने पर भी विनय व सरलतापूर्वक अपनी बात को प्रस्तुत अवश्य करें और संघ-हित का पूरा पूरा ध्यान रखकर शासन व संघ की ढंक कुंभकार की तरह सेवा करें।

भगवती सूत्र में वर्णित ढंक कुंभकार भगवान महावीर स्वामी का अनन्य श्रम्णोपासक एवं जीवादि तत्त्वों का ज्ञाता था। जिस समय उसने सुना कि भगवान के समीप से 500 साधुओं के साथ जमाली और हजार साध्वियों के साथ प्रियदर्शना जी भटक गये हैं, तो उसके मन में बड़ी पीड़ा की अनुभूति हुई।

किसी संघ से एक दो साधु भी चले जाते हैं तो चतुर्विध संघ खेद खिन्न हो जाता है, तब भला पन्द्रह सौ की टोली एक साथ चली जाय तो बताइए संघ को कितनी भयंकर पीड़ा की अनुभूति हुई होगी? इस बात से ढंक कुंभकार को तो महावेदना की अनुभूति हुई और उसने मन ही मन सोचा–मैं शास्त्रों का गहन ज्ञाता नहीं हूँ और पढ़ा लिखा प्रखर विद्वान भी नहीं हूँ, सेवा करूँ तो कैसे करूँ? शासन हित में मुझे जरूर कुछ करना है।

चिन्तन करते करते ढंक को कुछ ख्याल आया कि नारियां जो भी अबला होती हैं, वे अवश्य ही कोमलांगी होती हैं। सरल आत्मा होती हैं। मैं जाऊँ महासती प्रियदर्शना जी के पास और अनुनय विनयपूर्वक नम्र निवेदन कर अपनी कुंभकार शाला में उन्हें ले आऊँ। उनकी सेवा करके उन्हें भटकने से बाल–बाल बचाऊँ।

हुआ भी ऐसा ही। ढंक कुंभकार ने कुछ आगे बढ़कर आती हुई प्रियदर्शनाजी का रास्ता रोककर प्रार्थना की। भगवती साध्वीजी! आप मेरी कुंभकार शाला में पधार कर धर्मलाभ दिरावें। हजार साध्वियों के साथ भगवती महासती प्रियदर्शना जी को तो किसी निर्वद्य स्थान में ठहरना ही था, स्वीकृति प्रदान कर दी और आज्ञा लेकर साध्वीजी ढंक की शाला में ठहर गई। सब साध्वियाँ यथाकाल स्वाध्याय-ध्यान में लगी। इतने में ही अवसर देखकर ढंक कुंभकार ने प्रियदर्शनाजी की चदरिया के एक कोने पर आग की चिनगारी छोड़ दी।

कपड़े में लगी आंग की गंध से साध्वी जी चौंककर बोल पड़ी–'मेरी चदरिया किसने जलाई?'

ढंक ने कहा– महासती जी! आप असत्य बोल रही हैं, क्योंकि आप इस समय भगवान महावीर के नहीं, जमाली जी के सिद्धांतों पर चल रही हैं। जमाली जी का सिद्धांत है, जो काम प्रारंभ किया, जब तक उसकी समाप्ति न हो, तब तक उसको किया नहीं कहना चाहिए। अतः आपने तो असत्य भाषा का प्रयोग किया है। अभी तो आपकी चदरिया का मात्र एक कौना जला है और आपने कह दिया, चदरिया किसने जलाई? आपको झूठ लगा है। अतः आप प्रायश्चित लेकर शुद्ध हो जाइए। अगर इस बात को आप ठीक मानती हैं तो फिर जमाली जी के सिद्धांतों को त्याग कर भगवान महावीर के सिद्धान्त "कडेमाणे कडे" जो काम प्रारंभ किया, समाप्त न भी हो, तब भी उसे किया कहा जा सकता है, उसमें पधार जाइए।

प्रियदर्शना जी ढंक कुंभकार की बात को सत्य मानते हुए पुनः भगवान महावीर के शासन में एक हजार साध्वियों के साथ पधार गई। क्या यह शासन की सेवा कम थी। आप भी ढंक कुंभकार की तरह बनकर जिनशासन की सेवा करें।

संघ सेवा का फल कर्म-निर्जरा

हमारे आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. फरमाया करते थे कि सेवा करना महान धर्म है, महान तप है, कर्म निर्जरा का कारण है।

सेवा धर्म के विषय में स्वयं श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने पावापुरी के प्रांगण में अपनी अमृतमयी देशना में गौतम गणधर के प्रश्न के प्रत्युत्तर में फरमाया–

"गुरुसाहम्मियसुस्सुसणाएणं भंते! जीवे किं जणयइ? गुरु साहम्मिय सुस्सुसणाएणं विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासामणसीले, नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गइओ निरुंभई। वण्ण संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्सदेवसुगइओ निबन्धई। सिद्धिसोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेई, अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ" (उत्तराध्ययनसूत्र 29–4)

भगवन्! गुरु और स्वधर्मी जीवों की सेवा का क्या फल होता है? हे शिष्य! सेवा से विनय की प्राप्ति होती है। विनय से आशातना का त्याग होता है। आशातना टालने से 4 गति की दुर्गति का अन्त होता है। इससे वह श्लाघा, गुणों का प्रकाश,

भक्ति और बहुमान पाता है। मनुष्य और देवगति रूप सुगति का बंध करता है। विनय मूलक सभी प्रशस्त कार्यों को सिद्ध कर लेता है। साथ ही दूसरों को भी विनय धर्म में प्रवृत्त करता है। देखिए सेवा सुश्रूषा का कितना महान् फल है।

विभिन्न सम्प्रदाय और संघ सेवा

हमें अपने संघ व संप्रदाय की गौरव गरिमा बढ़ानी चाहिए। अपनी अच्छाइयों को प्रकट करने का हमें अधिकार है, किन्तु हमें दूसरों को बुरा बताने का अधिकार नहीं है। जिस सम्प्रदाय में हम हैं, उस सम्प्रदाय की खूबियों पर हम अवश्य चलें। संप्रदाय बुरा नहीं होता, सम्प्रदायवाद बुरा होता है। हमें अपनी अच्छाइयों का पालन अवश्य करना चाहिए, पर अन्य सम्प्रदाय को बुरा बताकर उनके साथ ईर्ष्या, द्वेष और दुष्ट भाव न रखें। यही बहुत बड़ी संघ-सेवा है। हम किसी के साथ कटु बर्त्ताव न करें।

गौरवमय संघ

इस रत्न संप्रदाय की गौरवशाली परम्परा में आपका हमारा जन्म हुआ है। जरा अपने पूर्वज गुरु भगवन्तों का एवं विशिष्ट दर्जे के श्रावकों का जीवन इतिहास उठाकर देखने का प्रयास तो करें।

इस सम्प्रदाय की यह विशेषता रही कि इसमें आचार्यपद के लिए भी त्याग भाव रहा। वि. संवत् 1858 से 1882 तक इस सम्प्रदाय का आचार्य पद मनुहार में रिक्त रहा। परम पूज्य श्री दुर्गादास जी म.सा. ने यह कहकर आचार्य पद नहीं लिया कि जिस संप्रदाय में रतन जैसा साधु जो प्रखर विद्वान है, ज्ञान और क्रिया की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, उसके होते हुए मैं आचार्य पद नहीं लूंगा। जब संघ ने रतनमुनि जी से आचार्य पद लेने की प्रार्थना की तब उन्होंने एक ही जवाब देते हुए इस पद को लेने से इन्कार कर दिया कि जब तक चाचा गुरु वयोवृद्ध स्वामी जी श्री दुर्गादास जी म.सा. जीवित हैं, मैं इस पद को नहीं लूँगा, कितना मजा व आनन्द आया होगा।

गौरवशाली इस रत्नवंश की एक एक साध्वी त्यागी-तपस्विनी और ज्ञान की भंडार रही है। मैं किन किन सतियों का स्मरण करूं महासती श्री जड़ाव जी म.सा., महासती श्री छोगाजी म.सा. और महासती श्री अमरकुंवर जी म.सा. जैसी महासतियों ने रत्नवंश की यशःकीर्ति को चहुं दिशाओं में फैलाया।

संघ का गौरव बढ़ाने वाले श्रावकों में मैं किन किन का नाम आपके समक्ष रखूं। जोधपुर के सुश्रावक श्री चंदनमल सा मूथा, जयपुर के श्रमणोपासक श्री केसरीचन्दजी सा कोठारी(लाल हाथी वाले), सतारा के रायबहादुर सेठ श्री मोतीलाल सा, चंदनमल सा मूथा, गुलेदगढ़ निवासी सुश्रावक सिरेमल सा लालचन्दसा मूथा, बरेली निवासी सुश्रावक श्री रतनलाल सा नाहर आदि आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के परम भक्तों में थे। इंगित इशारों में सामाजिक कार्यभार सम्पन्न कर जाहोजलाली करने वाले थे।

श्राविका रत्नों में भी बहुत सी श्राविकाएँ घोर तपोधनी थीं, तो ज्ञानवान

सेवारत एवं पौषध संवर करणी का लाभ लेने वाली श्राविकाओं की भी कोई कमी नहीं थी। जयपुर की सुश्राविका सिरेकुंवर बाई सा, जोधपुर की बहिनें सज्जन जी बाईसा, इन्दरजी बाईसा जिन्होंने लगातार 56 वर्ष तक श्री वर्द्धमान जैन कन्या पाठशाला की सेवा कर रत्नवंश के गौरव को बढ़ाया। घोर तपस्विनी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष सुश्रावक श्री रतनलाल जी बाफना की मातुश्री श्रीमती सायरबाईसा बाफना जिन्होंने भोपालगढ़ विराजित महासतियां जी श्री धनकुंवरजी म.सा. की लगातार सेवा में ज्ञान ध्यान सीखने के साथ प्रतिदिन संवर पौषध का लाभ लिया। मैं किन किन श्राविकाओं के गुण आपके समक्ष प्रस्तुत करूँ?

हाँ, सच है जहाँ चतुर्विध संघ सुगठित हो, एक जुट होकर कार्य करने में लग जाय वहाँ उस कार्य की शोभा एवं जाहोजलाली में देर नहीं लग सकती।

समाज को हम शरीर की उपमा से उपमित कर सकते हैं। शरीर में रोग होने पर उसके प्रतिकार हेतु हम सतत प्रयत्न करते हैं। डाक्टरों के पास पहुंचते हैं। नब्ज दिखाते हैं। नानाविध औषधियां लेते हैं। पथ्य परहेज रखते हैं पर समाजरूपी शरीर में कोई विकृति आ गई है, तो उसको हटाने के लिए कौनसी दवाई ली जा रही है, चिन्तन करना आवश्यक है।

आज बढ़ती हुई विकृतियां और प्रेम-स्नेह भाव की कमी के कारण हम एक दूसरे से मिल नहीं पा रहे हैं। पदाधिकारियों के जीवन में छोटों के प्रति प्यार–स्नेह का भाव कम होने से जो समर्पित भाव होना चाहिए, वह हो नहीं पाता है।

आपकी संस्थाओं में काम करने वाले कर्मकर लोगों के प्रति आपका प्रेम-व्यवहार अति आवश्यक है। उन्हें आप आदर की दृष्टि से देखें। उनके द्वारा किए गए कार्य–कलापों पर प्रसन्नता व्यक्त करें। उनकी पीठ थपथपाएं और उन्हें अपना पारिवारिक सदस्य समझें, किन्तु हीन दृष्टि से कभी नहीं देखें कि ये नौकर हैं, और हम मालिक हैं।

इस प्रकार छोटे–बड़े की भावना का विसर्जन करना अनिवार्य है।

संघ के पदाधिकारियों का फर्ज है रोगी, अपाहिज और पशुओं की सेवा को महत्त्व देते हुए जहां हिंसात्मक कार्य हो रहे हैं, उनका भी अवश्य प्रतिकार करें।

अभी भी सुना जाता है कि जयपुर में एक नये ढंग से वैज्ञानिक मशीनरियों के साथ कत्लखाना खुल रहा है। उसका पुरजोर शब्दों में विरोध होना, रोकने का समन्वित प्रयास होना अत्यंत जरूरी है। किसी नेता के साथ आपका प्रेम संबंध हो तो उन्हें उत्तम कार्य के लिए बाध्य कर केन्द्र सरकार तक अपनी बुलन्द आवाज पहुँचा कर हिंसात्मक कार्य को रोकें। इससे कर्मों की महान् निर्जरा होगी। शासन व सम्प्रदाय की एक बहुत बड़ी सेवा होगी।

हम संघ, समाज और सम्प्रदाय की उन्नति के लिए प्रयत्नशील बनें तो यह अधिवेशन करना सार्थक हो सकता है।

उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

जैन श्रावकों के लिये पाँच अणुव्रत पालन करने योग्य हैं–1. अहिंसा 2. सत्य 3. अचौर्य 4. ब्रह्मचर्य और 5. अपरिग्रह। इनकी रक्षा एवं विकास के लिये तीन गुणव्रत 1. दिशा परिमाण व्रत 2. उपभोग–परिभोग परिमाण व्रत(भोगोपभोग परिमाण व्रत) और 3. अनर्थदण्ड विरमण व्रत हैं। इनकी पालना से उपर्युक्त पाँच अणुव्रत दृढ़ होते हैं।

सर्वप्रथम उपभोग–परिभोग को जानना आवश्यक है। हम बहुत सी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं जिनका बार बार प्रयोग नहीं हो सकता है। एक बार काम में लेने पर वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं जैसे भोजन, फल, मेवा आदि। एक बार का प्रयोग परिभोग है। कुछ वस्तुएँ पुनः पुनः प्रयोग में लायी जाती हैं। कपड़ा, पलंग, फर्नीचर आदि जो दीर्घ काल तक अनेक बार उपयोग में आते रहते हैं। इसको उपभोग कहा जाता है। उपभोग–परिभोग की वस्तुओं का प्रयोग सीमित करना ही उपभोग–परिभोग परिमाण व्रत है। मनुष्य अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में अनेक उपभोग्य और परिभोग्य वस्तुओं का आश्रय लेता है। मनुष्य वस्तुओं की निश्चित मर्यादा स्थिर करले, यही उपभोग–परिभोग परिमाण व्रत है। श्रावक के लिए यह वांछनीय है कि न्यूनतम आवश्यक वस्तुओं को सादा जीवन व्यतीत करने हेतु सीमित करे।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के शब्दों में–

"जहाँ सदाचार का बल है,वहाँ नूर चमकाने के लिये बाह्य उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती। बाह्य उपकरण क्षणिक हैं। वास्तविक सौन्दर्य तो सदाचार में है। यदि वस्तुओं के उपयोग में नियम नहीं होगा तो मन वस्तुओं की प्राप्ति के लिये चंचल एवं दुःखी होगा। सद् गृहस्थ अपरिमित वस्तुओं का उपयोग नहीं करता। वह भोगोपभोग का गुलाम नहीं बनता वरन् उनको अपने वश में रखता है। यही श्रावक धर्म का स्वरूप है।"

आगमों में उपभोग–परिभोग की वस्तुओं की नामावली इस प्रकार मिलती है–1. शरीर पोंछने का अंगोछा 2. मंजन 3. फल 4. मालिश का तेल 5. उबटन हेतु लेप आदि 6. स्नानार्थ जल 7. पहनने के वस्त्र 8. विलेपनार्थ पदार्थ चन्दन आदि 9. फूल 10. आभरण 11. धूप–दीप 12. पेय 13. पक्वान्न 14. ओदन 15. सूप–दाल 16. घृतादि 17. शाक 18. माधुरक मेवा 19. जीमन–भोजन के पदार्थ 20. पीने का पानी 21. मुखवास 22. वाहन 23. उपानत्(जूते आदि) 24. शय्यासन 25. सचित्त वस्तु 26. खाने के अन्य पदार्थ।

आचार्य हेमचन्द्र जी ने श्रावक के लिये निम्न वस्तुओं का सर्वथा अथवा यथाशक्य त्याग करने के निर्देश दिये हैं–

1. शराब 2. मांस, मक्खन, शहद 3. पंच उदम्बर फल 4. अनन्त काय 5. अज्ञात फल 6. रात्रि भोजन 7. कच्चे दूध, दही, छाछ के साथ द्विदल खाना 8. बासी अनाज 9. दो दिन के बाद का दही और सड़ा अन्न।

श्रावक उपर्युक्त सूची में से उपभोग–परिभोग के लिये वस्तुओं का स्पष्ट निर्धारण करे और मात्रा की मर्यादा स्थिर करले और दृढ़ता से पालन करे। अन्य किसी वस्तु का उपभोग–परिभोग करना पड़े तो उसके विषय में भी मर्यादा स्थिर करना अनिवार्य है।

उपभोग–परिभोग परिमाणव्रत के पालन में कुछ दोष हो जाने की आशंका या संभावना रहती है। अतः हर एक श्रावक को जागरूक रहना चाहिये। दोष या अतिचार निम्नांकित हैं:–

1. **सचित्ताहार**– मर्यादा में जिन सचित्त वस्तुओं का निर्धारण नहीं है उनका आहार करना।
2. **सचित्त प्रतिबद्धाहार**– त्यक्त सचित्त वस्तु से सम्बद्ध या जुड़ी हुई अचित्त वस्तु का आहार जैसे गोंद, ,खजूर आदि।
3. **अपक्वाहार**– सचित्त वस्तु का त्याग होने पर बिना अग्नि के पके, कच्चे, शाक आदि एवं बिना अग्नि के पके फलादि का सेवन।
4. **दुष्पक्वाहार**– अर्द्ध पक्व वस्तु का आहार।
5. **तुच्छौषधिभक्षण**– उस वस्तु का आहार जो कम खायी जाय और जिसका अधिकांश भाग बाहर फेंक दिया जाता है– तरबूज,सीताफल आदि।

प्रत्येक श्रावक का यह कर्त्तव्य है कि वह सावधानी पूर्वक उक्त अतिचारों से बचने का प्रयत्न करे। दोष लगने पर श्रावक को प्रायश्चित्त लेकर शुद्धीकरण कर लेना चाहिए।

उपभोग–परिभोग की वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये कुछ उद्यम भी करना ही पड़ता है। इस संबंध में कुछ हिंसा होना स्वाभाविक है। यह उचित ही नहीं, परन्तु आवश्यक है कि ऐसी वस्तुओं की मर्यादा अवश्य करें जिनकी प्राप्ति के लिए महारम्भ करना पड़े– अति हिंसा होने की संभावना हो। निम्न कार्य कर्मादान कहलाते हैं। कर्मादान 15 हैं:–

1. **अंगार कर्म (इंगालकम्मे)**– अग्नि सम्बद्ध व्यापार (कोयला बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना, ईंटे बनाना आदि)
2. **वन कर्म (वणकम्मे)**–घास काटना, ईंधन के लिये वृक्ष काटना।
3. **शकट कर्म (साडीकम्मे)**– तांगा, गाड़ी, मोटर, रिक्शा आदि को बनाना।
4. **भाट कर्म (भाडीकम्मे)**– वाहनादि को किराये पर देना।
5. **स्फोट कर्म (फोडीकम्मे)**– भूमि फोड़ने का व्यापार, खनन कार्य, नहर निर्माण, भवन निर्माण आदि।
6. **दन्त वाणिज्य (दंतवाणिज्जे)**–हाथी दांत का व्यापार।
7. **केश वाणिज्य (केशवाणिज्जे)**– बालों का अथवा बाल वाले जानवरों का व्यापार।
8. **लाक्षा वाणिज्य (लक्खवाणिज्जे)**–लाख आदि का व्यापार।

9. **रस वाणिज्य (रसवाणिज्जे)**—मदिरा आदि का व्यापार।
10. **विष वाणिज्य (विषवाणिज्जे)**—जहरीले पदार्थों एवं घातक अस्त्र-शस्त्रों का व्यापार।
11. **यन्त्र पीलन कर्म (जंतपीलणकम्मे)**— मशीन आदि चलाने का व्यवसाय
12. **निर्लाच्छन कर्म (निलंछणकम्मे)**— प्राणियों के अंगों को छेदकर, नपुंसक बनाना आदि का कार्य।
13. **दावाग्नि दापन कर्म (दवग्गिदावाणिज्जे)**—जंगल, खेत आदि में आग लगाने का कार्य।
14. **तडाग-शोषण कर्म (सरदहतलाय-सोसणया)**—झील, सरोवर आदि को सुखाने का कार्य।
15. **असतीजन—पोषण कर्म (असईजणपोसणया कम्मे)**— दुश्चरित्र स्त्रियों का पालन, समाज विरोधी तत्त्वों का संरक्षण आदि।

प्रत्येक श्रावक को अतिहिंसात्मक कर्मों से सदा बचते रहना चाहिए और जीविका के लिये ऐसे ही कार्य करने चाहिए जिनमें कम से कम हिंसा होती हो। श्रावक को चाहिए कि वह सादा जीवन व्यतीत करे और इस प्रकार के जीवन के लिये न्यूनतम आवश्यक वस्तुओं तक सीमित हो जाय।

"अहिंसा व्रत के लिये यह व्रत रक्षक का काम करता है और साथ ही उसके पालनकर्त्ता के मन में शांति और संतोष की व्याप्ति संभव हो जाती है।"

मानव जीवन का सार प्राप्त करने के लिये उपभोग—परिभोग परिमाण व्रत को अंगीकार करना अनिवार्य है।

—पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय
संरक्षक, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर
"चंदन", बी—2, रोड़, पावटा, जोधपुर—342010

अनमोल तथ्य

●श्री त्रिलोकचन्द जैन

1. अभय का एकमात्र स्थान 'वैराग्य' है।
2. साधक की खेती का बीज 'श्रद्धा' है।
3. 'कल' असफलता एवं आलस का द्योतक है।
4. 'सफलता' का कोई शॉर्टकट नहीं है।
5. 'प्रसन्नता' सभी सद्गुणों की माँ है।
6. सफलता का रहस्य 'आत्मविश्वास' है।
7. 'विवेकवान' सदा जाग्रत होता है।
8. संसार का वैभव 'क्षण भंगुर' है।
9. सुसाधु ही 'दान' के उत्कृष्ट पात्र है।
10. 'अभिमान' पराजय का द्वार है।

—श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगांव (महा.)

क्रमशः(3)

महामंत्र णमोक्कारः स्वरूप एवं माहात्म्य

■श्री जशकरण डागा

द्वितीय पद : णमो सिद्धाणं–

"अट्ठविहकम्मवियला, णिट्ठियकज्जा पणट्ठसंसारा।
दिट्ठसयलत्थसारा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।"

–समणसुत्तं ज्योतिर्मुख सूत्र 8

अर्थात् जो अष्ट कर्मों से रहित, कृतकृत्य, जन्ममृत्यु के चक्र से मुक्त तथा समग्र तत्त्वार्थ के द्रष्टा हैं, वे सिद्ध भगवन्त हैं, और (अनुत्तर) सिद्धि के देने वाले हैं।

विशेष– 1. अष्ट कर्मों के क्षय से सिद्ध भगवंतों में आठ मुख्य आत्मिक गुण प्रकट होते हैं, यथा–(1) अनंत ज्ञान (2) अनंत दर्शन (3)अनंत सुख (4)क्षायिक वीतरागता (5) अक्षय स्थिति (अमरत्व) (6) अमूर्तत्व (7) अगुरुलघुत्व व (8) अनंत सामर्थ्य।

2. सिद्ध भगवन्त अशरीरी होने से, निरंजन निराकार हैं तथा अज्ञान व मोह से सर्वथा रहित हैं। निर्विकार, निर्भय, निर्विकल्प, निरिच्छ, निर्लेप, आकांक्षा रहित, ज्ञान रूप, अक्षय अनंत गुणयुक्त, अव्यय, आनन्द स्वरूप व अनन्त शक्तिवान होकर भी वीतराग होने से अकर्ता हैं। किन्तु जैसे चन्द्रमा द्रष्टा की नेत्र ज्योति बढ़ाने में सहज निमित्त होता है, अथवा जैसे धर्मास्तिकाय अक्रिय होकर भी द्रव्यों की गति में सहायक निमित्त है, वैसे ही सिद्ध भगवान, अकर्ता होने पर भी सिद्ध गुणों के अनुरागी भव्य जीवों की सिद्धि में सहकारी कारण बनते हैं। दूसरे मनोविज्ञान शास्त्र का भी यह नियम है कि जो जैसा चिन्तन, स्मरण करता है, वह कालान्तर में वैसा ही बन जाता है। अतः सिद्ध भगवंतों के चिन्तन, मनन, स्तवन आदि से स्वतः आत्मा से परमात्मा पद की ओर गति होकर अन्ततः सिद्धत्व की प्राप्ति होती है। कहा है–

"कर्त्ता ईश्वर है नहीं, ईश्वर शुद्ध स्वभाव।
यदि उसको प्रेरक कहें, ईश्वर दोष प्रभाव।।"
"चेतन तो निज भान में, कर्त्ता आप स्वभाव।
वर्तें नहीं निज भान में, कर्त्ता कर्म प्रभाव।।"–आत्मसिद्धिशास्त्र से

वस्तुतः ईश्वर जगत कर्त्ता नहीं है। इसकी पुष्टि वैदिक धर्म से भी होती है। जैसे कि कहा गया है–

"न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते।।"–भगवद् गीता 5.14

अर्थात् न परमेश्वर जगतकर्त्ता है, न कर्मों को बनाता है तथा न कर्मों के फल संयोग की व्यवस्था या रचना करता है। परन्तु सब स्वभाव से ही बरत रहे हैं। आगे कहा है–

"नादत्ते कस्यचित्पापं, न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं, तेन मुह्यन्ति जन्तवः।।"–भगवद् गीता 5.15

अर्थात् न परमेश्वर किसी को पाप का फल देता है, न पुण्य का। अज्ञान से ज्ञान ढका है। इसी से जगत के प्राणी मोही हो रहे हैं।

3. सिद्ध भगवन्त 'सिद्ध' होने की अपेक्षा से पन्द्रह प्रकार के कहे गये हैं। यथा– (1) तीर्थसिद्धा (गौतमादि) (2) अतीर्थ सिद्धा (मरुदेवी मातादि) (3) तीर्थंकर सिद्धा (भ. शांतिनाथ आदि) (4) अतीर्थंकर सिद्धा (गजसुकुमाल मुनि आदि) (5) स्वयंबुद्ध सिद्धा (कपिल केवलि, मृगापुत्र आदि) (6) प्रत्येकबुद्ध सिद्धा (करकंडु आदि) (7) बुद्धबोद्धित सिद्धा (थावच्चा पुत्र आदि) (8) स्त्रीलिंग सिद्धा (चन्दनबाला आदि) (9) पुरुषलिंग सिद्धा (अतिमुक्त कुमार आदि) (10) नपुंसक लिंग सिद्धा (गांगेय अणगार आदि) (11) स्वलिंग सिद्धा (जम्बूस्वामी आदि) (12) अन्यलिंग सिद्धा (शिवराजर्षि आदि) (13) गृहस्थ लिंग सिद्धा (कूर्मा पुत्र आदि) (14) एक सिद्धा (भ. महावीर आदि) व (15) अनेक सिद्धा (भ. ऋषभदेव आदि)।

4. अरिहन्त साकार ईश्वर हैं, जबकि सिद्ध निराकार ईश्वर हैं। इसी कारण से साकार और निराकार दोनों उपासनाओं का अपना महत्त्व है। म. कबीर ने इन दोनों उपासनाओं के विषय में बड़ी मर्म स्पर्शी बात इस प्रकार कहीं है–

'निर्गुण 'तो है पिता हमारो, और सगुण महतारी।
किसको वंदे, किसको निंदे, दोनो पलड़े भारी।।''–म. कबीर के पदो से

5. सिद्ध भगवन्तों की जघन्य अवगाहना एक हाथ आठ अंगुल व उत्कृष्ट तैंतीस धनुष 32 अंगुल प्रमाण है। यह अवगाहना उनके अंतिम शरीर की 2/3 होती है अर्थात् 1/3 भाग कम होती है।

तृतीय पद : णमो आयरियाणं

''पंचाचारा समग्गा, पंचिदिय दंति दप्पणिद्दलणा।
धीरा गुणगंभीरा आयरिया सरिसा होंति।।''–अर्हत् प्रवचन 1.5

अर्थात् जो पंचाचार (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्याचार)से युक्त हैं, जो पंचेन्द्रिय रूपी हाथियों के मान को दलित करने वाले हैं, धीर हैं, तथा (छत्तीस) गुणों से गंभीर है वे आचार्य होते हैं।

आचार्य के छत्तीस गुण इस प्रकार कहे गए हैं–

''पंचिदिय संवरणो, तह णवविह बंभचेरगुत्तीधरो।
चउविह कसायमुक्को, इह अट्ठारस गुणेहिं संगुत्तो।।
पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालणसमत्थो।
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झं।।''

–प्रवचन सारोद्धार, द्वार 64 तथा जैन तत्त्व प्रकाश प्रकरण 3.19

अर्थात् पांच महाव्रत, पांच आचार, पांच समिति, तीन गुप्ति, पांच इन्द्रिय संवर, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालक व चार कषाय से मुक्त। इस प्रकार आचार्य छत्तीस गुणों से युक्त होते हैं। आचार्य के 36 गुण इस प्रकार भी कहे गए हैं– 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक व 3 गुप्ति।

आचार्य की प्रमुख विशेषता होती है–

''जह दीवो दीवसयं, पइप्पइ जतो दीवो।
दीवसमा आयरिया, दिव्वंति परं च दिप्पंति।।''–आवश्यक निर्युक्ति

अर्थात् जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशित होकर, अन्य सैकड़ों दीपकों को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार आचार्य ज्ञान, दर्शन, चारित्र द्वारा स्वयं प्रकाशित होकर अन्य को प्रकाशित करते हैं।

विशेष– 1. आचार्य चतुर्विध संघ को आध्यात्मिक साधना में अग्रसर करने वाले नायक व संचालक होते हैं। 2. आचार्य के नाम के आगे '108' लिखने का एक कारण उनके द्वारा पापों के 108 दरवाजों को बंद कर '108' उत्तम गुणों से शोभित होना है। विमत इस प्रकार जाने– 4 कषाय x 3 (संरंभ,समारंभ व आरंभ) x 3 योग x 3 करण = कुल 108। आचार्य चतुर्विध संघ नायक व संवाहक होते हैं। 3. संरभ–जीव हिंसा विषयक मन में भाव लाना। समारंभ– जीवों को संताप देना। आरंभ– जीवों की हिंसा करना। (स्थानांग 3.1.124)**(क्रमशः) –संघपुरा, टोंक(राज.)**

अप्राकृतिक जीवन शैली : रोग का मूल

श्री चंचलमल चोरड़िया

प्रकृति के साथ असहयोग की सजा रोग है। अतः निरोग रहने के लिए आवश्यक है कि यथासम्भव हम प्राकृतिक नियमों का पालन करें। शरीर को स्वस्थ रहने के लिए यह जानना आवश्यक है कि श्वास कब, कहाँ, कितना और कैसे लें अथवा छोड़ें? पानी कब, कितना और कैसे पिएँ? खाना कब, कितना, क्या, कहाँ और कैसे खाएं? इन नियमों की उपेक्षा कर अपने आपको स्वस्थ रखने की कल्पना, आग लगा कर शीतलता प्राप्त करने के समान होगी! मन के लंगड़े व्यक्ति को स्वर्ग के हजारों देवता भी अपने पैरों से नहीं चला सकते। ठीक उसी प्रकार अप्राकृतिक जीवन शैली से दीर्घकाल तक स्वस्थ रहना असंभव होता है। स्वस्थता के लिए आवश्यक है नियमित स्वाध्याय, ध्यान, शुभ भावनाओं का सम्यक् चिन्तन, अनासक्ति एवं निस्पृही जीवनचर्या, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् आचरण में प्रवृत्ति का अभ्यास, संयमित, नियमित, परिमित जीवन शैली, मौसम के अनुकूल, सात्त्विक पौष्टिक खान–पान, शुद्ध प्राणवायु का अधिकाधिक सेवन, स्वच्छ हवा एवं धूप वाला आवास एवं क्रिया स्थल, नियमित आसन, प्राणायाम, व्यायाम, निद्रा, उपवास, स्वास्थ्य के अनुकूल दिनचर्या आवश्यक है। अपनी अपनी आवश्यकताओं और क्षमताओं की प्राथमिकता के आधार पर यदि उपर्युक्त बातों का समायोजन हमारे दैनिक जीवन में करते हैं तो रोग आने की सम्भावनाएँ बहुत कम हो जाती हैं। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि का निरन्तर विकास होने से जीवन में शान्ति, संतोष, सहनशीलता, निर्भयता, धैर्य, आनन्द एवं अनुकूल और प्रतिकूल प्रसंगों पर समभाव में संस्कार अभिव्यक्त होने लगते है।

–'स्वस्थ रहें या रोगी–फैसला आपका' पुस्तक से साभार

चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

नारी अपने आसपास स्वर्ग का निर्माण कर सकती हैं

■श्रीमती शान्ता मोदी

नारी की शक्ति की गाथा हर युग में गाई गई है। जब उसे अपनी शक्ति का आभास हो जाता है तो वह अद्भुत कार्य करके दिखा देती है। भक्ति, वीरता, पुरुषार्थ आदि में नारी ने समाज में उल्लेखनीय योगदान किया है। तप-त्याग में भी नारी का स्थान ऊँचा रहा है। जैन शास्त्रों में आगमों में नारी द्वारा तपस्या के कई उदाहरण हैं।

आज की नारी अपनी शक्ति को पहचान ले तो वह समाज में एक आदर्श व्यक्तित्व को प्रस्तुत कर सकती है। हर नारी में ऐसी शक्ति है कि वह अपने आसपास स्वर्ग का निर्माण कर सकती है। आज शहरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिक विलासितापूर्ण भौतिक वातावरण जन-जीवन को अस्त व्यस्त एवं दूषित कर रहा है। जीवन की आपाधापी में मानवीय मूल्य एवं आदर्श पिछड़ते जा रहे हैं। आज हमें जरूरत है कि इस बदलते सामाजिक ढांचे पर गौर करें।

नारी को अपने मन में यह विश्वास होना चाहिये कि मैं देश, समाज व परिवार का गौरव हूँ। आदर्श चरित्र निर्माण के पथ पर चलने के लिये हर नारी की सोच होनी चाहिये कि मुझे अपनी मर्यादा एवं संस्कृति को बनाये रखना है। उसके विपरीत नहीं जाना है। नारी प्रदर्शन की वस्तु नहीं है। उसे इस तरह जीवन जीना है कि उसका नाम सम्मानपूर्वक लिया जा सके। नारी को अपने आत्मबल को कमजोर नहीं करना है, अपितु क्रोध, मान, माया, लोभ पर विजय प्राप्त करनी है।

नारी में पुरुषों की अपेक्षा सहनशीलता अधिक होती है, जिससे वह कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने धैर्य से विचलित नहीं होती, धर्म-साधना में भी आगे ही रहती है। नारी अपनी शक्ति को भली–भांति समझे तो वह समाज का उत्थान करने में बहुत कुछ योगदान कर सकती है। नारी ही माँ, बहन, पत्नी होती है। इस कारण उसमें प्रेम, सहानुभूति, सौहार्द, समर्पण एवं त्याग की भावना अधिक होती है।

नारी की महानता की गाथा जैन धर्म में वर्णित 16 सतियों के जीवन से जानी जा सकती है। वे अपने जीवन को उज्ज्वल बनाकर अजर अमर हो गईं। जीवन में अनेक कष्ट आये, किन्तु उन्होंने अपनी शक्ति को पहचान लिया था, इसलिये सभी बाधायें छिन्न–भिन्न हो गई और उन्हें परम सुख की प्राप्ति हुई।

जीवन को हमें सही मार्ग पर लगाना है। जीवन में जब सदाचार की प्रतिष्ठा होती है तब किसी का अहित नहीं होता है। यदि मन प्रभु-भक्ति में एवं धर्म-साधना में लीन रहता है तो परम आनन्द की प्राप्ति होती है। परिवर्तनशील संसार में सुख–दुःख, आशा–निराशा, मान–अपमान, अनुकूलता–प्रतिकूलता का क्रम सतत चलता रहता है। जो आया है वह जायेगा, यह एक चिरंतन सत्य है। इसे समझ

लेने में ही सच्चा सुख, शांति एवं आनन्द का स्थायी भाव पैदा होता है। अपनी आत्मा में ज्योति प्रज्वलित करने के लिये स्वयं को जप, तप एवं आराधना में लगायें, ताकि जीवन को सार्थकता प्राप्त हो जाए।

यदि नारी सदाचरण एवं सद्विचारों से सुवासित होकर संयम, सहनशीलता, सेवा एवं धर्मनिष्ठा में संलग्न रहे तो वह अपने आस पास स्वर्ग का निर्माण कर सकती है।

–सी, 26 देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

कैसे निर्मल मन होगा

श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'

सोचो सोचो मानव सोचो, कैसे निर्मल मन होगा।
मलिन हृदय में किस प्रकार से, परम सत्य दर्शन होगा।।

क्रोध न छूटा मान छूटा, माया का सारा व्यवहार।
धन के लोभ में, आत्म उत्थान का, कभी नहीं आता सुविचार।
राग द्वेष से दूषित मन में, कैसे शुभ चिन्तन होगा।
सोचो सोचो....

सदा स्वयं को गुणी मानते, अन्य जनों में खोजे दोष।
बिना टटोले अन्तर्मन को, बतलाते निज को निर्दोष।।
मुख अपना कैसे देखोगे, जब न स्वच्छ दर्पण होगा।
सोचो सोचो.....

पर निन्दा कड़वी बोली ने, तोड़ दिये कितने परिवार।
बीज वैर के ऐसे बोये, जन्म अनेकों दिये बिगाड़।।
कटुक वचन बाणों से कैसे, प्रेम भाव अर्जन होगा।
सोचो सोचो....

प्रेम का धागा कभी न झटको, अगर टूट वह जायेगा।
यत्न अनेकों करने पर भी, वैसे न जुड़ पायेगा।।
यदि कभी जुड़ जाये भी तो, गांठ का वहाँ बन्धन होगा।
सोचो सोचो.....

वीर प्रभु ने अनेकान्त का, हम सबको आधार दिया।
हर दृष्टि से सच को परखो, पावन परम विचार दिया।।
अंश सत्य के 'दास' मिलाकर, पूर्ण सत्य वर्णन होगा।
सोचो सोचो......

–12 सी डी, आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ–226005

प्राणिवध का त्याग

श्री लालचन्द जैन

श्री देवेन्द्रविजय जी द्वारा रचित प्राकृत कथा 'जैन कथा रत्न कोष' के आधार पर श्री लालचन्द जैन ने यह कथा स्तम्भ प्रारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत श्रावक के व्रतों का महत्त्व स्थापित हुआ है तथा अतिचारों से बचने की प्रेरणा मिलती है। प्रस्तुत कथा में प्राणातिपात विरमण व्रत (अहिंसा) का महत्त्व स्थापित करते हुए लेखक ने उसके अतिचारों से बचने की प्रेरणा की है।—**सम्पादक**

कलिंग राज्य में सुवेला नगरी थी। उसके चारों ओर अनेक ग्राम, नगर, उपनगर, उपवन, आश्रम आदि थे। उस नगरी के चारों ओर ऊँचा कोट होने से उसमें शत्रुओं का प्रवेश नहीं हो सकता था।

उस नगरी पर सुमित्रराजा का राज्य था। इस राजा ने अपने समस्त शत्रुओं को जीत लिया था। उसके तारा नामक पटरानी थी। उसका विशेष कृपापात्र मंत्री बंधुदेव था। मंत्री की पत्नी का नाम महिमा था। विनय आदि गुणों से सुशोभित उसके बड़े पुत्र का नाम यज्ञदेव (जन्नदेव) था। छोटे पुत्र का नाम शिवदेव था, जो कठोर स्वभाव का था।

दोनों मंत्री पुत्रों ने अनेक विद्याओं में कुशलता प्राप्त की। इन दोनों पुत्रों में ज्ञान, विज्ञान, विनय, नीति, समयोचित वाक् कला, भोग परिभोगों की समझ आदि समान थी, फिर भी राजा को यज्ञदेव ही अधिक प्यारा लगता था।

एक दिन अपनी राज्यसभा में बैठे हुए राजा ने अपने सभासदों से कहा"कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें उनके गुण स्वाभाविक लगते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें उनके गुण ऊपर से चिपकाये हुए जैसे लगते हैं अर्थात् कृत्रिम होते हैं। दोनों प्रकार के मनुष्यों में गुण एक समान होने पर भी कुछ में स्वाभाविक और कुछ में बनावटी होते हैं। मात्र देखकर इन दोनों प्रकार के मनुष्यों को कैसे पहचाना जा सकता है?"

सभासद—"हे देव! आज आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?"

राजा— "आप लोगों ने दोनों मंत्री पुत्रों को देखा है। यदि दोनों के व्यवहार को प्रत्यक्ष देखेंगे तो यह भेद प्रकट हो जायेगा। यज्ञदेव में जो गुणसम्पदा है वह उसका स्वाभाविक गुण लगता है, किंतु शिवदेव की गुणसंपदा गरीब के शृंगार जैसी बनावटी लगती है। जिनके माता—पिता एक समान हैं, जिनकी शिक्षा एक समान है, फिर भी वे दोनों विलक्षण स्वभाव वाले हुए हैं।"

इस प्रकार राजा का यज्ञदेव के प्रति स्नेह स्वाभाविक था, जबकि उसके छोटे भाई शिवदेव के प्रति बनावटी था।

उस नगरी के सेनापति का नाम महीधर था। सेनापति की कन्या का नाम मदनसुंदरी था। वह जवान हो गई थी, पर उसके योग्य वर न मिलने से वह अभी तक कुँआरी थी। एक दिन वह अपने मकान के बरामदे में बैठी थी कि शिवदेव

राजमहल जाते हुए उधर से निकला। उसकी नजर मदनसुंदरी पर पड़ी। अनुराग पूर्वक देखते हुए उसने अपने नौकर से पूछा "वह कौन सुंदरी बैठी है?

नौकर–"वह सेनापति की पुत्री मदनसुंदरी है।"

शिवदेव–"वह कुँआरी है या उसका विवाह हो गया है?"

नौकर– "अभी तक तो कुँआरी ही है, किंतु उसके लिये वर की खोज बहुत तेजी से हो रही है, आज कल में ही उसका विवाह हो जायेगा।"

शिवदेव मदनसुंदरी के प्रति इतना अधिक आसक्त हो गया कि उसने खाना पीना छोड़ दिया, शृंगार करना छोड़ दिया और एकांत में जाकर खाट बिछा कर सो गया।

भोजन के समय मंत्री ने पूछा, "आज शिवदेव दिखाई नहीं दे रहा है? क्या बात है।"

नौकर– "पता नहीं क्या बात है, पर वह एकांत में सो रहा है।"

मंत्री स्वयं पुत्र को ढूंढते हुए उसके पास पहुंच गया और मधुर वचन से पूछा, "पुत्र! तूं शोकातुर क्यों दिखाई दे रहा है? तेरा हृदय कहीं आकर्षित हुआ लगता है? लगता है किसी ने तेरा मन हर लिया है। क्या बात है? पुत्र! सच सच बता दे।"

लज्जा के कारण शिवदेव ने कोई उत्तर नहीं दिया। मंत्री ने उसके मित्रों से पता लगाया। वास्तविकता को जानकर मंत्री ने पुत्र से कहा, "पुत्र! इतनी सी बात पर शोक क्यों? मैं तेरा कार्य पूरा करूँगा। तुम्हारी इच्छित स्त्री तुम्हें मिलेगी। कायरता को छोड़ कर पहले खाना खा ले।"

पिता की बात मान कर शिवदेव ने खाना खा लिया और क्रोध का त्याग किया। खाने पीने के बाद मंत्री ने अपने विशेष कर्मचारी को सेनापति के पास उसकी लड़की को माँगने के लिये भेज दिया। कर्मचारी के मुँह से माँग सुनकर सेनापति ने कहा, "संधिपाल के पुत्र नंदीघोष के साथ मेरी पुत्री का विवाह पहले से ही निश्चित हो चुका है। यदि वह मेरी पुत्री से विवाह नहीं करेगा तो मैं अपनी पुत्री मंत्री पुत्र को दे दूँगा।"

भविष्य में क्या होगा? कौन जाने? सोचकर शिवदेव व्याकुल हो गया। उसके पिता ने उसे समझाया, "पुत्र! सेनापति की पुत्री को तुम्हारे लिये प्राप्त करने में मैं धन बल, सामर्थ्य बल, पहचान बल आदि से प्रयत्न करूँगा, जिससे वह तुम्हें ही प्राप्त होगी।"

इधर संधिपाल के पुत्र नंदीघोष को यह मालूम हो गया कि मेरे लिये निश्चित की गई मदनसुंदरी को मंत्री ने अपने पुत्र के लिये माँगा है। यह जानकर पहले तो वह उदास हो गया, किन्तु फिर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा। उसने सेनापति के पास अपना आदमी भेज कर कहलाया कि "आपकी पुत्री का मेरे साथ विवाह जैसा संबंध हो चुका है, लोक व्यवहार के लिये विवाह करना है तो

शीघ्र मुहूर्त निकलवा कर विवाह कर दें।"

कानो कान यह खबर शिवदेव तक भी पहुँच गई। वह क्रोधित हो गया और उसने अपने मित्रों से कहा, "नंदीघोष की दुष्टता तो देखो! पहले तो उसने मदनसुंदरी की उपेक्षा की और जब मैं उससे विवाह करने को तत्पर हो गया तब वह उससे शीघ्रातिशीघ्र विवाह करने के लिये संधिपाल को मंजबूर कर रहा है।"

मित्रों ने कहा, "तुम क्यों घबराते हो? मदनसुंदरी से भी श्रेष्ठ रूप सौंदर्य और गुणों वाली अनेक कन्याएँ इस संसार में मौजूद हैं। उनमें से किसी श्रेष्ठतम कन्या से तुम्हारा विवाह करवा देंगे। मदनसुंदरी को ही प्राप्त करने की हठ का अब त्याग कर दो।"

शिवदेव उबल पड़ा "व्यर्थ की बातें करने से क्या लाभ? यदि मदनसुंदरी से नंदीघोष विवाह करेगा तो वह अवश्य ही मृत्यु प्राप्त करेगा। सिंह के बच्चे ने अपने लिये जिस हिरण का शिकार किया है, उसे यदि कोई सियार खाने का प्रयत्न करे तो क्या वह कुशल रहेगा? जो अमृत देवों के लिये तैयार किया गया था, उसे पीने की इच्छा वाले राहु की क्या दशा हुई?"

क्रोधित शिवदेव को समझाने के लिये उसके मित्र मधुर वचन से बोले, "ऐसी अत्यन्त अनुचित बात करना ठीक नहीं। मोर विषाक्त सर्प को खा जाने पर भी मीठा ही बोलता है। मन में क्रोध होने पर भी ऊपर से तो मीठा ही बोलना चाहिये। जो व्यक्ति अपने वचन और मुख पर किसी प्रकार का विकार नहीं आने देता उसका कार्य शीघ्र सिद्ध हो जाता है। मन के गुस्से को मन में ही रहने दो, दिखाने के लिए तो मीठा बोलो। किंपाक का फल यद्यपि विषैला होता है, प्रर देखने सूंघने में तो वह अत्यन्त सुंदर और मधुर होता है।" मित्रों ने उसे बहुत समझाया, पर उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी, तब मित्रों ने उसके बड़े भाई यज्ञदेव और मंत्री को सब बात बता दी।

सुन कर मंत्री बहुत शोकाकुल हुआ। एकांत में जाकर उसने यज्ञदेव से विचॉर विमर्श किया कि "अब क्या करना चाहिये? यदि शिवदेव की उपेक्षा की जाय और उसे रोका न जाय तो अवश्य कोई अकार्य कर बैठेगा। कामांध लोग उचित अनुचित का विचार नहीं करते। जिद्दी लोग न तो बड़े लोगों से डरते हैं, न संबंधियों से लज्जित होते हैं और न ही अपनी मर्यादा को समझते हैं। उसे जो कुछ समझाना था वह तो उसके मित्रों ने पहले ही समझा दिया है, किंतु उसने मित्रों के समझाने पर कोई ध्यान नहीं दिया, यदि हम उसे कुछ अधिक कहेंगे तो वह निर्लज्ज कल करने का काम आज ही कर डालेगा, अतः अब उसे समझाना व्यर्थ है। उसे श्री वइरसेन सूरि भगवान के पास ले जाना चाहिये। जब वह सूरि भगवान से धर्मवचन सुनेगा तब शायद उस पर उसका कुछ असर पड़ेगा।"

यज्ञदेव बोला, "पिताजी! आपका यह विचार अत्यत उत्तम है।" **(क्रमशः)**

—10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

क्रमशः4)

भगवान महावीर : 101 तथ्य

श्री राजेश जैन 'देवकर'

39. प्रभो! इस तिल बिरवा के सात फूलों में क्या फल भी लगेंगे? उत्तर में "हाँ" सुनकर उत्पाती गोशालक ने पौधे को उखाड़कर यथास्थान डाल दिया कि देखें अब इसमें तिल कैसे पैदा होते हैं। कुछ समय बाद वे उसी मार्ग से गुजरे तो गोशालक ने कहा–"भगवन्! वह पौधा तो मैंने तभी उखाड़ दिया था शायद किसी बीज से यह नया पौधा उग आया है।" अंतर्यामी महावीर ने कहा–"गोशालक! यह वही तिल का पौधा है। तुम्हारे उखाड़ने के बाद यह एक गाय के खुर से दबने और उसी दिन वर्षा होने से पुनः जीवित हो गया है। इसकी फली में वही सात फूल दाने बनकर भरे हैं।" कौतुहलवश गोशालक ने फली तोड़कर देखा, उसमें सात ही दाने थे। महावीर की भविष्यवाणी से वह प्रभावित हुआ, साथ ही नियतिवाद का पक्का समर्थक बन गया। पूर्व में बासी–भिक्षा और खीर की हांडी फूटने की भविष्यवाणी से होनहार का बीजवपन उसके भीतर हुआ था। इस घटना से उसने निश्चय किया कि जो होना है वह पहले से निश्चित होता है, उसे कोई टाल नहीं सकता। इसके बाद उसने भ. महावीर का साथ छोड़ दिया। पार्श्वापत्य श्रमणों से उसने निमित्तज्ञान सीखा और अष्टांग निमित्त का पारगामी ज्ञाता हो गया। महावीर से तेजोलेश्या लब्धि सीखी ही थी। करेला नीम चढ गया। अपनी उपलब्धि से वह जनता में पूजा जाने लगा।

40. महावीर की तपाराधना से प्रभावित जीर्ण नामक धर्मिष्ठ श्रमणोपासक प्रतिदिन उनसे आहार की अभ्यर्थना करता। पर, श्रमण महावीर की तपाराधना बढ़ती ही गई, जबकि श्रेष्ठी जीर्ण प्रभु के भिक्षार्थ पदार्पण की प्रतीक्षा करता रहा। चार माह पश्चात् महावीर भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए अनायास पूर्ण श्रेष्ठी के द्वार पर पहुँचे। धर्म व दान के भावों से कोसों दूर श्रेष्ठी ने दासी को आदेश दिया–"भिखारी को कुछ डालकर टरका दे।" दासी द्वारा कुलस्थ के बाकुले देते ही "अहोदानं" की देववाणी हुई। उधर श्रावक 'जीर्ण' प्रतीक्षातुर था। उसका अंतर्मानस श्रेष्ठ भावों में आरोहरण कर रहा था। देववाणी सुन उसका ध्यान भंग हो गया– "अहो मैं कितना मंदभागी हूँ। तीर्थंकर को पारणा भी न करा सका।" पश्चात्ताप से उसका भाव आरोहण रुक गया, अन्यथा वे भाव एकाग्रता से समग्र ज्ञान की निधि पा जाते। जबकि नव धनाढ्य पूर्ण श्रेष्ठी जयनाद सुन चकराया–"तो वह भिखारी नहीं था?" वह मिथ्याकथन करने लगा–"मैंने शुभागत भिक्षु को खीर दान दिया।' एक ओर प्रभु के लिए निर्विशेष भक्ति थी, दान की उदात्तभावना थी तो दूसरी ओर श्री संपन्नता का अभिमान था, उपेक्षा पूर्ण दान था। एक ने कुछ न देकर सब कुछ पाया, जबकि एक ने देकर भी अलौकिक कुछ न पाया।

41. सुधर्म सभा में इन्द्र ने महावीर की गंभीर अचलता, अनुपम साहस और सहिष्णुता की प्रशंसा करते हुये कहा कि उनको देव, दानेव, मानव कोई भी साधना से नहीं

डिगा सकता। यह सुन गर्वोन्मत्त संगम नामक देव ने ध्यान–योग से महावीर को विचलित करने की ठानी। प्रलयंकारी धूलि वर्षण, विषैले कीटों का प्रहार, मदोन्मत्त हाथी का आतंक, खूंखार सिंह, देवांगनाओं की कामोत्तेजक मनुहार, छद्म सिद्धार्थ–त्रिशला का विलाप और वरदान का छलावा आदि 20 भीषण उपसर्ग (कष्ट) उसने एक ही रात्रि में दिये, किन्तु आत्मानुसंधान में लीन महावीर अचल रहे। इसके बाद भी वह 6 माह तक उपसर्ग देता रहा। अपने अपराध पर स्वयं लज्जित एवं पराजित संगम क्षमायाचना के लिये प्रस्तुत हुआ तो महाश्रमण महावीर बोले–"संगम! जो निमित्त श्रमण के लिये कर्ममुक्ति का होता है वही निमित्त तुम्हारे कर्मबंध ओर भवभ्रमण का कारण ब न गया है। बस मुझे यही दुःख है।"

42. इन्द्र एवं देवों द्वारा कई बार महावीर के वीरत्व की परीक्षा ली गई, पर महावीर कभी विचलित नहीं हुए। वीरता के धनी महावीर कहते थे– "न मैं किसी से डरता हूँ न मैं किसी को डराता हूँ।" कहा जाता है कि 23 तीर्थंकरों को मिले परीषह की तुलना में प्रभु महावीर को मिले उपसर्ग ज्यादा ही थे।

43. एक बार चमरेन्द्र को शक्रेन्द्र के दिव्य भोगों को देखकर ईर्ष्या पैदा हुई और भगवान महावीर की शरण लेकर वह सौधर्म विमान के द्वार तक पहुंच गया। वहीं से शक्रेन्द्र को ललकारा तो शक्रेन्द्र ने उसकी धृष्टता के लिए उसकी ओर वज्र फेंका। प्रहार से बचने के लिए वह महावीर की शरण में जा छुपा। शक्रेन्द्र ने वज्र को बीच में ही लपक कर कहा–"रे दुष्टात्मा प्रभु के शरण/चरण ने तुझे बचा लिया वरना... ।"

44. पूर्व वैर–स्मरण आने पर कटपूतना नामक व्यन्तरी ने प्रतिशोध की भावना से महावीर को ध्यानच्युत करने का प्रयास किया। उनके स्कंधों पर चढ़कर वह अट्टहास करने लगी, अपनी घनी जटाओं से बर्फ सा ठंडा जल बरसाया और शीतल पवन का तूफान भी खड़ा कर दिया। इस अवसर पर समता से परीषह सहन करते हुये उन्होंने उस दुरात्मा के प्रति किंचित् भी द्वेष–क्लेष नहीं किया। समता रस में आप्लावित वर्द्धमान स्वामी को अवधिज्ञान (अतीन्द्रिय ज्ञान) उस समय प्रवर्द्धमान हुआ।

45. साधनाकाल में महावीर सतत जागरूक रहे। कभी प्रमाद (आलस्य) नहीं किया। कभी निद्रा नहीं ली। एकदा अंतिम और प्रथमबार उन्हें निद्रा आई जिसमें उन्होंने शुभ भविष्य सूचक दस स्वप्न देखे–"पिशाच को पछाड़ना, श्वेत पुंष्कोकिल, दैदीप्यमान रत्नमालाएं, श्वेत गो समूह, पद्म सरोवर, महासमुद्र को अपनी भुजाओं से पार कराना, सहस्ररश्मि सूर्य आदि।" जिसका फल स्वप्नशास्त्री ने बताया– "हे मुनिराज! आप मोह कर्म का अंत कर केवलज्ञान प्राप्त करेंगे, श्रुत ज्ञान का उपदेश देंगे, चतुर्विध संघ की स्थापना करेंगे, संसार समुद्र को पार करेंगे एवं आपकी कीर्ति सारे लोक में प्रसारित होगी।"

-श्री देव आनन्द जैन गुरुकुल, वर्द्धमान नगर, राजनांदगांव(म.प्र.)

करुणामूर्ति धर्मरुचि

श्री दुलीचन्द जैन

"यह विष है शिष्य! इसे ले जाकर किसी ऐसे स्थान पर डाल दो, जहाँ कोई जीव–जन्तु नहीं हो। जो भी जीव–जन्तु इसे खायेंगे वे मृत्यु को ही प्राप्त करेंगे।" गुरु ने आदेश दिया।

मुनि ने अनेक स्थानों पर जाकर ऐसे निरापद स्थान की खोज की, परन्तु ऐसा कोई स्थान नहीं मिला। तब मुनि ने सोचा, जीवों की रक्षा कैसे करूँ? अंततः उन्होंने सोचा– जीवों की रक्षा का एक ही स्थान है, वह है मेरे स्वयं का उदर। जहाँ इस विष को डाल देने पर किसी जीव.जन्तु को कष्ट नहीं होगा...और मुनि ने वह भयानक विष अपने ही उदर में डाल दिया।

कौन थे वे करुणामूर्ति?

यह कहानी भगवान् महावीर स्वामी के युग की है। भगवान महावीर ने अहिंसा एवं करुणा का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्राणी में 'आत्मा' तत्त्व है और वह तत्त्व सभी में समान है। अतः प्रत्येक प्राणी को जीवित रहने का अधिकार है और उसके अधिकार की रक्षा की जानी चाहिए।

उसी युग में चम्पा नाम की नगरी थी जिसमें तीन ब्राह्मण भाइयों का परिवार रहता था। उनके नाम थे– सोमदेव, सोममूर्ति और सोमदत्त। वे मिलजुल कर अपने परिवार का काम करते थे तथा परिवार की गाड़ी सुखपूर्वक चल रही थी। उनकी पत्नियों के नाम थे– नागश्री, यज्ञश्री और भूतश्री। वे भी प्रेमपूर्वक घर का सब काम–काज करती थी।

एक दिन नागश्री भोजन बना रही थी। उसने कई तरह के पकवान बनाए। उसके घर में एक बगीचा भी था, जिसमें कई तरह के फल एवं सब्जियां उगाई जाती थी। नागश्री उस बगीचे से तुम्बे का फल ले आई तथा उसकी सब्जी बनाई। उसने सब्जी में कई प्रकार के मिर्च–मसाले डाले ताकि सब्जी स्वादिष्ट बने। सब्जी बनने पर जब उसने चखा तो पता लगा कि यह सब्जी तो जहरीली है। उसे बड़ा दुःख हुआ।

उसने उस सब्जी को अलग रख दिया और झटपट दूसरी सब्जी बनाकर तैयार की। कड़वी सब्जी को बाद में कहीं फेंक दूँगी, ऐसा विचार कर उसने परिवार के लोगों को भोजन करा दिया तथा स्वयं भोजन करके आराम करने लगी।

संयोग से उस समय चम्पानगरी में भगवान महावीर के शिष्य आचार्य धर्मघोष अपने शिष्यों सहित पधारे हुए थे। उनके एक श्रमण धर्मरुचि भिक्षा हेतु नगर में निकले और नागश्री के द्वार पर जा पहुँचे। उस आलसी स्त्री ने सोचा कि चलो, झंझट मिटी। कौन इस सब्जी को कहीं फेंकने जाएगा? यह मुनि स्वयं ही चले आए हैं तो इन्हें ही यह सब्जी दे देती हूँ। जब मुनि इसे चखेगा तो सब्जी कड़वी लगेगी ही, फलतः यह सारी सब्जी स्वतः ही बाहर कहीं फेंक देगा।

मुनि ने पात्र बढ़ाया। नागश्री ने सारी सब्जी उस पात्र में उँडेल दी। मुनि ने इतनी अधिक सब्जी देने के लिए बहुत मना किया, परन्तु वह नहीं मानी। सरल

हृदय मुनि ने देखा कि इतनी सब्जी ही क्षुधापूर्ति के लिए पर्याप्त है। अतः उन्होंने किसी अन्य घर से कोई खाद्य पदार्थ की भिक्षा न ली और लौट आए, गुरु चरणों में। आचार्य के समक्ष मुनि धर्मरुचि ने सब्जी रखी तो ज्ञानी गुरु ने जान लिया कि यह सब्जी विषाक्त है। शान्त भाव से उन्होंने कहा– "शिष्य! यह विष है। इसे किसी ऐसे स्थान पर डाल आओ, जहाँ कोई जीव इसे खा न सके किसी जीव को तनिक भी कष्ट न हो।"

मुनि धर्मरुचि स्थान की खोज में निकले। एकान्त स्थान खोजकर उन्होंने सब्जी की एक बूँद परीक्षा हेतु भूमि पर गिराई, किन्तु उन्होंने देखा कि कुछ ही क्षणों में उस सब्जी की गन्ध पाकर सैंकड़ो चीटियाँ वहाँ आई और उसे खाकर उसी समय तड़प–तड़प कर मर गई।

मुनि का हृदय करुणा से भर आया। उन्होंने सोचा कि ऐसा तो कोई स्थान नहीं, जहाँ मैं इस सब्जी को डालूँ और कोई भी जीव इसे खा न पाए। तब क्या करूँ? किसी भी स्थान पर यदि मैंने इसे डाल दिया तो बेचारी हजारों अबोध चींटियाँ इस सब्जी को खाकर कष्ट पाएंगी और मृत्यु को प्राप्त करेंगी।

अचानक मुनि को एक उपाय सूझा। वे मुस्कराए। अपने आप से बोले– हाँ, ऐसी भी एक जगह है, जहाँ जीव–जन्तुओं को कुछ भी पीड़ा नहीं पहुंचेगी और वह है– मेरा पेट। यदि इस सब्जी को मेरे पेट में डाल दूँ तो केवल मेरी ही मौत होगी, अन्य जीव–जन्तुओं की तो रक्षा हो जाएगी। उन्होंने वह सब्जी स्वयं ही खा ली। वे जानते थे कि यह भयंकर विष है। इसे खाकर उन्हें भीषण वेदना होगी और निश्चित रूप से मृत्यु भी होगी। किन्तु अपनी वेदना और मृत्यु की चिन्ता उन्होंने नहीं की। चिन्ता उन्हें केवल चींटियों की थी, उनकी पीड़ा और प्राणों की थी। मुनिवर ने उन्हें बचा लिया।

परिणाम जो होना था, वही हुआ। शीघ्र ही मुनि का शरीर नीला पड़ गया, भयानक वेदना से ऐंठने लगा, पीड़ा की कोई सीमा नहीं थी, किन्तु दया और करुणा का अपार समुद्र लहरा रहा था।

शाम हो गई। आचार्य धर्मघोष को मुनि धर्मरुचि के नहीं लौटने पर कुछ चिन्ता हुई। उन्होंने शिष्यों से कहा– धर्मरुचि की खोज करो। शिष्य उन्हें खोजने चल पड़े। एक शिष्य जंगल में पहुंचा। उसने वहाँ बड़ा ही भयंकर दृश्य देखा। वह चौंक पड़ा–" अरे यह तो तपस्वी मुनि धर्मरुचि का शव है।" हताश एवं दुःखी मन से वह भिक्षुक गुरु के समीप आया। सारा वृत्तांत आचार्य से कहा। आचार्य ने पूर्व बात प्रकट करते हुए कहा– "धर्मरुचि को किसी ने विषाक्त सब्जी दे दी थी। मैंने ही उससे कहा था– तुम इसे किसी ऐसे स्थान पर डालना, जहां कोई जीव–जन्तु खाकर मर न जाए। लगता है दूसरे प्राणियों पर दया करके उसने सारी सब्जी स्वयं ही खा ली और संसार के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री एवं करुणा का भाव लिए अपने शरीर को त्याग दिया।"

–36, शम्बुदास स्ट्रीट, चेन्नई–1

पति पत्नी का अहं : दरार का कारण

श्री कैलाश जैन

अमर ड्राइंग रूम में अपने दोस्तों के साथ बैठा गपशप कर रहा था। आरती पास ही किचन में उसके दोस्तों के लिए चाय–नाश्ता तैयार कर रही थी कि अचानक बबलू की स्कूल-बस का हार्न सुनाई दिया। आरती ने ड्राइंग रूम में आकर अमर से कहा–''सुनिए, गैस पर चाय रखी हुई है। आप उतारकर छान लीजिएगा। मैं एक मिनट में बबलू को बस तक छोड़कर आती हूँ।''

अमर ने आरती की तरफ खा जाने वाली नजरों से घूरा। वह स्वयं को अपने दोस्तों के सामने अपमानित महसूस कर रहा था। दोस्तों के जाने के बाद अमर ने पूरा घर सिर पर उठा लिया– ''आखिर तुम समझती क्या हो? चाय नाश्ता कोई मेरा काम है? दोस्तों के सामने मेरी इज्जत धूल में मिला दी।''

आरती समझ नहीं पाई कि आखिर उससे क्या भूल हो गई। दरअसल उसने अमर को घर का काम करने को कहकर उसके पुरुष होने के खोखले दम्भ को आहत कर दिया। वस्तुतः हमारी सामाजिक जीवन–शैली में अभी भी घर के सारे कार्यों के लिए पत्नी को जवाबदार माना जाता है। यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी के कार्य में सहयोग करे तो उसे ''जोरू का गुलाम'' जैसे विशेषणों से विभूषित किया जाता है।

तेजी से बदलते समय के साथ जीवन के हर क्षेत्र में स्थापित मूल्यों के अर्थ बदल रहे हैं। पहले महिलाओं के लिए घर की चारदीवारी से बाहर निकलना वर्जित था। घर ही उनके लिए समूचा संसार था। लेकिन बदलती सामाजिक मान्यताओं और आर्थिक दबावों में घर–समाज की परम्परागत परिकल्पना में आधारभूत परिवर्तन हुआ है। स्त्रियां अब घर से बाहर भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति के नए आयाम प्रस्तुत कर रही हैं। शिक्षा राजनीति, उद्योग तथा अन्य आर्थिक क्षेत्रों में नारी की भूमिका उल्लेखनीय बनती जा रही है।

ऐसी स्थितियों में पुरुषों को अपने निहित पूर्वाग्रह त्यागने होंगे। जब पत्नी हर क्षेत्र में पति को सहयोग दे रही है तो घरेलू कामों को हेय दृष्टि से देखकर उन्हें सिर्फ पत्नी द्वारा ही किया जाने योग्य क्यों समझा जाए, इस मुद्दे को अहं या प्रतिष्ठा का प्रश्न क्यों कर बनाया जाए? भारतीय संस्कृति में पति–पत्नी के संबंध को विशेष महत्त्व दिया गया है। एक ओर जहां स्त्री के लिए ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते'' जैसी बात कही गई है, तो दूसरी ओर पति को पत्नी के लिए परमेश्वर के समकक्ष बताया गया है। यदि इन दोनों स्वरूपों के यथार्थ को समझा जाए तो पति-पत्नी के मध्य कहीं अहं अथवा अविश्वास का अवसर ही नहीं आएगा।

आज स्थिति बहुत प्रतिकूल हो चली है।पति और पत्नी के व्यक्तिगत असंतुलित अहम् और विकृत जीवन-मूल्य समूचे दाम्पत्य संबंधों पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। लगता है, दोनों किनारे टूट चुके हैं। वैवाहिक जीवन का माधुर्य, सरसता और सरलता खोखले दम्भ की भेंट चढ़ चुके हैं। समय की सरसता कहीं खो गई

है। पत्नियाँ आज अपने अधिकारों की चेतना से तो सराबोर हैं, किन्तु दाम्पत्य जीवन की सुदृढता के लिए अपने प्राथमिक कर्तव्यों के निर्वहन से कतरा जाना चाहती हैं। इसी प्रकार पति वर्ग पत्नी से अपेक्षाएँ तो बड़ी–बड़ी करता है, किन्तु अपने व्यक्तित्व की प्रस्तुति उस अंदाज में नहीं करता, जो वैवाहिक जीवन में एक सहयोगपूर्ण शृंखला की शुरूआत कर सके।

वस्तुतः इन विसंगतियों की पृष्ठभूमि में असंतुलित अहम् की बड़ी भूमिका है। गृहस्थी की विविध जिम्मेदारियाँ निभाते समय पत्नी के व्यक्तित्व में अपने महत्त्व के प्रति एक गर्व का भाव अक्सर पनपने लगता है। उसे लगता है कि उसके बिना यह घर एक पल भी नहीं चल सकता। पत्नी मानती है कि उसकी जरा सी उदासीनता घर की समूची व्यवस्थाओं को अस्त–व्यस्त कर देगी। अक्सर महिलाएँ अपने घार के प्रति किए गए सामान्य से त्याग को भी प्रचारित करती हैं। "घर को चलाने का श्रेय" लेने के चक्कर में पुरुषों के योगदान को हरदम कम आंकती हैं। ऐसी स्थितियां जाहिर हैं, पुरुष के अहं पर चोट करती हैं, फिर दाम्पत्य जीवन में एक अनचाही कड़वाहट घुलने लगती है। यह स्थिति दोनों पक्षों के लिए ही अप्रिय होती है।

–एडवोकेट,34, बंदा रोड़, भवानीमण्डी (राज.)

आत्म–श्लाघा : एक विष

डॉ. गुलाबसिंह दरड़ा

प्रायः हर समाज एवं संगठन में कुछ लोग ऐसे मिल ही जाते हैं जो बात–बात में अपनी लम्बी–चौड़ी हांकते फिरते हैं। कभी कभी तो वे बेमतलब की इतनी बातें कह जाते हैं कि उसमें सच की रत्ती भी नहीं होती। अपनी शेखी बघारने का आनन्द एवं रस ही कुछ और होता है। यद्यपि समझदार लोग उसकी बातों को ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं, किन्तु वह इसी प्रयास में अपनी प्रशंसा के पुल बाँधता है, कि लोग उसे इज्जत दें, प्रशंसा करें। वह पुल न तो लोहे का होता है, न ही ईंट गारे व सीमेंट का, वह तो हवाई पुल होता है जो मुंह के गुब्बारे जैसा होता है जो जाने कब उड़ जाये।

संसार में ऐसे अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने वालों की कमी नहीं, किन्तु अध्यात्ममार्ग के साधकों के लिये यह प्रवृत्ति बहुत बड़ी छलना है, धोखा है, खतरनाक है। आत्मप्रशंसक प्रायः अन्दर से दियासलाई के खाली डिब्बे की भांति खोखला ही रहता है, जिसकी बाहर की दीवारों पर ज्वलनशील लेप होता है जिसका मतलब सीधा है कि उसकी बातों का विरोध करने पर उसका भड़क जाना आसान होता है। जबकि सच्चा साधक अपनी विशेषताओं व गुणों का अभिमान नहीं करता। सच्चे साधक का लक्ष्य परमात्मस्वरूप की प्राप्ति में निहित होता हे।

– 6 एवरेस्ट कॉलोनी, लाल कोठी, जयपुर

आओ वैराग्य में मन रमायें

श्री नेमीचन्द जैन

पांचों नौबत बाजती होत छत्तीसा राग।
सो महल खाली पड़्या, बोलण लागा काग।।
कबीर वह दिन याद कर पग ऊपर तल शीश।
मृत्यु मण्डल आय के, भूल गयो जगदीश।।
जितने तारे गगन में, उतने शत्रु होय।
जब तक पोते पुण्य हो, बाल न बांका होय।।
यौवन था जब जोर था, देते स्तम्भ मरोड़।
अब बुढ़ापा आ गया, तना सका नहीं तोड़।।
तीरथ चाल्या तीन जणा, कामी कपटी चोर।
गया पाप उतारबा, लाया दस मण और।।
नौ भूल्या चवदह चूक्या, चूक्या छह काया नाम।
गांव ढिंढोरो पीटियो, श्रावक म्हारो नाम।।
जौहरी होकर क्यूं करे, कुंजरा सुं तकरार।
रतन अमोलक बिखरसी, भाजी सांटे गंवार।।
पांच पहर धंधो गयो, तीन पहर तक सोय।
दोय घड़ी प्रभु नाम ज्यों, मोक्ष काहे का होय।।
बकरी खाती पात है, उसकी काढ़े खाल।
जो बकरी को खात है, उसका कौन हवाल।।
हंसा बगुला एक संग, मान सरोवर मांय।
बगुला ढूँढे माछली, हंसा मोती खाय।।
जल्दी जगो प्रभु भजो, हल्का करो व्यायाम।
चोखा सोचो ठंडा नहावो, स्वस्थ रहो सुजान।।
जाना है रहना नहीं, जाना बिस्वा बीस।
तनिक सुहाग रे वास्ते, क्यूं गुंथावे शीश।।
चेतो रे भव प्राणियों, यो संसार असार।
थिरता कुछ दिखे नहीं, धन यौवन परिवार।।
रण सहस्र योद्धा लड़े, जीते युद्ध हजार।
पर जो जीते स्वयं को, वह उत्तम सरदार।।
समय बड़ा अनमोल है, समय न हाट बिकाय।
तीन लोक सम्पदा दिया, बीता समय न पाय।।(क्रमशः)

—प्रधानाचार्य, राजकीय सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, अरटिया कलां, जोधपुर

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

उत्तराध्ययन सूत्र एवं आचारांगसूत्र (सार संक्षेप)- *श्रीचन्द मोहनोत,* ***प्रकाशक***-*श्रीचन्द मोहनोत, नं.5, चार्ल्स कैम्पबेल रोड़, काक्स टाउन, बैंगलोर-560005,* ***पृष्ठ*** *186, जनवरी 2000* ***मूल्य***- *उल्लेख नहीं।*

लेखक ने दो महत्त्वपूर्ण जैनागमों आचारांग एवं उत्तराध्ययनसूत्र की विषयवस्तु का सार अनूठे ढंग से इस पुस्तक में समाविष्ट किया है। पहले उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययनों का सार 101 पृष्ठों में दिया है, तदनन्तर आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कन्ध के नौ अध्ययनों का सार प्रस्तुत किया है। सार-लेखन में लेखक की अपनी मौलिक दृष्टि झलकती है। जहाँ आवश्यक है अन्य आगमों एवं स्थलों के आधार पर विवरण, लक्षण आदि भी दिए गए हैं। सार इस तरह से लिखा गया है कि केवल उसे पढ़कर ही पाठक इन आगमों की विषय वस्तु के प्रतिपाद्य को काफी हद तक जान सकता है एवं इस पुस्तक की शैली की मौलिकता का भी अनुभव कर सकता है। लेखक ने कई स्थलों पर क्लिष्ट एवं गम्भीर चर्चा को छोड़ देना ही उपयुक्त समझा है।

जयणा मंगलम्- ***प्रकाशक***-*हर्षित-मुकुन्दभाई, हेमेश-दीपकभाई, निधि-दीपकभाई,* ***प्राप्ति स्थान***- *पानाचन्द नानुभाई जवेरी, एटलस अपार्टमेण्ट, ए विंग, 10वाँ माला, नारायण दाभोलकर रोड़, श्रीपालनगर के बाजू में, मुम्बई- 400001*

गुजराती भाषा में लिखित यह पुस्तक जीव-यतना के संबंध में बहुत उपयोगी सूचनाओं से युक्त है। घर में चींटी, कसारी, चूहा, तिलचट्टा, मच्छर आदि अनेक जीव होते हैं, इन विभिन्नि प्रकार के जीवों की रक्षा करते हुए गृह कार्यो को कैसे निपटाया जाय, इसकी जानकारी इस पुस्तक में संक्षेप में उपलब्ध है। जीवोत्पत्ति के कारणों से बचने की भी हिदायत दी गई है। इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता है, जिससे यतना-विषयक जानकारी व्यापक स्तर पर हो सके।

रतन भजन संग्रह (भाग 1 एवं 2)- ***संकलन***- *रतनलाल जैन,* ***प्राप्ति स्थान***- *जैन क्लॉथ मैचिंग सेन्टर 'काका', कटरा नदबई, जिला- भरतपुर (राज.),* ***पृष्ठ***- *32 एवं 40, सन् 2000 एवं 2001.* ***मूल्य***- *नित्य पठन-पाठन*

दोनों भागों में अच्छे भजन, प्रार्थनाएं, दोहे, वचनामृत आदि का उपयोगी संकल है। सामायिक में नित्य पठन एवं चिन्तन मनन की सामग्री का संकलन है। स्वाध्यायी श्री ज्ञानचन्द जी जैन के पिता श्री रतनलाल जी जैन के इन संकलनों का सम्पादन उनके पौत्र श्री नरेशचन्द जी जैन ने किया है।

समाज-दर्शन

धुलिया में व्यापक समाज सुधार एवं शुद्ध धर्माराधन का शंखनाद

धुलिया श्रीसंघ के परम पुण्योदय से परमाराध्य आचार्यप्रवर श्री 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 तथा विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 के वर्षावास का पावन प्रसंग उपस्थित होने के फलस्वरूप यहां जिनशासन की महती प्रभावना हुई है। श्री संघ को महान धर्मलाभ प्राप्त होने के साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों के मूलोच्छेदन का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

आचार्यश्री द्वारा हृदयग्राही, मर्मस्पर्शी, प्रभावी प्रवचनों के साथ की गई प्रबल प्रेरणा के फलस्वरूप धार्मिक उन्नयन, नैतिक उत्थान, शैक्षिक जागृति एवं सामाजिक सुधार के क्षेत्र में व्यापक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है, जिसकी मौलिक परिलब्धियाँ समाज की कायापलट करने वाली हैं।

तपस्या का ठाट लगा है। स्थानीय एवं दर्शनार्थी भाई-बहनों में 1 उपवास से लगाकर 31उपवास तक अनेक प्रकार की तपस्याएँ हुई हैं। तपस्वियों में आबालवृद्ध हैं, संत सतियां भी हैं। प्रतिदिन 1 घंटे से लगाकर 24 घंटे तक संवर के नियम लिये जा रहे हैं और व्यवस्थित पालन हो रहा है। धुलिया में 11 सामायिक कर लेने से दया हो जाती है, ऐसी परम्परा थी। कई वर्षों के बाद 24 घंटे स्थानक में रहकर श्रावकों ने दया की और उसका महत्त्व समझा। संवत्सरी के दिन गुरुदेव की प्रेरणा से दुकानें बंद रही जबकि वर्षों से संवत्सरी के दिन भी व्यवसाय चालू रहते थे।

संवत्सरी के प्रवचन के पश्चात् यहाँ श्रावक-श्राविकाओं का जुलूस निकालने की प्रथा थी, जिसमें संत सतियों को भी शामिल कर लिया जाता था। आचार्य श्री ने फरमाया 'संवत्सरी साधना का सर्वोच्च दिवस है। हरपल, हरक्षण साधना में लगना चाहिये। जुलूस में समय की बरबादी, ईर्यापथ में हिंसा और कषायों की वृद्धि, यही निष्पत्ति होगी।' फलस्वरूप पहली बार धुलिया में जुलूस बंद हुआ।

महाराष्ट्र के गांव-गांव में धर्मस्थान में सामायिक की सतत और प्रभावी प्रेरणा के परिणाम स्वरूप अनेक ग्राम–नगरों में धर्मस्थान में नियमित सामायिक साधना का कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है। महाराष्ट्र में हजारों बालक-बालिकाओं और युवक-युवतियों ने पाठ्यक्रमानुसार ज्ञानाभ्यास का क्रम बनाया है, शिक्षण बोर्ड के माध्यम से निरन्तर परीक्षार्थियों की वृद्धि होना इसका पुष्ट प्रमाण है।

महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ, जलगांव और धुलिया श्री संघ के संयुक्त प्रयासों से आचार्य श्री के नेश्राय में एक पंच दिवसीय 'महिला स्वाध्यायी शिविर' आयोजित किया गया, जिसमें 200 महिलायें उपस्थित रहीं। कच्चे घड़े को चाहे जैसा आकार दे सकते हैं। इस दृष्टि से 'बाल संस्कार' शिविरों का आयोजन हुआ। अब तक 3 शिविर सम्पन्न हो चुके हैं जिनमें औसतन 350 बालक–बालिकाओं ने भाग लिया। चातुर्मास काल में हर 15 दिन में एक और सेखेकाल हर माह में एक शिविर लगाने

का क्रम चालु हो गया है।

कुछ पाठशालाएं किसी तरह चल रही थीं। कुछ बंद पड़ी थी। वे अब पुनर्जीवित और नियमित हुई हैं। आज धुलिया में अलग अलग विभागों/क्षेत्रों में कुल 13 पाठशालाएं सुचारू रूप से चल रही हैं। पर्युषण में आचार्य श्री के 'समाज सुधार' पर प्रवचन हुए। स्थानकवासी, देरावासी, तेरापंथ और दिगम्बर ऐसे सकल जैन संघ ने प्रेरणा पाकर 2.9.2001 को जैन भवन में एक मीटिंग की। हम जैन हैं, यह स्मरण दिलाकर निम्नलिखित प्रस्ताव बगैर किसी विरोध के पारित किये गए–

1. किसी भी कारण भ्रूण हत्या न हो।
2. विवाहादि कार्यो में–
   (अ) रोशनी मर्यादित रहे (ब) आतिशबाजी (पटाखे आदि) न करें।
   (स) मद्यपान, धूम्रपान बंद हो। अजैन भाइयों के लिए भी प्रबन्ध न करें।
   (द) जुआ आदि न खेलें। (क) मंडप में फूलों की सजावट और वितरण न हो। वर–वधू की माला तक ही फूलों का उपयोग हो। (ख) प्रोसेशन में या सड़कों पर कोई भी न नाचे। (ग) गीत, महिला संध्या, पीठी, चाक मुंदणा आदि प्रसंगों पर बर्तन या अन्य भेंट या वस्तु न बांटे। खोपरा, बाटी और मांगलिक (गुड़) बांट सकते हैं।
3. सामूहिक भोज में
   (अ) जमीकंद का उपयोग न करें। (ब) जूठन न छोडें।
   (स) पानी सहित 15 आयटम से ज्यादा आयटम न रखें।
4. मृत्यु भोज बंद हो।
5. विवाह, कुंकू, पगड़ी आदि सभी कार्यक्रम दिये हुए समय पर ही सम्पन्न हो, ताकि उपस्थित लोगों का समय बरबाद न हो।
6. जिन होटलों में शराब और मांसाहार का उपयोग होता है, ऐसी होटलों में कोई भी सामूहिक कार्य न हो।

इस तरह चातुर्मास में आचार्यश्री, उपाध्यायप्रवर और सभी संत–सतियों की प्रेरणा से बहुत धर्म जागरण और समाज सुधार हुआ। धुलिया संघ अपना अहोभाग्य मानता है।– **कांतिलाल चौधरी, उपाध्यक्ष–श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ, धुलिया**

पीपाड़, जोधपुर आदि स्थानों पर भी धर्माराधन का ठाट

आचार्यप्रवर के ही नहीं रत्नवंशीय संत–सतीवृन्द के चातुर्मास एक से एक बढ़कर दीप्तिमान हो रहे हैं। तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा. मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 का पीपाड़ चातुर्मास ज्ञानाराधन, धर्माराधन, तपाराधन की दृष्टि से ही नहीं जैन–जैनेतर जन समुदाय को एकता–एकरूपता से बांधने की दृष्टि से भी सफलता की ओर अग्रसर है। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के प्रवचन सारगर्भित तो हैं ही जनमानस को साधना से जोड़ने वाले हैं। स्थानकवासी, मंदिरमार्गी, तेरापंथी ही नहीं माहेश्वरी, स्वर्णकार, माली, दर्जी आदि अनेक बिरादरी के लोग नियत समय पर प्रवचन श्रवण को प्राथमिकता देते हैं।

सात-आठ वर्ष के कुछ बालक प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर बारी–बारी से सायं शुद्ध प्रतिक्रमण करवाते हैं।

साध्वी प्रमुखा से लेकर सबसे छोटे महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. के चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के सुन्दर रूप के साथ व्यवस्थित गतिमान हो रहे हैं।

जोधपुर के पावटा स्थानक में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तथा घोड़ों का चौक स्थानक में सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म. सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधन की निरन्तरता बनी हुयी है। अष्टमी, चतुर्दशी को दया,उपवास,पौषध,संवर आदि उत्साहपूर्वक होते हैं।

किशनगढ़ में शांतस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 26 सितम्बर को श्रीमती पुष्पा जी बोथरा धर्मपत्नी श्री रिखबचन्द जी बोथरा ने 51 दिवसीय तप का प्रत्याख्यान किया है। इस उपलक्ष्य में अनेक भाई बहनों ने 51 दिन के आयम्बिल तप, रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग, मौनव्रत, सामायिक आदि के नियम लिये। जीतमल जी ढाबरिया की धर्मपत्नी ने मासखमण तप से 51 दिवसीय तपस्विनी का स्वागत किया। महासती श्री इन्दुबाला जी, महासती श्री सुमतिप्रभा जी, महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. एकाशन से सिद्धि तप कर रहे हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गोटन में पर्युषण एवं उसके पूर्व अच्छा धर्माराधन हुआ है। मासखमण, शीलव्रत एवं छोटी बड़ी अनेक तपस्याएँ हुई है। सम्वत्सरी के दिन एक साथ 15 अठाई तप के प्रत्याख्यान हुए। जैनों के साथ अजैनों ने भी तपस्या की होड़ लगी हुई है।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास में कजगांव में तेले की तपस्या की लड़ी एवं आयम्बिल तप चातुर्मास के प्रारम्भ से ही निरन्तर चल रहे हैं। महासती जी के पदार्पण से श्रावक–श्राविकाओं में अपार हर्ष की लहर है एवं धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। पर्युषण के आठ दिनों में नमस्कार मंत्र का अखंड जाप चला। यहां 5 मासखमण तप उपवास के एवं 5 मासखमण तप एकाशन के सम्पन्न हुए हैं। छोटी बड़ी अनेक तपस्याएँ हुई है एवं हो रही हैं। ज्ञानाभ्यास एवं धार्मिक परीक्षा के आयोजन भी होते रहते हैं। दीपावली अवकाश में बाल संस्कार शिविर आयोजित होने की संभावना है।

जयपुर में विराजित व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में चातुर्मास काल के तीन महीनों में उल्लेखनीय धर्मध्यान हुआ है।

सैंधवा में महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तपाराधन, ज्ञानाराधन एवं संवर साधना का वातावरण बना हुआ है। नवदीक्षिता महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. के मासखमण तप के पूर के समय विशाल स्तर

पर तप, त्याग एवं व्रत प्रत्याख्यान के नियम हुए हैं, जिनमें एक ने 31 तेले, दूसरे ने 31 बेले, दो व्यक्तियों ने 31 पौषध, 7 व्यक्तियों ने 31 उपवास, 7 व्यक्तियों ने 31 आयम्बिल तप आदि विविध तप किए हैं।

धनोप में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में तथा मसूदा में महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान एवं तप-त्याग गतिशील है।– **अरुण मेहता, महामंत्री**

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर पीपाड़ में 13 अक्टूबर से

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रतिवर्ष धार्मिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भी पर्युषण में बाहर गांव सेवा देने पधारने वाले स्वाध्यायियों का स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म. सा. के आज्ञानुवर्ती तपस्वी श्री बसन्तमुनि जी म.सा., आशुकवि मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में दिनांक 13.10.2001 से 17.10.2001 तक पीपाड़ शहर में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अहिंसा एवं विश्वमैत्री की आवश्यकता

जैन महासभा दिल्ली के तत्त्वावधान में 'विश्वमैत्री एवं क्षमापना' दिवस का राष्ट्रीय समारोह वीरनगर, दिल्ली में आयोजित किया गया। जैनाचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन देश के पूर्व न्यायाधीश ए.आर. अहमदी ने किया। आचार्य डॉ. शिवमुनि जी ने विश्व में बढ़ती असहिष्णुता और आतंकवाद पर चोट करते हुए कहा कि समस्याओं का समाधान बन्दूक की गोली से नहीं प्यार की बोली से होगा। उन्होंने सभी अहिंसक संगठनों से अपील की कि वे एक–दूसरे से प्रभावी समन्वय कर हिंसा, तनाव, घृणा, युद्ध, भूखमरी, अशिक्षा और भेदभाव के विरुद्ध जनजागरण करें। पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री ए.आर. अहमदी ने कहा कि आज के इस दौर में जहाँ हिंसा, घृणा, द्वेष एवं आतंकवाद ने मानव की संवेदनशीलता पर प्रहार किया है, वहाँ महावीर के अनेकान्त, अपरिग्रह तथा अहिंसा के दर्शन की प्रासंगिकता अधिक बढ़ गई है। मुख्य भाषण में सांसद डॉ. लक्ष्मीमल जी सिंघवी ने कहा कि बिना मैत्री के क्षमा नहीं हो सकती और बिना क्षमा के अभय नहीं मिलता। बिना अभय के शान्ति कठिन है। इस अवसर पर जैन महासभा, दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कतिपय प्रस्ताव प्रस्तुत किए, जो सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए। प्रस्तावों में प्रमुख हैं–

1. अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा सम्मेलन का दिल्ली में आयोजन।

2. 'अहिंसा बीमा फंड' की स्थापना। आणविक शस्त्रों के निर्माण और अनुसंधान पर खर्च की जा रही राशि का 2 प्रतिशत भाग इस 'अहिंसा बीमा फंड' में जमा कराया जाए, ताकि हिंसा और घृणा के विकल्प में मैत्री और बन्धुत्व के मूल्यों को

विकसित किया जा सके।

3. मांस के आयात और निर्यात पर तुरन्त पाबन्दी लगायी जाए।

4. समाज के आन्तरिक विवादों के समाधान हेतु जैनाचार्यों, सेवानिवृत्त जैन न्यायाधीशों तथा प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों और सक्रिय कार्यकर्ताओं का एक सद्भावना बोर्ड बनाया जाए।

5. 'अहिंसा-द्वार' एवं 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी' के कार्य को त्वरित करने पर बल दिया गया। – **प्रो. रतन जैन**

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव कार्यक्रम

1. भगवान महावीर 2600वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव महासमिति के अध्यक्ष श्री दीपचन्द जी गार्डी एवं कार्याध्यक्ष श्रीमती इन्दु जी जैन के नेतृत्व में महासमिति के एक प्रतिनिधिमण्डल ने माननीय प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी से सोमवार, 10 सितम्बर 2001 को प्रातः 11 बजे भेंट की। प्रधानमंत्री जी ने भेंट वार्ता के दौरान महोत्सव वर्ष के प्रस्तावित कार्यक्रमों की समीक्षा की और निर्धारित कार्यक्रमों को तेजी से क्रियान्वित करने पर जोर दिया।

2. प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय समिति के निर्णयों के अनुसार भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव की आयोजना के लिए 100 करोड़ रुपये की राशि की बजट व्यवस्था संस्कृति मंत्रालय को प्राप्त हो गई है।

3. भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव की स्मृति में 5 रुपये के सिक्के तैयार हो गये हैं। अक्टूबर नवम्बर में लोकार्पण का एक बड़ा आयोजन करने के संबंध में संस्कृति मंत्रालय से सम्पर्क चल रहा है।

4. नेपाल सरकार ने भी 15 ग्राम चांदी का सिक्का निकालने का निश्चय किया है। इस पर भगवान महावीर का चित्र अंकित होगा। इस सिक्के में 92 प्रतिशत चांदी होगी और इसका मूल्य 160 रुपये रखा गया है।

5. पंजाब सरकार 10 ग्राम सोने के सिक्के तथा 50 ग्राम के चांदी के सिक्के निकालने जा रही है। सोने के सिक्के 24 कैरेट गोल्ड के होंगे। गोल्ड स्विट्जरलैण्ड से आयातित होगा।–**एल.एल. आच्छा, महामंत्री**

भ्रूण हत्या के खिलाफ प्रधानमन्त्री को ज्ञापन

भीलवाड़ा–श्री सिद्धार्थ युवक मण्डल शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा की ओर से देश के प्रधानमन्त्री जी को भ्रूण हत्या पर पाबन्दी लगाने के लिए पांच हजार हस्ताक्षरों का ज्ञापन दिया गया है। संवत्सरी पर्व पर महासती श्री यशकंवर जी म.सा. की धर्मसभा में हस्ताक्षर अभियान चलाकर करीब पांच हजार हस्ताक्षर कराये गये और प्रधानमन्त्री जी से भ्रूणहत्या पर सख्ती से पाबन्दी लगाने की मांग की गई। इस अवसर पर एक परिपत्र जारी कर आमजनों से भ्रूणहत्या जैसे पाप से दूर रहने की अपील भी की गई। – **राजेन्द्र सिंघवी**

मांस निर्यात एवं यान्त्रिक कत्लखाने बन्द कराने हेतु प्रयास

हैदराबाद– केन्द्रीय शहरी विकास राज्यमन्त्री श्री बंडारु दतात्रेय के नेतृत्व में यान्त्रिक कत्लखाना विरोध समिति आन्ध्रपदेश का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मण्डल राजधानी नई दिल्ली में प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी से मिला तथा मांस निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने और यान्त्रिक कत्लखानों को बन्द करवाने हेतु ज्ञापन सौंपा। प्रधानमन्त्री से मिलने वाले प्रतिनिधि मण्डल में भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष श्री बंगारू लक्ष्मण, मेदक क्षेत्र के सांसद श्री ए. नरेन्द्र आदि नेता सम्मिलित थे। – **जसराज श्रीश्रीमाल, संयोजक–यान्त्रिक कत्लखाना विरोध समिति**

युवा दिशा बोध शिविर

गंगाशहर–भीनासर– युवाशक्ति को आध्यात्मिक एवं रचनात्मक दिशा देने हेतु तथा उनकी ऊर्जा को स्वाध्याय–संस्कार-सेवा में लगाने हेतु अखिल भारतीय जैन समता युवा संघ रतलाम एवं साधुमार्गी जैन श्रावक संघ गंगाशहर–भीनासर द्वारा आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के सान्निध्य में श्री महेश जी नाहटा के संचालन में अगस्त माह में त्रिदिवसीय युवा दिशाबोध शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 218 युवाओं ने भाग लेकर संघ की रीति नीति एवं धर्म दर्शन की जानकारी प्राप्त की। – **महेश नाहटा, नगरी**

पत्राचार जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम २००२

भारत के किसी भी विश्वविद्यालय की स्नातक (बी.ए. आदि) स्नातकोत्तर (एम.ए. आदि) परीक्षा उत्तीर्ण कोई भी अध्यनार्थी इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। पाठ्यक्रम का नवाँ सत्र। जनवरी 2002 से 31 दिसम्बर 2002 तक होगा। पाठ्यक्रम का शुल्क 150 रुपये जैन विद्या संस्थान के नाम ड्राफ्ट द्वारा 30.11.2001 तक भेजना होगा। आवेदन पत्र उपलब्ध है। पाठ्यक्रम की परीक्षा 16 व 17 दिसम्बर 2002 को जयपुर एवं श्री महावीर जी में होगी। परीक्षा में 2 प्रश्नपत्र होंगे। विस्तृत विवरण हेतु सम्पर्क करें– **डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर– 302004, दूरभाष 382847 (ऑ.) 376415 (नि.)**

'परम पुरुषार्थ अहिंसा' ग्रन्थ का प्रकाशन

जयपुर– भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव राजस्थान राज्य दिगम्बर जैन समिति ने अहिंसा वर्ष में 'परम पुरुषार्थ अहिंसा' नाम से ग्रन्थ प्रकाशन की योजना बनायी है। ग्रन्थ का उद्देश्य जैनदृष्टि से अहिंसा और उसकी व्यापकता तथा दर्शन को प्रस्तुत करना है। अहिंसा के संबंध में तुलनात्मक मीमांसा अथवा अन्य मान्यताओं पर चर्चा की अपेक्षा 'भगवान महावीर की देशना में अहिंसा' पर जैनाचार्यों एवं मनीषियों के व्याख्यात्मक लेखों का विशेष रूप से समावेश किया जाएगा। कृतियाँ आमन्त्रित हैं।–**प्रवीणचन्द्र छाबड़ा, सम्पादक, 2, न्यू कॉलोनी, जयपुर(राज.)**

२८ अक्टूबर को दिल्ली में जन्म जयन्ती

दिल्ली– शास्त्रीनगर स्थित स्थानक में विराजित पं. श्री रमेशमुनि जी शास्त्री, उपप्रवर्तक डॉ. राजेन्द्र मुनि जी के सान्निध्य में चातुर्मास तप–त्याग पूर्वक चल रहा है। 28 अक्टूबर 2001 को उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी का 92वाँ जन्म दिवस बड़े पैमाने पर मनाया जायेगा। इसमें 2600 सामूहिक सामायिकों के आयोजन के साथ रक्तदान, वस्त्रदान, अन्नदान आदि का भी आयोजन होगा। इस दिन प्रवचन सभा में आचार्य श्री शिवमुनि जी सहित लगभग 100 साधु–साध्वी उपस्थित रहेगें।

–धनपाल जैन, महामंत्री

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई ने लिया दर्शनार्थ संघ का वास्तविक आनन्द

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के अन्तर्गत धुलिया विराजित आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. व संत–सती मण्डल के दर्शनार्थ संघ का कार्यक्रम रखा गया। विशेष उपलब्धि यह रही कि ट्रेन में उपस्थित सभी सदस्यों ने नवकारसी–पोरसी, सामूहिक प्रार्थना आदि नियम रखें एवं अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के अन्तर्गत होने वाली परीक्षा की तैयारी की। धार्मिक, प्रश्नमंच, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम भी ट्रेन में रखे गये। धुलिया में आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के जन्म जयंती व आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की पुण्यतिथि के अवसर पर युवक परिषद् के सभी सदस्यों ने दयाव्रत की आराधना की व उपवास, एकासना आदि प्रत्याख्यान भी किये। सभी सदस्यों ने अपनी अपनी भावनानुसार हर महीने 30,20,15 आदि सामायिक के नियम आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से लिये। इस तरह श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई ने दर्शनार्थ संघ का वास्तविक आनन्द लिया।**–आर. नरेन्द्र कांकरिया, सचिव**

ज्ञानोदय योजना

श्री स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस राजस्थान प्रांत ने समाज में ज्ञानवृद्धि के लिए "ज्ञानोदय योजना" का प्रारम्भ किया है, जिसके अन्तर्गत ज्ञान पिपासु संत सतियों के अध्यापन के लिए भारत के श्रेष्ठ पंडितों, विद्वानों को नियुक्त किया जायेगा।

हमारे अध्यापक इस वर्ष निम्न स्थानों पर अपनी सेवाएं दे रहे है–1. भटिण्डा (पंजाब) विराजित महासती सुशील कंवर जी आदि ठाणा–7की सेवा में। 2. बम्बीहा (पंजाब) विराजित मुनि सुशील कुमार जी म.सा. व मुनि निर्मल जी म.सा. की सेवा में। 3. नोखा चांदावता विराजित महासती श्री उमराव कंवर जी म.सा. की सेवा में।

स्थानकवासी सम्प्रदाय के किसी भी संत–सती को ज्ञानाभ्यास की अभिलाषा हो तो सम्पर्क करावें। जैन दर्शन, संस्कृत, हिन्दी एवं प्राकृत के विद्वानों की व्यवस्था की जा रही है। अंशकालीन सेवाएं अहमदाबाद एवं दिल्ली में भी उपलब्ध है। कृपया निम्न स्थानों पर सम्पर्क करें– **1. उमरावमल चोरड़िया, चोरड़िया भवन, सौंथलीवालों का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर, फोन नं. 563704**

2. जतनराज मेहता 'साहित्य रत्न' पो. मेड़ता सिटी, जिला- नागौर-341510 फोन नं. 01590-20135, 20735

बधाई/चुनाव

भवानीमण्डी– 15 अगस्त को आभांश जैन पुत्र श्री अभयकुमार जी श्रीमाल को आठवीं बोर्ड परीक्षा में छठा स्थान प्राप्त करने पर जिला स्तर पर उप जिला कलक्टर द्वारा प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया गया। आभांश ने 94.83 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।– **कालुलाल सालेचा**

कोयम्बटूर– श्री कोयम्बटूर स्थानकवासी जैन संघ की 37वीं वार्षिक साधारण सभा में सन् 2001-2003 के लिए श्री मोहनलाल जी बरड़िया को अध्यक्ष, श्री मदनलाल जी छाजेड़ को उपाध्यक्ष, श्री जयन्तीलाल जी मालू को मंत्री, श्री शांतिलाल जी सालेचा को सहमन्त्री एवं श्री पुखराज जी श्रीश्रीमाल को कोषाध्यक्ष चुना गया है।

सुमेरगंजमण्डी–श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ के सान्निध्य में प्रथम बार 36 सदस्यीय 'श्री जैन नवयुवक मण्डल, सुमेरगंजमण्डी' का गठन सादा समारोह में सानंद सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री ऋषभ जी जैन को अध्यक्ष, श्री मुकेश जी जैन को उपाध्यक्ष, श्री राजेन्द्र जी जैन को मंत्री श्री त्रिलोकचन्द जी जैन को कोषाध्यक्ष एवं श्री मुकेश कुमार जी जैन को संगठन मंत्री चुना गया।

श्रद्धांजलि

चेन्नई–श्रद्धानिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री अनराज जी कांकरिया का 29 अगस्त 2001 को 59 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आपका जन्म मरुधरा की

पावनभूमि भोपालगढ़ में 25 अगस्त 1942 को हुआ था। आप आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के परम भक्त थे। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अटूट श्रद्धाभक्ति थी। आप धर्मनिष्ठ, दृढनिश्चयी एवं उदारहृदयी श्रावक थे। सन्त-सतियों की सेवा, दर्शन-लाभ हेतु तत्पर रहते थे। आपके अग्रज भ्राता वीरपिता श्री रिखबचन्द जी कांकरिया की दो सुपुत्रियाँ सुश्री सरला जी एवं सुश्री विमला जी सम्प्रति रत्नवंश में महासती श्री सरलेशप्रभा जी एवं महासती श्री विनयप्रभा जी के रूप में जिनशासन की गरिमा में सतत संलग्न हैं। अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में आप सक्रिय थे। आप श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में वर्ष 1993 से 1996 तक अध्यक्ष रहे। अमर बकरा शाला में अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। श्री भोपालगढ़ जैन एसोसिएशन चेन्नई, श्री जैन संघ, कालादी पेट आदि संस्थाओं के भी आप अध्यक्ष थे। गुजरात भूकम्प के प्राकृतिक संकट के क्षणों में आपने पान ब्रॉकर एसोसिएशन के माध्यम से गांधी धाम, गुजरात की दो स्कूलों के निर्माण हेतु

सहयोग प्रदान किया। नेत्र चिकित्सा शिविर, जलगृह, यात्री–शेड आदि कार्यों हेतु आपने सक्रिय सहयोग दिया। पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए आपका संघ एवं समाज के प्रति पूर्ण समर्पित भाव था। आप अपने पीछे पत्नी, तीन पुत्रों, तीन पुत्रियों, पौत्र–पौत्रियों सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जयपुर– अनन्य गुरुभक्त, सेवाभावी सुश्रावक श्री दलपतचन्द जी सिंघवी का 2 सितम्बर 2001 को 74 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप कुछ वर्षों से रोग–पीड़ित थे। आप धर्मनिष्ठ एवं व्रती श्रावक थे। सामायिक, स्वाध्याय एवं व्रत–नियम में आपकी अनन्य रुचि थी। वे उदारता, विनम्रता, सहिष्णुता, त्याग आदि गुणों से सम्पन्न थे। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं उनके पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत–सती वृन्द के प्रति उनकी अनन्य आस्था व अगाध भक्ति थी। संत समागम और सत्संग सेवा की आप में प्रबल भावना थी। आप अपने पीछे पत्नी, पुत्र श्री नरेन्द्र सहायक अभियन्ता, पुत्री श्रीमती बीना सुशील भंडारी एवं प्रतिभावान पौत्री प्राची, पौत्र प्रियंक को छोड़ गये हैं।

दिल्ली– श्रीमती निर्मला देवी जी गांधी धर्मपत्नी श्री कपूरचन्द जी गांधी का 27 मई 2001 को स्वर्गवास हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभाव की धर्मनिष्ठ, विनम्र, सेवाभावी एवं उदारहृदयी श्राविका थी। आप प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय करती थी तथा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व की धनी थी। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त–सतीवृन्द की आस्थावान श्राविका थी।

भीलवाड़ा– सुश्रावक श्री सम्पतराज जी बुरड़ का 19 अगस्त 2001 को लगभग 60 वर्ष की उम्र में अहमदाबाद में स्वर्गवास हो गया। आपदृढधर्मी, प्रियधर्मी, सरलमना एवं निर्भीक श्रावक थे। आप पूर्व में श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के अध्यक्ष रहे। संघ के प्रत्येक कार्य में आप तन, मन एवं धन से पूर्ण सहयोग देते थे। सभी सन्त–सतियों के प्रति आपकी सेवा–भावना रहती थी। आपका जीवन मधुर,प्रामाणिक एवं नैतिक था। आप अभी समता युवा संघ के संरक्षक तथा वर्द्धमान जैन श्रावक संघ, भोपालगंज (भीलवाड़ा) के कार्यकारिणी सदस्य थे। आप अपने पीछे पत्नी श्रीमती मदनदेवी जी बुरड़, दो भाई एवं चार पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं। **–रतनलाल बडोला, भीलवाड़ा**

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 440 स्वाध्यायियों द्वारा 178 क्षेत्रों में पर्युषण-पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 57 वर्षों से, जैन सत–सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के वर्तमान में लगभग 830 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेंट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, लेक्चरर, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएं संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल. एल.बी., पी–एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से भी अलंकृत हैं।

इस वर्ष 15 अगस्त से 22 अगस्त 2001 तक पर्युषण पर्व के अवसर पर हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान में मेवाड़–मारवाड़, पोरवाल–पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे–बड़े, दूर व निकट के 178 क्षेत्रों में 440 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

सभी क्षेत्रों में पर्युषण पर्व के अष्टदिवसों में स्वाध्यायियों द्वारा सामायिक, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, अंतगडसूत्र, वाचन–विश्लेषण, सारगर्भित व्याख्यान, कल्पसूत्र वाचन, चौपाई, विविध विषयो पर प्रश्नमंच, नवकार मंत्र के अखण्ड जाप, अन्त्याक्षरी, संस्कार निर्माण शिविर, अध्ययन–अध्यापन, चौबीस तीर्थंकर पहेली प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, सामायिक प्रतियोगिता आदि अनेक प्रतियोगिताएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न करवाये गये। सभी स्थानों पर युवा एवं भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित करने हेतु धार्मिक पाठशालाएं प्रारम्भ करने, व्यसन रहित जीवन जीने तथा सामूहिक सामायिक स्वाध्याय करने की प्रबल प्रेरणा देने के साथ नये स्वाध्यायी बनाये गये। सौन्दर्य प्रसाधन, चिकित्सा, खान–पान, मनोरंजन एवं धार्मिक अन्धविश्वास आदि विविध क्षेत्रों में होने वाली हिंसा की जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ हिंसक वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भी प्रेरणा की गई। अनेक स्थानों पर अजैन पुरुष एवं महिलाओं ने भी संवत्सरी के दिन उपवास एवं बेले, तेले आदि तप किये। स्वाध्यायियों से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार समस्त क्षेत्रों में हुए धर्मध्यान एवं तप त्याग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

01. सामायिक	247511	11. चोला	24
02. संवर	3196	12. पचोला	31
03. दया	2904	13. छः	7
04. एकाशन	8312	14. सात	5

05. आयम्बिल	454	15. अठाई	57
06. उपवास	10261	16. नौ	18
07. पौषध	2187	17. ग्यारह	7
08. अष्टप्रहर पौषध	956	18. मासखमण	1
09. बेला	484	19. नीवीं	4
10. तेला	512	20. धर्मचक्र	1
		21. पचरंगी	5

महाराष्ट्र क्षेत्र

क्र.सं.	गांव का नाम	स्वाध्यायी का नाम
01.	कोपरगांव	1. श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव
		2. श्री निलेश जी पगारिया, जलगांव
		3. सुश्री दिपाली जी दर्डा, चिंचाला
		4. सुश्री नम्रता जी रूणवाल, वरणगांव
02.	पिंपलनेर	1. श्री दीपचन्द जी संचेती, धुलिया
		2. श्री ललित जी चोरड़िया, शिरपुर
03.	फत्तेपुर	1. श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा, ब्यावर
		2. श्री प्रदीप जी धारीवाल, पाली
		3. सुश्री कविता जी ओस्तवाल, चालीसगांव
		4. सुश्री जयश्री जी बाफना, चालीस गांव
04.	भण्डारा	1. सौ. विजया जी मल्हारा, जलगांव
		2. सौ. पुष्पलता जी बनवट, जलगांव
		3. सुश्री भारती जी चोरड़िया, महिंदले
05.	सौंदाणा	1. श्री मनोज जी संचेती, जलगांव
		2. श्री त्रिलोक जी जैन, जलगांव
		3. सुश्री सोनाली जी दर्डा, चिंचाला
		4. सुश्री स्वीटी जी कोठारी, बोदवड़
06.	शिरूड़	1. सौ. ललिता जी कटारिया, जलगांव
		2. सौ. तारा जी जैन, जलगांव
		3. सौ. लता जी बोथरा, जलगांव
07.	खेतीया	1. सौ. रसीला जी बरड़िया, जलगांव
		2. सौ. सरला जी पगारिया, जलगांव
		3. सौ. शीतल जी जैन, जलगांव
08.	पहुरदाभा	1. श्री किशोर जी छाजेड़, हैदराबाद
		2. श्री श्रीपालजी देशलहरा, सिकन्द्राबाद

09.	लोहारा	1. श्री शांतीलाल जी चौपड़ा, जोधपुर 2. सुश्री प्रीती जी चोरड़िया, पारोला 3. सुश्री वर्षा जी बोरा, चालीसगांव
10.	केलसी	1. श्री हीरालाल जी मण्डलेचा, फत्तेपुर 2. श्री नीतिन जी हुण्डीवाल, जलगांव
11.	आलेगांव	1. श्री माणकचन्द जी गादिया, चालीसगांव 2. सौ. प्रमिला जी गादिया, चालीसगांव 3. सौ. सुधा जी आंचलिया, चालीसगांव
12.	नासिक(सिड़को)	1. श्री दीपचन्द जी बोथरा, पाचोरा 2. सुश्री भारती जी डाकलिया, पाचोरा 3. सुश्री शोभा जी छाजेड़, पाचोरा
13.	मुकटी	1. सौ. कंचन जी चौपड़ा, जलगांव 2. सौ. सरला जी कांकरिया, जलगांव 3. सुश्री विद्या जी चोरड़िया, जलगांव
14.	वरखेड़ी	1. श्री भोपालचन्द जी सेठिया, जोधपुर 2. श्री नेनचन्द जी बाफना, जोधपुर
15.	इच्छापुर	1. सौ. ज्योति जी गादिया, भुसावल 2. सुश्री संगीता जी छाजेड़, भुसावल 3. सुश्री पुजा जी गादिया, भुसावल
16.	खलणा	1. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर 2. श्री चिमनलाल जी बोरा, न्यायडोंगरी 3. श्री बसंत जी बोहरा, जोधपुर 4. श्री सुगनचन्द जी संचेती, चालीसगांव
17.	कटंगी	1. श्री मनीष जी बोथरा, जोधपुर 2. श्री चेनकरण जी कटारिया, जलगांव 3. श्री रीतेश जी सुराणा, जलगांव
18.	रत्नागिरी	1. सौ. तारा जी डाकलिया, जलगांव 2. श्री जिनेन्द्रकुमार जी जैन, जलगांव 3. सौ. सरोज जी पारख, चालीसगांव
19.	वरणगांव	1. सौ. अनिता जी लुंकड़, जलगांव 2. सौ. किरण जी बोरा, जलगांव 3. सुश्री कोमल जी कोठारी, जलगांव
20.	खण्डाला	1. सौ. प्रमिला जी सिंघवी, फागणा 2. सौ. रेखा जी जैन, नगांव, 3. सुश्री मीनाक्षी जी सुराणा, मुकटी
21.	वाकड़ी	1. श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा, जोधपुर

		2. श्री धीरज जी डोसी, जोधपुर
22.	बोरकुण्ड	1. सौ. विमला जी कांकरिया, जलगांव
		2. सुश्री शीतल जी छाजेड़, जलगांव
		3. सौ. रूपाली जी खिंवसरा, धुलिया
23.	वडाला	1. श्री सुरेन्द्र जी गुन्देचा, पीपाड़ शहर
		2. श्री मनोज जी मेहता, पीपाड़ शहर
		3. श्री तेजराज जी मुथा, पीपाड़ शहर
24.	देवूर	1. श्री लालचन्द जी छिंगावत, बैंगलोर
		2. श्री निर्मल कुमार जी दक, बैंगलोर
		3. श्री संजय कुमार जी गुगलिया, बैंगलोर
		4. सौ. वन्दना ज़ी तातेड़, नेर
25.	भराड़ी	1. सौ. शकुन्तला जी कटारिया, जलगांव
		2. सौ. लीला जी कोटेचा, जलगांव
		3. सौ. चन्दा जी धोका, जलगांव
26.	उंबरगांव रोड़	1. सौ. सुगन जी सांड, जलगांव
		2. सौ. हेमलता जी सांखला, मुम्बई
		3. सुश्री दिपाली जी सांड, जलगांव
27.	पारोला	1. श्री महावीर जी गोलेच्छा, वाकोद
		2. श्री निर्मल जी मूथा,पीपाड़ शहर
		3. श्री निर्मल जी बोरा, पीपाड़ शहर
28.	बोरखेड़ा पिराचे	1. श्री पुनीत जी मूथा, पीपाड़ शहर
		2. श्री मनोज जी बोहरा, पीपाड़ शहर
		3. श्री सम्पत जी बाघमार, पीपाड़ शहर
29.	नागद	1. श्री राजमल जी संचेती, अमलनेर
		2. श्री सुगनचन्द जी सांड, येलदा
		3. सुश्री ज्योति जी दुग्गड़, मुकटी
		4. सुश्री ममता जी खिंवसरा, मुकटी
30.	माण्डल	1. श्री पंकज जी डोसी, जोधपुर
		2. श्री पदमचन्द जी छोरिया, जलगांव
31.	कासमपुरा	1. सौ. निर्मला जी दुधेड़िया, जलगांव
		2. सुश्री पुनम जी देड़िया, वरणगांव
		3. सुश्री भारती जी वेदमूथा, नागद
32.	अम्बाजोगाई	1. सौ. किरण जी खिंवसरा, मांडल
		2. सौ. शकुन्तला जी खिंवसरा, मांडल
		3. सौ. कमला जी वेदमूथा, मांडल

33.	रालेगांव,	1. सौ. लीला जी खिंवसरा, मांडल
		2. सौ. शोभा जी खिंवसरा, मांडल
		3. सुश्री राखी जी खिंवसरा, मांडल
34.	विटनेर	1. सौ. चन्दा जी कांकलिया, जलगांव
		2. सौ. सुशीला जी सांखला, जलगांव
		3. श्रीमती कमला जी बाफना, जलगांव
35.	तोंडापुर	1. श्री मुन्नालाल जी भण्डारी, जोधपुर
		2. सुश्री सुशीलाजी लुणावत,पीपाड़(विरक्ता)
		3. सुश्री विजयलक्ष्मी लुणावत, पीपाड़ शहर
36.	बेटावद	1. सौ. आरती जी ललवाणी, चिलगांव
		2. सुश्री सोनू जी कोठारी, पीपाड़ शहर
		3. सुश्री प्रीतम जी मेहता, पीपाड़ शहर
37.	किनगांव राजा	1. श्री अतुल जी मुणोत, जलगांव
		2. श्री रिन्कु जी जैन, जलगांव
38.	उंबरखेड़	1. श्री अलंकार जी मुणोत, जलगांव
		2. श्री जिनेन्द्र जी जैन, जलगांव
		3. श्री निशांत जी जैन, मालेगांव
39.	चिंचाला	1. श्रीमती उषा जी कोठारी, जलगांव
		2. सुश्री नीतू जी चौपड़ा, जलगांव
		3. श्रीमती सुशीला जी सुराणा, ब्यावर
40.	मुक्ताईनगर	1. सुश्री नीलिमा जी सिंघवी, पारोला
		2. सुश्री वैशाली जी संकलेचा, बोरकुण्ड
		3. सौ. निर्मला जी लुणावत, पारोला
41.	हीरापुर	1. श्री रमेशचन्द जी भंसाली, फत्तेपुर
		2. श्री विजयकुमार जी रांका, फत्तेपुर
42.	शेन्दुर्णी	1. श्री ऋषभकुमार जी जैन, बाबई
		2. श्री पवन जी गांधी, पीपाड़ शहर
		3. श्री दीपक जी बोथरा, पीपाड़ शहर
43.	आर्वी	1. श्री अशोक जी पितलिया, भोपाल
		2. सुश्री सोनाली जी छाजेड़, चिंचाला
		3. सुश्री स्मितमोहिनी, सुराणा, बोदवड़
44.	लासुर	1. श्रीमती मोहनी जी कच्छवाहा, जोधपुर
		2. सुश्री स्नेहलता जी गान्दिया, पीपाड़ शहर
		3. सुश्री शीतल जी छल्लाणी, नेर
		4. सुश्री आशा जी तातेड़, बोरकुण्ड

45.	वाघली	1. श्री पुखराज जी गिड़िया, जोधपुर
		2. श्री सतीश जी कोटड़िया, जोधपुर
46.	चिपलून	1. श्री प्रकाश जी बांठिया, पाचोरा
		2. सुश्री कविता जी सिसोदिया, जामनेर
		3. सुश्री सपना जी वेदमूथा, नागद
47.	बांबरूड़ राणीचे	1. श्री संदीप जी कोठारी, पीपाड़ शहर
		2. श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, मजल
		3. श्री मेहुल जी जैन, जलगांव
48.	पलासखेड़ा	1. सौ. कमला जी कोचर, जलगांव
		2. श्रीमती सज्जन जी मुणोत, जलगांव
		3. सुश्री मोना जी सुराणा, जलगांव
49	तलेगांव	1. सुश्री सपना जी धाड़ीवाल, पाचोरा
		2. सुश्री नेहा जी चोरड़िया, जामनेर
		3. सुश्री चन्दा जी मुणोत, पाचोरा
		4. सुश्री अपुर्वा संघवी, पाचोरा
50.	शेलवड़	1. श्री महेन्द्र जी जीरावला, जोधपुर
		2. श्री राजेश जी चोपड़ा, जोधपुर
51.	हरताला	1. श्रीमती बदाम जी चोरड़िया, शिरपुर
		2. श्रीमती सायर जी सुराणा, शिरपुर
		3. सौ. चन्द्रकला जी बाफना, निमगुल
52.	पिलखोड़	1. सौ. मधुबाला जी कांकलिया, जलगांव
		2. सौ. कान्ता जी कटारिया, जलगांव
		3. सुश्री अंशु जी कटारिया, जलगांव
53.	वाकोद	1. श्री कल्पेश जी सांड, पाली
		2. श्री सुनील जी बोथरा, जोधपुर
		3. श्री पुखराज जी कोठारी, लासुर

मध्यप्रदेश

54.	सिंगोली	1. श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर
		2. सुश्री सुलसा जी नागोरी, सिंगोली
55.	भोपाल	1. श्री नवरतनमल जी डोसी, जोधपुर
		2. श्री सुगनचन्द जी छाजेड़, जोधपुर
		3. श्री महावीर जी मकाणा, ब्यावर
56.	बड़वाह	1. श्री राजमल जी ओस्तवाल, जोधपुर
		2. श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़, समदड़ी
57.	सनावद	1. श्री नरपतराज जी भण्डारी, जोधपुर

		2. श्री दिलरूपचन्द जी भण्डारी, जोधपुर
58.	कसरावद	1. श्री मदनलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
		2. श्री कुशल जी जैन, सवाईमाधोपुर
59	जबलपुर	1. श्री प्रकाश जी कोठारी, इन्दौर
		2. श्री विनोद जी बाफना, मेघनगर
		3. श्रीमती हर्षा रूणवाल, धार
60.	बेरछा	1. श्री हेमन्त जी नाहर, पहुंना
		2. श्री महावीर जी रांका, पहुंना
61.	सिद्धीकगंज, मगरदा	1. श्री बंशीलाल जी जैन, अलीगढ़
		2. श्री पवनकुमार जी जैन, अलीगढ़
62.	गौतमपुरा	1. श्री जगदीशप्रसाद जी जैन, हा.बो.(स.मा.)
		2. श्री अमोलकचन्द जी जैन, हा.बो. (स.मा.)
		3. श्री लड्डूलाल जी जैन, हा.बो. (स.मा.)
63.	बड़वानी	1. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, हा.बो.(स.मा.)
		2. श्री विजय जी जैन, हा.बो.(स.मा.)
64.	बलकवाड़ा	1. श्री सौभागमल जी जैन, बजरिया
		2. श्री पदमकुमार जी जैन, बजरिया
65.	बुरहानपुर	1. श्री राजेन्द्र जी ओरा, इन्दौर
		2. श्री विमल जी पोरवाल, इन्दौर
		3. श्री राहुल जी तातेड़ इन्दौर
66.	सिवनीमालवा	1. श्री करणराज जी मेहता, जोधपुर
67.	संजीत	1. श्री सुभाष जी लोढ़ा, महागढ़
		2. श्री हीरालाल जी रांका, बोहेड़ा
		3. श्री प्रकाश जी धींग, बोहेड़ा
68.	बागली	1. श्री सौभागमल जी जैन, कुस्तला
		2. श्री विनयचन्द जी जैन, आलनपुर
69.	श्योपुरकलां	1. श्रीमती विमला जी जैन, बजरिया
		2. सुश्री रेखा जी जैन, कोटा
		3. श्री नरेशचन्द जी जैन, श्योपुरकलां
70.	इच्छावर	1. श्री लड्डूलाल जी जैन, चोरू
		2. सुश्री अन्तिमबाला जी जैन, चोरू
71.	उन्हैल	1. सुश्री चांदनी जी कपासी, इन्दौर,
		2. श्रीमती शान्ता जी मुणोत, इन्दौर
		3. सुश्री वर्षा जी मुणोत, इन्दौर
72.	शुजालपुर मण्डी	1. श्रीमती बाली बाई भण्डारी, नान्द्रा
		2. श्रीमती निर्मला जी मुगदिया, इन्दौर

		3. सुश्री प्रंकिला छाजेड़, खाचरोद
73.	बरेली	1. श्रीमती सुभद्रा बाबेल, मन्दसौर
		2. श्रीमती शान्ता जी चोरडिया, इन्दौर
		3. श्री अभिषेक जी नाहर, इन्दौर
74.	कालुखेड़ा	1. श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया, इन्दौर
		2. श्री नितेश जी बोहरा, इन्दौर
75.	महागढ़	1. श्री समरथमल जी लोढ़ा, महागढ़
		2. श्री सुरेश कुमार जी राठौर, महागढ़
76.	छोटी कसरावद	1. श्रीमती ममता जी जैन, कसरावद
		2. श्रीमती स्नेहलता जी जैन, कसरावद
		3. सुश्री जयश्री जी जैन, कसरावद

मारवाड़ क्षेत्र

77.	धनारीकलां	1. श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर
		2. श्री नवरतनमल जी गिड़िया, जोधपुर
78.	पालासनी	1. श्री मिलापचन्द जी मेहता, जोधपुर
		2. श्री उम्मेदराज जी सिंघवी, पाली
79.	भोपालगढ़	1. श्री सुगनचन्द जी कांकरिया, भोपालगढ़
		2. श्री सोहनलाल जी बोथरा, भोपालगढ़
		3. श्रीमती कंचन जी मूथा, भोपालगढ़
80.	आसोप	1. श्री शांतिलाल जी सिंघवी, आसोप
		2. श्री कानराज जी सुराणा, आसोप

मेवाड़ क्षेत्र

81.	मावली जक्शंन	1. श्री तेजराज जी भण्डारी, जयपुर
		2. श्री हनुमान जी जैन, जयपुर
		3. श्री सतीश कुमार जी जैन, जयपुर
82.	भादसोड़ा	1. श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर
		2. श्री रमेश जी भण्डारी, जोधपुर
83.	अरनोदा	1. श्री मानसिंह जी खारीवाल, सहाड़ा
		2. श्री राकेश जी सरूपिया, मावली जंक्शन
84.	रूदगांव	1. श्री रिखबलाल जी मारू, कपासन
		2. श्रीमती कमला जी मारू, कपासन
85.	नवाणिया	1. श्री मांगीलाल जी नागोरी, पारसोली
		2. श्री सम्पतलाल जी भादविया, नवाणिया
		3. सुश्री मन्जु जी भादविया, नवाणिया
86.	सहाड़ा	1. श्री शांतिलाल जी गांधी, सिंगोली

		2. श्री सुशील जी सुराणा, कदवासा
		3. सुश्री सीमा जी गांधी, सिंगोली
87.	जावरमाइन्स	1. श्री धनपत जी मेहता, पीपाड़ शहर
		2. श्री उज्जवल जी मेहता, पीपाड़ शहर
88.	दरीबामाइन्स	1. श्री पदमचन्द जी अग्रवाल, जयपुर
		2. श्री भागचन्द जी सेठ, जयपुर
89.	सुरपुर	1. श्री सागरमल जी लोढ़ा, महागढ़
		2. श्री हीरालाल जी खिंदावत, मोरवनबांध
90.	कांस्याकला	1. श्री कन्हैयालाल जी फाफरिया, रतनगढ़
		2. श्री हरकुलाल जी गांधी, सिंगोली
91.	बड़ा महुआ	1. श्री शंकरलाल जी लोढ़ा, भादसोड़ा
		2. श्री नक्षत्रमल जी चोरड़िया, भादसोड़ा
		3. श्री अभय जी चण्डालिया, भादसोड़ा
		4. सुश्री नीतू जी चण्डालिया, भादसोड़ा
92.	नेवरिया	1. श्री मानमल जी लसोड़, प्रतापगढ़
		2. श्री नारायणलाल जी जैन, प्रतापगढ़
93.	पहुंना	1. श्री बाबूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
		2. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
94.	पारसोली	1. श्री गगनकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
		2. श्री मुकेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
95.	छोटा भटवाड़ा	1. श्री मोहनलाल जी पितलिया, पारसोली
		2. श्री हंसराज जी पितलिया, पारसोली

पोरवाल क्षेत्र

96.	देई	1. श्री जशकरण जी डागा, टोंक
		2. श्री निहालचन्द जी जैन, देई
		3. श्री अर्नुपम जी जैन, जयपुर
97.	सुमेरगंजमण्डी	1. श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर
		2. श्री वीरेन्द्र जी जैन, जोधपुर
		3. सुश्री सुनीता जी कोठारी, पीपाड़ शहर
		4. सुश्री रेखा जी मूथा, पीपाड़ शहर
98.	बजरिया	1. श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर
		2. श्री सुनील जी चौपड़ा, जोधपुर
		श्री सुभाष जी गुन्देचा, जोधपुर
99.	चोरू	1. श्री हुकमचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी
		2. श्री बृजमोहन जी जैन, हिण्डौन सिटी

		3. श्री बाबुलाल जी जैन, हिण्डौन सिटी
100.	देवली	1. श्रीमती मोहनी बाई जी जैन, आलनपुर
		2. श्रीमती इन्द्रा देवी जैन, कुस्तला
101.	दूनी	1. श्रीमती कांतिबाई जी जैन, आलनपुर
		2. श्रीमती रूपाबाई जी जैन, बजरिया
		3. सुश्री नीतू जी जैन, सवाईमाधोपुर
102.	पचाला	1. श्री धर्मचन्द जी जैन, नसिया गंगापुर
		2. श्री भागचन्द जी जैन, नसिया गंगापुर
103.	मांगरोल	1. श्री पारसमल जी ओसवाल, नैनवा
		2. श्रीमती सुशीला जी जैन, बजरिया
104.	कुस्तला	1. श्री ताराचन्द जी जैन, देवली
		2. श्री महेन्द्रकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
		3. श्री जितेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर
105.	उनियारा	1. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
		2. श्री महावीरप्रसाद जी जैन, कुण्डेरा
106.	जरखोदा	1. श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन, हा.बो.(स.मा.)
		2. श्रीमती हरकीबाई जी जैन, चोरू
		3. सुश्री रेणु जी जैन, हा.बो. सवाईमाधोपुर
107.	कोटा	1. श्री महावीर प्रसाद जी जैन, जरखोदा
		2. श्री ऋषभ कुमार जी जैन, जरखोदा
108.	समीधी	1. श्री धर्मचन्द जी जैन, खेरली
		2. श्री महावीर प्रसादजी जैन, गढ़हिम्मतसिंह
109.	आलनपुर	1. श्रीमती राजेश बाई जी जैन, आलनपुर
110.	कुण्डेरा	1. श्री हंसराज जी जैन, कुण्डेरा
		2. श्रीमती अनिता जी जैन, कुण्डेरा
111.	पाटोली	1. श्री सौभागमल जी जैन, पाटोली
112.	नैनवा	2. श्री पुखराज जी जैन, नैनवा

पल्लीवाल क्षेत्र

113.	भरतपुर	1. श्री रामदयाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
		2. श्री विमलकुमार जी जैन, नदबई
		3. श्री प्रेमप्रकाश जी जैन, आदर्शनगर, स.मा.
114.	हिण्डौन	1. श्री राकेश जी जैन, सुमेरगंजमण्डी
		2. श्री जितेश जी जैन, सुमेरगंजमण्डी
115.	वर्द्धमान नगर, हिण्डौन	1. श्री उम्मेदचन्द जी जैन, जरखोदा
		2. श्री शिवकुमार जी जैन, जरखोदा

116.	बरगमा	1. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा 2. श्री पारसचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
117.	नदबई	1. श्री सुरेश जी जैन खेरली 2. सुश्री भारती जी जैन, नदबई
118.	खोह	1. श्री बाबूलाल जी जैन, गोपालगढ़ 2. श्री पारसचन्द जी जैन, गोपालगढ़
119.	मण्डावर	1. श्रीमती आशा जी जैन, खोह 2. श्रीमती मिथलेश जी जैन, खोह 3. श्री महावीर प्रसाद जी जैन, मण्डावर
120.	बयाना	1. श्री ज्ञानचन्द जी जैन नदबई 2. श्रीमती सुशीला जी जैन, नदबई
121.	गंगापुर सिटी	1. श्री महेश चन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी 2. श्री कृष्णमोहन जी जैन, हिण्डौन सिटी
122.	नसियागंगापुर सिटी	1. श्री प्रेमचन्द जी जैन, भरतपुर 2. श्री मोहनकुमार जी जैन, नदबई
123.	खेरली	1. श्री लल्लूलाल जी जैन, हा.बो., स.माधोपुर 2. श्री गौतमचन्द जी जैन, बजरिया 3. श्री रामजी लाल जी जैन, खेरली 4. श्री छगनलाल जी जैन, खोह
124.	बौंण	1. श्री मुरारीलाल जी जैन, खेरली 2. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, खेरली
125.	डहरामोड़	1. श्री रमनलाल जी जैन, मण्डावर 2. श्री रतनलाल जी जैन, डहरामोड़
126.	पहरसर	1. श्री जवाहरलाल जी जैन, पहरसर 2. श्री सुदर्शनलाल जी जैन, पहरसर 3. श्रीमती हेमलता जी जैन, पहरसर 4. सुश्री मनीषा जी जैन, पहरसर
127.	सहाड़ी	1. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सहाड़ी
128.	रसीदपुर	1. श्री गुजरमल जी जैन, रसीदपुर 2. श्री श्रीपाल जी जैन, रसीदपुर
129.	गोपालगढ(भरतपुर)	1. श्री मुरारीलाल जी जैन, गोपालगढ़ 2. श्री महेन्द्रपाल जी जैन, गोपालगढ़ 3. श्री सुधीर जी जैन, गोपालगढ़
130.	वैर	1. श्री सुरेशचन्द जी जैन, वैर 2. श्री सुमेरचन्द जी जैन, वैर

अन्य क्षेत्र–राजस्थान

131.	बांसवाड़ा	1. श्री राजेन्द्र कुमार जी पटवा, जयपुर 2. श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर 3. श्री ऋषभ कुमार जी जैन, जयपुर
132.	हनुमानगढ़	1. श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर 2. श्रीमती लाड जी हीरावत, जयपुर 3. सुश्री सीमाजी कांकरिया, जयपुर 'विरक्ता'
133.	जोबनेर	1. श्री जम्बू कुमार जी जैन, जयपुर 2. श्री अशोक कुमार जी जैन, जयपुर 3. श्री अनुपम कुमार जी जैन, जयपुर
134.	गोलूबालामण्डी	1. श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया 2. सुश्री अनिता जी जैन, धनोप (विरक्ता) 3. सुश्री शिल्पा जी गाँधी, जोधपुर
135.	केसरीसिंहपुर	1. श्री रामप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाडा 2. श्री अनिल कुमार जी जैन, बजरिया
136.	दूदू	1. श्री मनोज कुमार जी जैन, जयपुर 2. श्री विनोद कुमार जी जैन, जयपुर 3. श्री महेश कुमार जी जैन, जयपुर 4. सुश्री समता जी जैन, जयपुर
137.	महारानी फार्म, जयपुर	1. श्री अरविन्द कुमार जी जैन, जयपुर 2. श्री नरेश कुमार जी जैन, जयपुर
138.	लाल कोठी, जयपुर	1. श्री हीराचन्द जी हीरावत, जयपुर 2. श्री पारसचन्द जी जैन, जयपुर
139.	चाकसू	1. श्री विनोद कुमार जी जैन, चाकसु

पश्चिम बंगाल

140.	कोलकाता	1. श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर 2. सुश्री कुसुम जी मेहता, जोधपुर

गुजरात

141.	चलथान	1. श्री नाथुलाल जी गांधी, सिंगोली 2. श्री प्रकाशचन्द जी नागोरी, सिंगोली 3. श्री चतरसिंह जी खारीवाल, बड़ा महुवा

दक्षिण प्रान्त

142.	अयनावरम	1. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर 2. श्री सुमेरमल जी बाघमार, चेन्नई

		3. श्री राजेश जी बाघमार, चेन्नई
143.	इरोड़	1. श्री पी.एम. चोरड़िया, चेन्नई
		2. श्री सुनील जी सांखला, चेन्नई
144.	नंगनल्लूर	1. श्री कल्याणमल जी बाफना, भोपालगढ़
		2. श्री मोहनलाल जी बाफना, चेन्नई
145.	पुन्नमल्ली	1. श्रीमती लीला जी सालेचा, जलगांव
		2. श्रीमती विमला जी सिंघी, धुलिया
		3. सुश्री जयमाला जी अलीझाड़, शिरूढ़
146.	आलन्दूर	1. श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा
		2. सौ. मंजू जी सिंघवी, भीलवाड़ा
		3. सुश्री साधना जी सिंघवी, भीलवाड़ा
147.	आरकाट	1. श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई
		2. श्री लीलमचन्द जी बाघमार, चेन्नई
		3. श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, चेन्नई
148.	कुनराथोर	1. श्री रिखबचन्द जी सुराणा, चेन्नई
		2. श्री पंकज कुमार जी जैन, भीलवाड़ा
149.	पल्लीपट्ट	1. श्री सुरेश कुमार जी हिंगड़, पहुंना
		2. श्री पूर्णमल जी कांकरिया, चेन्नई

पंजाब क्षेत्र

150.	बरनाला	1. श्री सरदारचन्द जी भण्डारी, जोधपुर
		2. सुश्री स्नेहलता जी चंगेरिया, अजमेर
		3. सुश्री डिम्पल जी जैन, धनोप (विरक्ता)
151.	खैराकला	1. श्री जवरीमल जी छाजेड़, जोधपुर
		2. श्री भंवरलाल जी टाटिया, जोधपुर
152.	सरदूलगढ़	1. श्रीमती अकल कंवर जी मोदी, जोधपुर
		2. सुश्री शुभा जी मेहता, जोधपुर
		3. सुश्री दीपिका जी सिंघवी, जोधपुर
153.	मानसा	1. श्री सुमतिचन्द जी जैन, मण्डी डबवाली
		2. श्री नरेश कुमार जी जैन,भोपालगढ़
		3. श्री अशोक जी चोरड़िया, पीपाड़ शहर
154.	रामामण्डी	1. श्री सुनील जी छिंगावत, इन्दौर
		2. सौ. प्रमीला जी छिंगावत, इन्दौर
155.	वुढलाड़ा	1. श्रीमती मंजु जी सांड, ब्यावर
		2. सुश्री मीनाक्षी जी जैन, धनोप(विरक्ता)

		3. सुश्री सीमा जी लूंकड़, जोधपुर
156.	जैतोमण्डी	1. श्री शिखर जी छाजेड़, इन्दौर
		2. श्री विमल जी तातेड़, इन्दौर
157.	भदोड़	1. श्री कुन्दनमल जी दाणी, डूंगला
		2. श्रीमती आशा जी दाणी, डूंगला

हरियाणा क्षेत्र

158.	मण्डी डबवाली	1. श्री सागरमल जी पींचा, नागौर
		2. श्री प्रदीप जी ललवाणी, नागौर
159.	सिरसा	1. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
		2. श्री नीरज जी सुराणा, ब्यावर
160.	रानियां	1. श्री गौतमचन्द जी जैन, अलीगढ़
		2. श्री अशोक कुमार जी जैन, आलनपुर
161.	नारनोल	1. श्रीमती कान्ता जी दुग्गड़, जयपुर
		2. श्री राहुल जी जैन, जयपुर
		3. श्री लोकेश जी जैन, जयपुर
162.	रोड़ी	1. श्री प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया
		2. श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया
163.	जाखल	1. श्री राजमल जी मेहता, डूंगला
164.	भिवानी	1. श्री सम्पतराज जी जैन, जोधपुर

जिन क्षेत्रों की रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई उनकी सूची

1. अंजड़	2. गरोट	3. मोही
4. मानसरोवर, जयपुर	5. महावीर नगर, जयपुर	6. केथुदा
7. इन्दरगढ़	8. बाबई	9. खिजुरी
10. सौप	11. बडेर	12. दांतिया
13. करोली	14. फाजिलाबाद	

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त पर्युषण सहायता राशि

कोलकाता	5000.00	बड़वानी	1000.00
हनुमानगढ़	5000.00	नगनलुर	1000.00
आरकाट	3100.00	शुजालपुर मण्डी	1000.00
सिरसा	3100.00	सहाड़ा	1000.00
अयनावरम	3100.00	खैराकला	701.00
पल्लीपट्ट	2501.00	पहुर दाभा	701.00

भोपाल	2501.00	मावली	700.00
वुढलाड़ा	2100.00	पालासनी	601.00
बरनाला	2100.00	वाघली	600.00
सरदुलगढ़	2100.00	पहुंना	550.00
आलनदूर	2100.00	संजीत	521.00
चलथान	1500.00	बजरिया	501.00
भण्डारा	1500.00	वरखेड़ी	501.00
जावरमाइन्स	1500.00	मांगरोल	501.00
बड़वाह	1500.00	बड़ा महुवा	500.00
कसरावद	1500.00	मण्डावर	500.00
चाकसू	1150.00	सनावद	500.00
दरीबामाइन्स	1111.00	पारसोली	500.00
वाकोद	1111.00	बेरछा	500.00
उन्हैल	1100.00	इच्छावर	500.00
अम्बाजोगाई	1100.00	शेन्दुर्णी	351.00
भिवानी	1100.00	दूणी	321.00
नारनोल	1100.00	हिण्डोन सिटी	251.00
कटंगी	1100.00	सुमेरगंजमण्डी	211.00
भादसोड़ा	1100.00	छोटा भटवाड़ा	200.00
रोड़ी	1100.00	पचाला	151.00
मण्डी डबवाली	1100.00	वाकड़ी	150.00
		कुल	**66336.00**

व्यक्तिगत पर्युषण सहायता राशि

श्री राजकुमार जी नाहटा, सिरसा	1100.00
श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	621.00
श्री भोपालचन्द जी सेठिया, जोधपुर	501.00
श्री दुलीचन्द जी बोहरा, नीलमचन्द जी ज्ञानचन्द जी बाघमार, चेन्नई	501.00
श्री महावीर जी मकाणा, ब्यावर	350.00
श्री सुनील जी चौपड़ा, जोधपुर	310.00
श्री मदनलाल जी जैन, मानसा	200.00
श्री मिलापचन्द जी मेहता, जोधपुर	101.00
श्री जशकरण जी डागा, टोंक	77.00
श्री छगनचन्द जी जैन, खौह	32.00

श्रीमती मिथलेश जी जैन, खौह	18.00
कुल	**3812.00**

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव को प्राप्त पर्युषण सहायता

खेतीया	3200.00	भराड़ी	501.00
चिपलुण	3100.00	पारोला	501.00
रत्नागिरी	3100.00	रत्नागिरी	501.00
कोपरगांव	3100.00	इच्छापुर	501.00
मुक्ताई नगर	1521.00	बेटावद	500.00
केलसी	1500.00	मुकटी	500.00
उम्बरगांव रोड़	1500.00	लासुर	500.00
विटनेर	730.00	पिलखोड़	500.00
बोरकुंड	702.00	नागद	401.00
आलेगांव	701.00	वरणगांव	350.00
आर्वी	521.00	चिंचाला	300.00
लोहारा	501.00	खण्डाला	251.00
सौंदाणा	501.00	बांबरूड राणिचे	251.00
तलेगाव	501.00	हरताला	251.00
नासिक	501.00	हिरापुर	101.00
पिंपलनेर	501.00		
		कुल	**28089.00**

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त पर्युषण सहायता

मगरदा	1001.00
श्योपुरकलां	651.00
गौतमपुरा	251.00
देई	251.00
कुल	**2153.00**

अन्त में हम उन सभी क्षेत्रों के श्री संघों के पदाधिकारियों व सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस संघ को सेवा का सुअवसर प्रदान किया। साथ ही उन स्वाध्यायी भाई-बहनों का भी हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस संघ के निर्देशानुसार पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में बाहर पधारकर अपना अमूल्य समय जिनशासन की सेवा में प्रदान किया।

सुशीला बोहरा — **संयोजक**

रिखबचन्द मेहता — **सचिव**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा दिनांक 6.1.2002 को

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा प्रथम से दसवीं तक की आगामी धार्मिक परीक्षा दिनांक **6 जनवरी 2002, रविवार** को दोपहर 12 से 3 बजे तक विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेंगी।

परीक्षा हेतु आवेदन–पत्र एवं पाठ्यक्रम–आधारित पुस्तकें बोर्ड कार्यालय में उपलब्ध हैं। आवेदन–पत्र बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि **30 नवम्बर 2001** है। आवेदन–पत्र जमा कराते समय निम्न बिन्दुओं का पालन करना अनिवार्य हैं।

1. आवेदन–पत्र पर पत्राचार का पूर्ण पता, पिन कोड एवं फोन नम्बर स्पष्ट लिखा होना आवश्यक है।
2. निर्धारित स्थान पर पासपोर्ट साइज का फोटो संलग्न करना अनिवार्य है।
3. परीक्षा 100 अंकों की होगी जिसमें से पिछली एक कक्षा की पुस्तक में से 10 अंक के प्रश्न भाग 'अ' प्रश्न–पत्र में पूछे जायेंगे।

जहाँ पर भी 20 से अधिक परीक्षार्थी होंगे वहां नया केन्द्र खोले जाने का प्रावधान है। परीक्षार्थी को पुस्तक बोर्ड कार्यालय से निःशुल्क प्राप्त होगी। उत्तीर्ण होने पर परीक्षार्थी को पुरस्कार भी प्रदान किया जायेगा। बोर्ड की परीक्षाओं में किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति तथा उम्र के भाई–बहिन, बच्चे–बड़े–बूढ़े भाग ले सकते हैं।

परीक्षा कार्यक्रम में अधिक से अधिक भाई–बहिन भाग लें, ऐसी पुरजोर प्रेरणा पाठकगण करावें ताकि आप भी श्रुत–सेवा एवं जिनशासन प्रभावना में सहभागी बन सकें।

29 जुलाई 2001 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित

कक्षावार परीक्षा परिणाम

जैन धर्म परिचय–कुल परीक्षार्थी-1770, प्रथम श्रेणी-727, द्वितीय श्रेणी-443, तृतीय श्रेणी-280, कुल उत्तीर्ण-1450, प्रतिशत-81.80

जैन धर्म प्रवेशिका–कुल परीक्षार्थी-814, प्रथम श्रेणी-240, द्वितीय श्रेणी-218, तृतीय श्रेणी-142, कुल उत्तीर्ण-600, प्रतिशत-73.71

जैन धर्म प्रथमा–कुल परीक्षार्थी-256, प्रथम श्रेणी-64, द्वितीय श्रेणी-56, तृतीय श्रेणी-62, कुल उत्तीर्ण-182, प्रतिशत-71.09

जैन धर्म मध्यमा–कुल परीक्षार्थी-185, प्रथम श्रेणी-95, द्वितीय श्रेणी-73, तृतीय श्रेणी-15 कुल उत्तीर्ण-183, प्रतिशत-98.91

जैन धर्म चन्द्रिका–कुल परीक्षार्थी-99, प्रथम श्रेणी-17, द्वितीय श्रेणी-32, तृतीय श्रेणी-37, कुल उत्तीर्ण-86, प्रतिशत-86.86

जैन धर्म विशारद–कुल परीक्षार्थी-55, प्रथम श्रेणी-46, द्वितीय श्रेणी-8, तृतीय श्रेणी-1, कुल उत्तीर्ण-55, प्रतिशत-100.00

जैन धर्म कोविद—कुल परीक्षार्थी-29, प्रथम श्रेणी-24, द्वितीय श्रेणी-3, तृतीय श्रेणी-2, कुल उत्तीर्ण-29, प्रतिशत-100.00

जैन धर्म भूषण—कुल परीक्षार्थी-37, प्रथम श्रेणी-19, द्वितीय श्रेणी-12, तृतीय श्रेणी-4, कुल उत्तीर्ण-35, प्रतिशत-94.59

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध—कुल परीक्षार्थी-16, प्रथम श्रेणी- 8, द्वितीय श्रेणी-4, तृतीय श्रेणी-3, कुल उत्तीर्ण-15, प्रतिशत-93.75

योग—कुल परीक्षार्थी-3261, प्रथम श्रेणी-1240, द्वितीय श्रेणी-849, तृतीय श्रेणी-546, कुल उत्तीर्ण-2635, प्रतिशत-80.80

योग्यता सूची

जैन धर्म परिचय

प्रथम	सौ. राजकुमार / श्री सुनिल चोरडिया, चैन्नई	100
द्वितीय	कु. वैशाली / श्री फूलचन्द कोठारी, निफाड़ (नासिक)	99
तृतीय	सौ. सुमन / श्री प्रवीणकुमार डागा, हैदराबाद	98
तृतीय	कु. कविता / श्री बुद्धराज जी जैन, हैदराबाद	98
तृतीय	कु. नीता / श्री पारसमल जी संकलेचा, परतुर (महा.)	98

जैन धर्म प्रवेशिका

प्रथम	सौ. सुनिता / श्री कमलेश बाफना, पावटा (जोधपुर)	98
प्रथम	सौ. अलका / श्री विजयकुमार छाजेड़, अमलनेर (महा.)	98
द्वितीय	सौ. चन्द्रकला / श्री सुरेशचंदजीकांकरिया, पीपलगांवबसवन्त	97
द्वितीय	सौ. सुरेखा / श्री अभिनंदन भंडारी, पीपलगांव बसवन्त	97
तृतीय	सौ. ज्योति तातेड / श्री राजेन्द्र तातेड, धूलिया (महा.)	96
तृतीय	सौ. मधु / श्री गोपीचन्द छल्लाणी, चैन्नई	96

जैन धर्म प्रथमा

प्रथम	सौ. सरला / श्री ललित कुमार बारोला, नांगानलूर (चैन्नई)	94
प्रथम	सौ. चन्दनबाला / श्री सुनिलनाथ मोदी, नेहरूपार्क (जोधपुर)	94
द्वितीय	सौ. रीमा कोठारी, मुणोतविला (मुंबई)	93
द्वितीय	श्री चंचलमल / श्री पुखराज गिड़िया, पावटा (जोधपुर)	93
द्वितीय	सौ. वीणा / श्री जसवन्त मुथा, पाली—मारवाड	93
तृतीय	सौ. सुधा / श्री राजेश गोलेच्छा, मुणोतविला (मुंबई)	92
तृतीय	कु. आरती / श्री उमरावमल जैन, चैन्नई	92
तृतीय	सौ. प्रभा / श्री चंचलमल गिड़िया, पावटा (जोधपुर)	92

जैन धर्म मध्यमा

प्रथम	कु. वसन्तमाला / श्री प्रेमचंद संकलेचा, पावटा (जोधपुर)	92
द्वितीय	कु. स्वीटी / श्री प्रेमचंद जैन, ब्यावर	91
तृतीय	सौ. अलका / श्री प्रसन्नचंद नाहर, नांगानलूर (चैन्नई)	90

जैन धर्म चन्द्रिका

प्रथम	सौ. विमला / श्री प्रकाशचंद कोठारी,जामनेर (महा.)	94
द्वितीय	सौ. पुष्पलता / श्री विजय बनवट, जलगांव (महा.)	93
तृतीय	सौ. ज्योति / श्री विजयकुमार चोरडिया, जामनेर (महा.)	91

जैन धर्म विशारद

प्रथम	सौ. रजनी / श्री पदमचंद जैन,सवाईमाधोपुर (राज.)	100
प्रथम	कु. भाग्यश्री / श्री नारायणलाल चौपड़ा, पावटा (जोधपुर)	100
द्वितीय	सौ. सुभद्रा / श्री कांतिलाल धारीवाल,पाली–मारवाड	99
तृतीय	सौ. शोभा / श्री नेमीचंद संकलेचा, जलगांव (महा.)	98.5

जैन धर्म कोविद

प्रथम	सौ. युवराज / स्व. श्री हेमचंद मेहता,जयपुर	99
द्वितीय	सौ. सुनिता / श्री अरूण मेहता,घोड़ों का चौक (जोधपुर)	98
द्वितीय	कु. शुभा / श्री शांतिलाल जैन,जयपुर	98
तृतीय	श्री राजेन्द / श्री केवलचंद सांखला,चैन्नई	95
तृतीय	कु. दीपिका / श्री रतनराज लुणावत, पीपाड़सिटी	95

जैन धर्म भूषण

प्रथम	सौ. कुमकुम / श्री त्रिलोकचंद जैन, सवाईमाधोपुर	95
द्वितीय	सौ. तिलोत्तमा / डॉ. सुरेशचंद ओस्तवाल,भड़गांव	90
तृतीय	कु. सीमा / श्री हीरालाल पीपाड़ा, चैन्नई	88

जैन सिद्धान्त प्रभाकर – पूर्वार्द्ध

प्रथम	कु. नेहा / श्री ईश्वरलाल चोरडिया,जामनेर	91
द्वितीय	कु. शर्मिला / श्री हस्तीमल गोलेच्छा, ब्यावर	85
तृतीय	सौ. मंजु / श्री लक्ष्मीचंद भंडारी, ब्यावर	81

श्रीमती विमला मेहता — संयोजक
धर्मचन्द जैन — रजिस्ट्रार
नवरतन डागा — सचिव

'जिनवाणी सदस्य बनाओ' राष्ट्रीय अभियान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित जैन धर्म की ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी मासिक पत्रिका **'जिनवाणी'** के 500 रुपये के स्थान पर **300 रुपये** में **'आजीवन सदस्य'** बन कर एवं बनाकर इस विशेष छूट का लाभ लीजिए। यह छूट सिर्फ युवक परिषद् के माध्यम से जिनवाणी का आजीवन सदस्य बनने पर भ. महावीर जन्म कल्याणक वर्ष में ही उपलब्ध रहेगी। इस योजना में अब तक 1000 से भी अधिक सदस्य बनाए जा चुके हैं।

इच्छुक व्यक्ति 300/– का ड्राफ्ट/मनीआर्डर, जिनवाणी,जयपुर के नाम का बनवाकर अथवा युवक परिषद् द्वारा अधिकृत व्यक्ति को रोकड़ देकर जिनवाणी का आजीवन सदस्य बन सकते हैं। ड्राफ्ट/मनीआर्डर, **अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, जोधपुर** के पते पर भिजवायें। **–महासचिव**

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

5971 श्री गजेन्द्र जी बोडाना, इन्दौर (म.प्र.)
6439 श्री रमेशचन्द जी जैन, धार (म.प्र.)
6445 श्री सुभाष जी ओस्तवाल, नासिक (महा.)
6446 श्री संजय जी कोठारी, विटनेर, जलगांव (महा.)
6447 श्री सन्देश जी डूंगरवाल, धुलिया (महा.)
6448 श्री सुमतचन्द जी जैन, मई, भरतपुर (राज.)
6449 श्री रामस्वरूप जी जैन,'अध्यापक' सवाईमाधोपुर (राज.)
6450 श्री संजय कुमार जी बाघमार, बडाला-वडाली, जलगांव (महा.)
6451 श्री दिलीप कुमार जी बाघमार, वडाला-वडाली, जलगांव (महा.)
6452 श्री प्रदीप कुमार जी बाघमार, वडाला-वडाली, जलगांव (महा.)
6453 श्री राजेन्द्र प्रसाद जी आंचलिया, वडाला-वडाली, जलगांव (महा.)
6454 श्री राजमल जी कांकरिया, धुलिया (महा.)
6455 श्री कचरूमल जी कांकरिया, पुर,धुलिया (महा.)
6456 श्री इन्दरचन्द जी बोथरा, निमगुल, धुलिया (महा.)
6457 श्री राजेन्द्र जी बोहरा, परतवाज, अमरावती (महा.)
6458 श्री विमलचन्द जी जैन, चैंगलपेट (तमि.)
6459 श्री तेजराज जी बाफना,'रजलानी वाले' खिड़किया, हरदा (म.प्र.)

300/- रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

5966 श्री अभय जी शाह, नोयेडा (उ.प्र.)
5967 श्री नलीन जी भण्डारी, नोयेडा (उ.प्र.)
5968 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
5969 श्रीमती निशा जी जैन, जयपुर (राज.)
5970 श्री मोहनराज जी मूथा, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महा.)
5972 श्री अजय जी धाकड़, गुडगांव (हरियाणा)
5973 श्री रेवती प्रसाद जी जैन, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)
5974 श्री पारसचन्द जी जैन, भरतपुर (राज.)
5975 श्री पदमचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई (तमि.)
5976 श्री हरित जी कोठारी, बांसवाड़ा (राज.)
5977 श्री अशोक जी खाब्या, बांसवाड़ा (राज.)
5978 श्री अशोक जी जैन, बांसवाड़ा (राज.)
5979 श्री पन्नालाल जी ललवाणी, बांसवाड़ा (राज.)
5980 श्री राजेन्द्र कुमार राहुल मेर जी, बांसवाड़ा (राज.)
5981 श्री किशनचन्द जी जैन, मलपुरा, आगरा (उ.प्र.)
5982 श्री ऋषभ जी जैन, मलपुरा, आगरा (उ.प्र.)
5983 श्री प्रदीप जी हीरावत, जयपुर (राज.)

5984 श्री पीयूष जी जैन, जयपुर (राज.)
5985 श्री अखिलेश जी नाहर, जयपुर (राज.)
5986 श्री राजेन्द्र जी चतर, जयपुर (राज.)
5987 श्री चन्दनमल जी गुजरानी, जयपुर (राज.)
5988 श्री रतनचन्द जी कोठारी, जयपुर (राज.)
5989 श्री विरेन्द्र जी चोरड़िया, दिल्ली
5990 श्री पूनमचन्द जी सोनी, देहली
5991 श्री धर्मीचन्द जी विनायकया, जयपुर (राज.)
5992 श्री राजीव जी सुजन्ती, जयपुर (राज.)
5993 श्री पुखराज जी जैन, जयपुर (राज.)
5994 श्री प्रवीण जी बरड़िया, जयपुर (राज.)
5995 श्री कनकमल जी गोलेच्छा, जयपुर (राज.)
5996 श्री विपेन्द्र कुमार जी पालड़ेचा, जयपुर (राज.)
5997 श्री रतन्लाल जी लोढ़ा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
5998 श्री लाभचन्द जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
5999 श्री शैलेन्द्र जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
6000 श्री राजेन्द्र जी मारू, जयपुर (राज.)
6001 श्री कमलचन्द जी मोदी, जयपुर (राज.)
6002 श्री सुरेश कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6003 श्री सुनील जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6004 श्री ठाकुरदास जी सिसोदिया, जयपुर (राज.)
6005 श्री पीयुष जी जैन, जयपुर (राज.)
6006 श्री आलोक जी अटोलिया, जयपुर (राज.)
6007 श्री पदमचन्द जी संघी, जयपुर (राज.)
6008 श्री मुकेश जी डोसी, जयपुर (राज.)
6009 श्री निर्मल जी दूगड़, जयपुर (राज.)
6010 श्री उम्मेदमल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर (राज.)
6011 श्री उमरावसिंह जी नागोता, जयपुर (राज.)
6012 श्री सुभाषचन्द जी थजलानी, जयपुर (राज.)
6013 श्री शांतिप्रसाद जी जैन, जयपुर (राज.)
6014 श्री गिरीश जी नाहर, जयपुर (राज.)
6015 श्री सिद्धार्थ जी बोहरा, जयपुर (राज.)
6016 श्री प्रफुल्ल जी सुराणा, उदयपुर (राज.)
6017 श्री भागचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6018 श्री गिरिराज जी सिंघी, जोबनेर, जयपुर (राज.)
6019 श्री अजय कुमार जी सिंघी, जोबनेर, जयपुर (राज.)
6020 श्री अशोक कुमार जी सिंघी, जोबनेर, जयपुर (राज.)
6021 श्री पदमचन्द जी सिंघी, जोबनेर, जयपुर (राज.)

6022 श्री अमरचन्द जी बरड़िया, जोबनेर, जयपुर (राज.)
6023 श्री गुलाबचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6024 श्री अक्षय जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
6025 श्री कमल जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
6026 श्रीमती किरणदेवी जी जैन, जयपुर (राज.)
6027 श्री पवन जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
6028 श्री शीतल जी पालावत, जयपुर (राज.)
6029 श्री शशिकुमार जी बोहरा, जयपुर (राज.)
6030 श्री प्रमोद जी बाबेल, जयपुर (राज.)
6031 डॉ. प्रेमसिंह जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6032 श्री प्रमोद जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6033 श्री विनोद जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6034 श्री इन्दर कुमार जी कोचर, जयपुर (राज.)
6035 श्री सुभाष जी जैन, जयपुर (राज.)
6036 श्री शांतिलाल जी संचेती, जयपुर (राज.)
6037 श्री अनिल जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6038 श्री नेमीचन्द जी बडौला, जयपुर (राज.)
6039 श्री दीपचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6040 श्री राजकुमार जी लुणावत, जयपुर (राज.)
6041 श्री सुमेरमल जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6042 श्री राजेश जी अग्रवाल, जयपुर (राज.)
6043 श्री रमेशचन्द जी चपलोत, दरीबा, राजसमन्द (राज.)
6044 श्री दिनेश जी लुणावत, जयपुर (राज.)
6045 श्री तेजकरण जी सोगानी, जयपुर (राज.)
6046 श्री विजयप्रकाश जी कुम्भट, जयपुर (राज.)
6047 श्री राजेन्द्र जी मेहता, जयपुर (राज.)
6048 श्री सुभाषचन्द जी बाफना, जयपुर
6049 श्री प्रकाश जी लोढ़ा, जयपुर
6050 श्री कमलचन्द जी धारीवाल, जयपुर (राज.)
6051 श्री मोतीलाल जी मडकत्या, जयपुर (राज.)
6052 श्री सुरेन्द्र जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
6053 श्री अजय जी जैन, जयपुर (राज.)
6054 श्री अशोक कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6055 श्री तिलकचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6056 श्री एस. सी. जैन, जयपुर (राज.)
6057 श्री महेन्द्र जी बरड़िया, जयपुर (राज.)
6058 श्री श्रीपाल जी संचेती, जयपुर (राज.)
6059 श्री धीरेन्द्र जी बांठिया, जयपुर (राज.)

6060 श्री चन्द्रशेखर जी खुटेंटा, जयपुर (राज.)
6061 श्री प्रवीण कुमार जी गोठी, तिरुची (तमि.)
6062 श्री अक्षय जी जैन, बैंगलोर (कर्ना.)
6063 श्री गणेश कुमार जी अग्रवाल, जयपुर (राज.)
6064 श्री अतुल जी पारख, अजमेर (राज.)
6065 श्री ललित जी चौधरी, जयपुर (राज.)
6066 श्री ज्ञानचन्द जी सिंघी, जोबनेर, जयपुर (राज.)
6067 श्री निर्मल कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6068 श्री सुरेन्द्र कुमार जी बाफना, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
6069 श्री पारसमल जी लुणियां, जयपुर (राज.)
6070 श्री ममता राकेश जी जैन, जयपुर (राज.)
6071 श्री सुरेन्द्र कुमार जी काला, जयपुर (राज.)
6072 श्री मदनलाल जी जैन, भरतपुर (राज.)
6073 श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6074 श्री सुशील कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6075 श्री रवि जी संचेती, जयपुर (राज.)
6076 श्री ज्ञानचन्द जी कानुंगो, जयपुर (राज.)
6077 श्री पुष्पेन्द्र जी चौधरी, जयपुर (राज.)
6078 श्री नवीनचन्द्र जी गेमावत, जयपुर (राज.)
6079 श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6080 श्री अजीत जी जैन, जयपुर (राज.)
6081 श्री मनीष जी जैन, जयपुर (राज.)
6082 श्री सुनील जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6083 श्री प्रेमचन्द जी झाडझूड, जयपुर (राज.)
6084 श्री नवीन जी दुसाज, जयपुर (राज.)
6085 श्री आनन्द जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
6086 श्री अजय जी जैन, जयपुर (राज.)
6087 श्री दीपक जी सुराणा, जयपुर (राज.)
6088 श्री अमित जी जैन, बांरां (राज.)
6089 श्री पारसमल जी जैन, जयपुर (राज.)
6090 श्री धर्मेन्द्र जी अजमेरा, जयपुर (राज.)
6091 श्री विनोद जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6092 श्री शरद जी जैन, जयपुर (राज.)
6093 श्री अनिल जी कोचर, जयपुर (राज.)
6094 श्री जयदीप जी मेहता, जयपुर (राज.)
6095 श्री हंसमुख जी पटेल, जयपुर (राज.)
6096 श्री फणीन्द्रनाथ जी सोमानी, जयपुर (राज.)
6097 श्री संजय कुमार जी बोथरा, जयपुर (राज.)

6098 श्री अरुण कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6099 श्री बागल जी जैन, कैसूर, धार (म.प्र.)
6100 श्री आभार जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6101 श्री गुलाब जी जैन, जोधपुर (राज.)
6102 श्री रूपेश जी टाटिया, जोधपुर (राज.)
6103 श्री अरूण कुमार जी जैन कोडूर (आन्ध्रप्रदेश)
6104 श्री सुमेरमल जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
6105 श्री संदीप जी जैन, भागलपुर (बिहार)
6106 श्री दिलीप कुमार जी नाहटा, रांची (बिहार.)
6107 श्री कुशलराज जी. हींगड़, बेतीया, पश्चिती चम्पारण (बिहार)
6108 श्री निर्मलचन्द जी जैन, सूरत (गुजरात)
6109 श्री मनीष जी जैन, खूंटी राँची (बिहार)
6110 श्री रणवीर जी जैन, हीनू, राँची (बिहार)
6111 श्री विकास जी जैन, धुर्वा, रांची (बिहार)
6112 श्री विक्रम जी सेठिया, हावड़ा (प.बंगाल)
6113 श्री राजेश जी बागरेचा, हुगली (प.बंगाल)
6114 श्री हरकचन्द जी पारख, हीनू, राँची (बिहार)
6115 श्री शेखर एन. भण्डारी, मुम्बई (महा.)
6116 श्री सुरेन्द्रकुमार जी ओस्तवाल, जोधपुर (राज.)
6117 श्री यू.सी. नाहर, जोधपुर (राज.)
6118 श्री महावीर जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
6119 श्री रविन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6120 श्री पी. आर. लुणावत, जोधपुर (राज.)
6121 श्री धर्मचन्द जी रांका, जोधपुर (राज.)
6122 श्री महावीर चन्द जी कवाड़, जोधपुर (राज.)
6123 श्री पूरनकुमार जी जैन, जोधपुर (राज.)
6124 श्री प्रेमचन्द जी जैन, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
6125 श्री मनोहरसिंह जी चौधरी, अजमेर (राज.)
6126 श्री शांतिकुमार जी सुराणा, अजमेर (राज.)
6127 श्री धनराज जी छाजेड़, अजमेर (राज.)
6128 श्री प्रकाशचन्द जी सोनी, अजमेर (राज.)
6129 श्री ज्ञानचन्द जी मेहता, अजमेर (राज.)
6130 श्री सुरेन्द्र कुमार जी सुराणा, अजमेर (राज.)
6131 श्री हुक्मीचन्द जी मुगड़िया, अजमेर (राज.)
6132 श्री पुखराज जी चौधरी, अजमेर (राज.)
6133 श्री विमलचन्द जी छाजेड़, अजमेर (राज.)
6134 श्री बसन्त कुमार जी सेठी, अजमेर (राज.)
6135 श्री सोभागमल जी चीपड़, अजमेर (राज.)

6136 श्री उम्मेदमल जी चौपड़ा, अजमेर (राज.)
6137 श्री टीकमचन्द जी जैन, अजमेर (राज.)
6138 श्री कन्हैयालाल जी जैन, अजमेर (राज.)
6139 श्री राधेश्याम जी गंगवाल, अजमेर (राज.)
6140 श्री शांतिलाल जी खाबिया, अजमेर (राज.)
6141 श्री प्रकाशचन्द जी पितलिया, अजमेर (राज.)
6142 श्री मंगलचन्द जी चौधरी, अजमेर (राज.)
6143 श्री प्रेमचन्द जी चौधरी, अजमेर (राज.)
6144 श्री उत्तमचन्द जी लोढ़ा, अजमेर (राज.)
6145 श्री नेमीचन्द जी जैन, बनेठा, टोंक (राज.)
6146 श्री धनराज जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6147 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6148 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6149 श्री रामकल्याण जी पंसारी, सवाईमाधोपुर (राज.)
6150 श्री भैरूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6151 श्री पदमचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6152 श्री सूरजमल जी जैन सर्राफ, सवाईमाधोपुर (राज.)
6153 श्री बाबूलाल जी नामा, सवाईमाधोपुर (राज.)
6154 श्री बाबूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6155 श्री पंकज जी धारीवाल, जोधपुर (राज.)
6156 श्री अशोक जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6157 श्री यशवन्त जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6158 श्री कुशाल रवि जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6159 श्री जुगलकिशोर जी हुण्डीवाल, जोधपुर (राज.)
6160 श्री राकेश कुमार जी हुण्डीवाल, जोधपुर (राज.)
6161 श्री सुभाष जी सेठिया, जोधपुर (राज.)
6162 श्री पंकज जी सूर्या, जोधपुर (राज.)
6163 श्री रोनकचन्द जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6164 श्री लखपत जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6165 श्री जसवन्तमल जी गांग, जोधपुर (राज.)
6166 श्री शैलेष जी गांग, जोधपुर (राज.)
6167 श्री सिद्धार्थ जी कांकरिया, रायचूर (कर्नाटक)
6168 श्रीमती कंचन जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
6169 श्री नवनीत जे. कोठारी, मुम्बई (महा.)
6170 श्री आनन्द जी जैन, मुम्बई (महा.)
6171 श्री पारसमल जी मूथा, जोधपुर (राज.)
6172 श्री सम्पतराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6173 श्री उमरावमल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)

6174 श्री गौतम जी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
6175 श्री पारसमल जी डागा, जोधपुर (राज.)
6176 श्री जसवन्तराज जी आंचलिया, जोधपुर (राज.)
6177 श्री हुक्मीचन्द जी पारख, जोधपुर (राज.)
6178 श्री नेमीचन्द जी आंचलिया, जोधपुर (राज.)
6179 श्रीमती विजयलक्ष्मी जी जैन, जोधपुर (राज.)
6180 श्री जितेन्द्र जी जैन, जोधपुर (राज.)
6181 श्री राजेन्द्र जी जैन, जोधपुर (राज.)
6182 श्री जयन्तीलाल जी जैन, मुम्बई (महा.)
6183 श्री महावीर जी नागौरी, भीलवाड़ा (राज.)
6184 श्री दौलतचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6185 श्रीमती ललिता जी आंचलिया, जोधपुर (राज.)
6186 श्री सुरेश जी लुणिया, जोधपुर (राज.)
6187 श्री सुजानमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6188 श्री प्रवीण जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6189 श्री भूपेश जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
6190 श्री अमन जी भण्डारी, लवेरा बावड़ी, जोधपुर (राज.)
6191 श्री राजेन्द्र कुमार जी ओस्तवाल, जोधपुर (राज.)
6192 श्री सम्पतराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6193 श्री दीपक जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6194 श्री रोहित जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6195 श्री शांतिलाल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6196 श्री सुभाषचन्द जी नाहर, जोधपुर (राज.)
6197 श्री राजेश जी कटारिया, जोधपुर (राज.)
6198 श्रीमती उर्मिला जी मेहता, दिल्ली
6199 श्रीमती नीलम जी जैन, अजमेर (राज.)
6200 श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
6201 श्री गौरव जी खिंवसरा, जोधपुर (राज.)
6202 श्री अनिलनाथ जी मोदी, जोधपुर (राज.)
6203 श्री महावीरराज जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
6204 श्रीमती पुष्पा जी संकलेचा, जोधपुर (राज.)
6205 श्री इन्दरचन्द जी रांका, जोधपुर (राज.)
6206 श्री सागरमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6207 श्री नरेन्द्र कुमार जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6208 श्री मनीष जी लूंकड़, जोधपुर (राज.)
6209 श्री प्रफुल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6210 श्री हुक्मीचन्द जी डाकलिया, जोधपुर (राज.)
6211 श्री भोपालचन्द जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)

6212 श्री ज्ञानचन्द जी हीरण, जोधपुर (राज.)
6213 श्री शांतिचन्द जी खिवंसरा, जोधपुर (राज.)
6214 श्री प्रभाषचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
6215 श्री सम्यक् जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
6216 श्री जगरूप जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6217 श्री अशोक जी जैन, जोधपुर (राज.)
6218 श्री सोहनलाल जी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
6219 श्री गौरव जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
6220 श्री दिनेश कुमार जी जैन, कानपुर (उ.प्र.)
6221. श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6222 श्री सत्यनारायण जी जैन, जयपुर (राज.)
6223 श्री भवानीशंकर जी जैन, जयपुर (राज.)
6224 श्री सुधीर कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6225 श्री सुरेश जी जैन, जयपुर (राज.)
6226 श्री बृजमोहन जी जैन, जयपुर (राज.)
6227 श्री विजयकुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6228 श्री मुकेश कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
6229 श्री उत्तमचन्द जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
6230 श्री दीपक जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6231 श्री अनीष जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6232 श्री राजेश जी संचेती, जोधपुर (राज.)
6233 श्री एस. के. सिंघवी, जयपुर (राज.)
6234 श्री राकेश जी कांकरिया, रायचूर (कर्नाटक)
6235 श्री कुसुम जी कुम्भट, जोधपुर (राज.)
6236 श्री बादुमल जी डोसी, जोधपुर (राज.)
6237 श्री सुमेरमल जी बाफना, जोधपुर (राज.)
6238 श्री जितेन्द्र जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6239 श्री गौतम जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6240 श्रीमती स्मिता जी जैन, जोधपुर (राज.)
6241 श्री नवरतन जी नाहटा, मुम्बई (महा.)
6242 श्री मनोज जी बाफना, इडोर
6243 श्री रवि जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6244 श्री पंकज जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6245 श्री नरेन्द्र जी नंदावत, जोधपुर (राज.)
6246 श्री सम्पतराज जी जैन, जोधपुर (राज.)
6247 श्री अशोक जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
6248 श्री प्रवीण जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
6249 श्री राजेन्द्र जी सर्राफ, जोधपुर (राज.)

6250 श्री कुशाल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6251 श्रीमती नूतन जी मेहता, दिल्ली
6252 श्री आतिश जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
6253 श्री प्रसन्नचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6254 श्री अनिल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6255 श्री राहुल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6256 श्री रोहित जी जैन, जोधपुर (राज.)
6257 श्री धनराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6258 श्री पदमचन्द जी गांधी, जोधपुर (राज.)
6259 श्री रमिन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6260 श्री किशनचन्द जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)
6261 श्री भंवरलाल जी गांधी, जोधपुर (राज.)
6262 श्री रवि जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6263 श्री जसराज जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
6264 श्री गोपालराज जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
6265 श्री पारसराज जी आंचलिया, जोधपुर (राज.)
6266 श्री रिखबराज जी आंचलिया, जोधपुर (राज.)
6267 श्रीमती पुष्पा जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6268 श्री शुभम जी गांग, जोधपुर (राज.)
6269 श्री विरेन्द्र जी सदावत, जोधपुर (राज.)
6270 श्री अनिल कुमार जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
6271 श्री अजीतराज जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
6272 श्री सम्पतराज जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6273 श्री रतनलाल जी पटवा, जोधपुर (राज.)
6274 श्री मुकेश जी बोथरा, जोधपुर (राज.)
6275 श्री कन्हैयालाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
6276 श्री सुरेन्द्र कुमार जी बाफना, जोधपुर (राज.)
6277 श्री अमरचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
6278 श्री हीरालाल जी डाकलिया, जोधपुर (राज.)
6279 सुश्री रोशनी जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
6280 श्रीमती हेमलता जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
6281 डॉ. महेन्द्र जी जैन, जोधपुर (राज.)
6282 श्री गौतमचन्द जी गांगा, जोधपुर (राज.)
6283 श्रीमती रीतु जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
6284 श्री जितेन्द्र जी सिंघवी, गाँधीधाम (गुजरात)
6285 श्री प्रेमराज जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
6286 श्री हीरालाल जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
6287 श्री धनरूपमल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)

6288 श्रीमती लक्ष्मी जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6289 श्री विमलचन्द जी दरड़ा, जोधपुर (राज.)
6290 श्री पुखराज जी पारख, जोधपुर (राज.)
6291 श्री भीकमचन्द जी जांगड़ा, जोधपुर (राज.)
6292 श्री राजेश जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
6293 श्री रतनलाल जी छाजेड़, जोधपुर (राज.)
6294 श्री मोहनलाल जी खिंवसरा, जोधपुर (राज.)
6295 श्री हुक्मीचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
6296 श्री भंवरलाल जी लुणावत, जोधपुर (राज.)
6297 श्री गणपतराज जी पारख, जोधपुर (राज.)
6298 श्री सुरेश कुमार जी वैद, जोधपुर (राज.)
6299 श्री पुखराज जी जैन, जोधपुर (राज.)
6300 श्री राजमल जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
6301 श्री ज्ञानचन्द जी मारू, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6302 श्री महेन्द्र कुमार जी पालडेचा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6303 श्री प्रेमचन्द जी पालडेचा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6304 श्री विनोद कुमार जी पालड़ेचा, विजयनगर, अजमेर (राज.)
6305 श्री ऋषभचन्द जी मेड़तवाल, केकड़ी, अजमेर (राज.)
6306 श्री घेवरचन्द जी लोढ़ा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6307 श्री तेजमल जी लोढ़ा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6308 श्री नेमीचन्द जी लोढ़ा, धनोप, भीलवाड़ा (राज.)
6309 श्री नमन जी मेहता, पीपाड़, जोधपुर (राज.)
6310 श्री भैरूलाल जी बांठिया, जोधपुर (राज.)
6311 श्री ओमप्रकाश जी जैन, रायपुर (छत्तीसगढ़)
6312 श्री सम्पतलाल जी सिंघवी, चेन्नई (तमि.)
6313 श्री अशोक जी बोर्दिया, उदयपुर (राज.)
6314 श्री मिनखराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
6315 श्री अशोक कुमार जी शाह, सैंधवा, बड़वानी (म.प्र.)
6316 श्री राजेन्द्र जी गांधी, जोधपुर (राज.)
6317 श्री मनमोहनचन्द जी गांग, जोधपुर (राज.)
6318 श्री मनोज कुमार जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, बून्दी (राज.)
6319 श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, बून्दी (राज.)
6320 श्री राकेश कुमार जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, बून्दी (राज.)
6321 श्री कपिल कुमार जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, बून्दी (राज.)
6322 श्री प्रवीण कुमार जी जैन, कुण्डेरा, सवाईमाधोपुर (राज.)
6323 श्री महावीरचन्द जी जैन, धनारीकला, जोधपुर (राज.)
6324 श्री बी. लुणकरण जी जैन, धनारीकला, जोधपुर (राज.)
6325 श्री किशोरचन्द जी जैन, धनारीकला, जोधपुर (राज.)

6326 श्री शांतिलाल जी जैन, धनारीकला, जोधपुर (राज.)
6327 श्री गजराज जी जैन, धनारीकला, जोधपुर (राज.)
6328 श्री अजीतराज जी जैन, धनारीकलां, जोधपुर (राज.)
6329 श्री हिम्मतलाल जी सेठिया, धनारीकलां, जोधपुर (राज.)
6330 श्रीमती बालारानी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6331 श्रीमती शकुन्तला देवी जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6332 श्री अनीत जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6333 श्री रविन्द्र कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6334 श्री ललित कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6335 श्री चन्द्रयश जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6336 श्री कुलभूषण जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6337 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6338 श्री विनोद कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6339 श्री अरिहन्त जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6340 श्री एस. एस. जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6341 श्री अशोक कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6342 श्री ऋषभ कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6343 श्री वेदप्रकाश जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6344 श्री पवन कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6345 श्री प्रेमकुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6346 श्री अजीतकुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6347 श्री आदेश्वर कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6348 श्री सुभाष जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6349 श्री अजय कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6350 श्री संदीप कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6351 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6352 श्री सुमतिनाथ जी जैन, सिरसा (हरियाणा)
6353 श्रीमती पुष्पा जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6354 श्री जैन भूषण जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6355 श्रीमती सुमन जी जैन, सरदूलगढ़, मानसा (पंजाब)
6356 श्रीमती शशि जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6357 श्री भानचन्द्र जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6358 श्री पुरुषोत्तमदास जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6359 श्रीमती कमला जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6360 श्री सोहनलाल जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6361 श्री राकेश कुमार जी जैन, सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6362 श्री महावीर जी जैन सरदुलगढ़, मानसा (पंजाब)
6363 श्री धर्मपाल जी जैन, मानसा, (पंजाब)

6364 श्री सुरेश जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6365 श्री दिनेश जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6366 श्रीमती शकुन्तला जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6367 श्री विद्यारत्न जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6368 श्री प्रेमरत्न जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6369 श्री राजकुमार जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6370 श्री मोहनलाल जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6371 श्री ओमप्रकाश जी जैन, हनुमानगढ़ (राज.)
6372 श्री राजीव जी जैन, बुढलाड़ा, मानसा (पंजाब)
6373 श्री पदम ज़ी जैन, बुढलाडा, मानसा (पंजाब)
6374 श्रीमती श्वेता जी जैन, बुढलाडा, मानसा (पंजाब)
6375 श्री मुकेश बी. पारख, मुम्बई (महा.)
6376 श्री छगनराज जी बाफना, जोधपुर (राज.)
6377 श्री कन्हैयालाल जी जैन, चौधरी, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
6378 श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6379 श्री सत्येन्द्र जी पोरवाल, गांधीनगर, जयपुर (राज.)
6380 श्री विमल कुमार जी जैन, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
6381 श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6382 श्री धर्मचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
6383 श्री विमलकुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
6384 श्री टीकमचन्द जी जैन, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
6385 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, आलनपुर,सवाईमाधोपुर (राज.)
6386 श्री बुद्धिप्रकाश जी लोढ़ा, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
6387 श्री रमेशचन्द जी जैन, प्राध्यापक, सवाईमाधोपुर (राज.)
6388 श्री धर्मचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6389 श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6390 डॉ. तीव्रचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6391 श्री मुकेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6392 श्री सुरेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6393 श्री रमेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6394 श्री गोविन्दसहाय जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6395 श्री दुलीचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6396 श्री विमल कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6397 श्री विमल कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
6398 श्री सुनील जी धारीवाल, चूरू (राज.)
6399 श्री नीरज जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
6400 श्री दीपचन्द जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6401 श्री कृष्णलाल जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)

6402 श्री चम्पालाल जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6403 श्री दर्शनलाल जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6404 श्री मोहनलाल जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6405 श्री सुरेन्द्रमोहन जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6406 श्री सुभाष जी जैन, रानियां, सिरसा (हरियाणा)
6407 श्री विमल कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6408 श्री शीतलप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6409 श्री ऋषभकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6410 श्रीमती ज्योति जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6411 श्री जिनेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6412 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6413 श्री रमेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6414 श्री मोहनलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6415 श्री सुरेशचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6416 श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
6417 श्री विजय कुमार जी लोढ़ा, धुलिया (महा.)
6418 श्री पूनमचन्द जी लोढ़ा, धुलिया (महा.)
6419 श्री राजेन्द्र कुमार जी लोढ़ा, धुलिया (महा.)
6420 श्री संदीप जी भंसाली, अहमदाबाद (महा.)
6421 श्री विमल कुमार जी जैन, नदबई, भरतपुर (राज.)
6422 श्री रामकल्याण जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
6423 श्री एन.सी. भण्डारी, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
6424 श्री तरूणललित कुमार जी जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)
6425 श्री योगेन्द्र कुमार जी जैन, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)
6426 श्री कपिल कुमार जी जैन, मोहम्मदपुरा, टोंक (राज.)
6427 श्री कमलेश कुमार जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, बून्दी (राज.)
6428 श्री अशोक चन्द जी लुणिया, अहमदाबाद (गुजरात)
6429 श्री पूनमचन्द जी कोठारी, जयपुर (राज.)
6430 श्रीमती सपना जी जैन, भरतपुर (राज.)
6431 श्री नन्दकिशोर जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
6432 श्री ओमप्रकाश जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
6433 श्री पदमकुमार जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
6434 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जिन्दल, देई, बून्दी (राज.)
6435 श्री रामपाल जी गोयल, देई, बून्दी (राज.)
6436 श्रीमती उर्मिला देवी जी, 'अध्यापिका' देई, बून्दी (राज.)
6437 श्री प्रेमचन्द जी जूनीवाला, देई, बून्दी (राज.)
6438 श्री ओमप्रकाश जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
6440 श्री मनोहरकुमार जी बी.देसर्डा, शहाड़ा, नन्दुरबार (महा.)
6441 श्री शान्तिलाल जी धारीवाल, जयपुर (राज.)

6442 श्री प्रदीप जी बुरड़, बरकता नगर, जयपुर (राज.)
6443 श्री आर.सी. जैन, गांधी नगर, जयपुर (राज.)
6444 श्री सुनील जी धारीवाल, गांधीनगर, जयपुर (राज.)

जिनवाणी को साभार प्राप्त

5100/– कमला फाउण्डेशन द्वारा श्री सरदारसिंह जी कर्णावट, मुम्बई, अपनी पौत्रवधू श्रीमती पूजा जी धर्मपत्नी श्री आशीष जी कर्णावट(पुत्रवधू श्री सुरेन्द्र जी एवं श्रीमती नलिनी जी कर्णावट) द्वारा न्यूयार्क में 11 दिवस की तपस्या करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री अनिल कुमार जी बुरड़, भीलवाड़ा, पूज्य पिताजी श्री सम्पतराज जी बुरड़ की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1100/– श्री श्वे. स्था. जैन संघ, नवसारी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा तथा धुलिया, जलगांव, भड़गांव, कजगांव, नरडाना में विराजित सन्त–सतियों के संघ सहित दर्शन करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री पूनमचन्द जी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री कल्याणसिंह जी कोठारी की पुण्य स्मृति में उनके परिवार की ओर से जिनवाणी को भेंट।

900/– मैसर्स संकलन, जयपुर की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट

700/– महिला मण्डल, महावीर भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

501/– श्रीमती मन्जू जी धारीवाल धर्मपत्नी स्व. श्री नरेन्द्र जी धारीवाल, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री संदीप जी धारीवाल की सकुशल अमेरिका यात्रा सम्पन्न होने पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्रीमती नवरत्न देवी जी गाँधी, दिल्ली, श्रीमती निर्मला देवी जी धर्मपत्नी श्री कपूरचन्द जी गाँधी की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

500/– श्री शांतिलाल जी, राजेश कुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया(कोसाणा), मैसूर, आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में पर्युषण पर्व उपासना धुलिया में करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोककुमार जी एवं श्रेणिकराज जी धोका(निमाज), मैसूर, आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में पर्युषण उपासना धुलिया में करने की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

500/– श्री सोहनलाल जी बुधमल जी, सम्पतराज जी एवं राजेश जी बाघमार(कोसाणा)मैसूर, आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में पर्युषण पर्व उपासना धुलिया में करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/– श्री डूँगरचन्द जी बी. भूरट, जलगांव, महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा–7 के दर्शनार्थ आने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/– श्री नेमीचन्द जी नीलमचन्दजी चोरड़िया, जलगांव, सौ. अंशुमा संदीप कुमार जी चोरड़िया द्वारा 9 की तपस्या का पचक्खाण आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से धुलिया में करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/- वीरपिता श्री सुकनराज जी गुगलिया, हैदराबाद(आन्ध्रप्रदेश), सुपुत्र चि. सज्जनराज के शुभ विवाहोपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/- वीरपिता श्री सुकनराज जी गुगलिया, हैदराबाद(आन्ध्रप्रदेश), सुपुत्र चि. राजेश कुमार के पुत्ररत्न जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/- श्रीमती विजया बाई जी मेहता, होसपेट, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

150/- श्री सम्पतराज जी बाघमार, जबलपुर, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

120/- श्री वर्द्धमान जैन स्थानक संघ, कोटा, पर्युषण पर्व सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/- राजकंवर बाई जी सुराणा, मैसूर, भाई गणेशमल जी के साथ, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा की सेवा में धुलिया पर्युषण पर्व मनाने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/- श्री खुशालचन्द जी पारसमल जी लोढ़ा द्वारा मैसर्स पिस्ना इण्डस्ट्रीज की ओर से चि. अनिल जी लोढ़ा की अठाई एवं आचार्य श्री के दर्शनों के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/- श्री संतोषमल जी बम्ब, जयपुर, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

51/- श्री अजीत जी खुशालचन्द जी लोढ़ा, नन्दुरबार, महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के स्वास्थ्य लाभ के लिए जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

500/- श्री महिपाल जी दिलीप जी भण्डारी, चेन्नई, महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शनों के उपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को भेंट।

300/- गुप्त दान।

2100/- शाह आर.एम. फायनेन्सियल सर्विस लिमिटेड, जोधपुर।

1500/- श्रीमती बिलमकंवर जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्र श्री अमित मेहता(सुपुत्र श्रीमती शशि एवं श्री आनन्द जी मेहता) के कोलकाता में बी.कॉम. में प्रथम श्रेणी एवं **ACTM (USA)** की परीक्षा में प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- ज्ञान ट्रेडिंग कॉरपोरेशन, बैंगलोर

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

1000/- श्री शांतिलाल जी खाब्या, भोपाल, साहित्य प्रकाशनार्थ सप्रेम भेंट

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

321/- दूणी संघ से पर्युषण पर्व पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहायतार्थ सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, शाखा, बजरिया को साभार-प्राप्त

501/– श्री सूरजमलजी सौभागमल जी जैन 'गाडोली वाले' बजरिया, सवाईमाधोपुर की ओर से श्री सूरजमल जी की धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति में।

201/– श्री सूरजमल जी शोभागमल जी जैन, गाडोली वाले, बजरिया सवाईमाधोपुर की ओर से श्री सूरजमल जी की धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति में।

जीवदया साभार-प्राप्त

321/– श्री चिन्तन जी मेहता, नागपुर, इंजीनियर कॉलेज में एडमिशन एवं आचार्य श्री जयमल जी म.सा. के 298वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

पाठक-पत्र

जिनवाणी के सितम्बर 2001 अंक का पठन किया। तथ्यपरक, सारगर्भित रचनाओं, स्पष्ट एवं सुन्दर छपाई, अशुद्धि रहित प्रिंट एवं आम व्यक्तित्व के समझ में आने वाली भाषाशैली के साथ कलात्मक और नयनाभिराम कवर पृष्ठ पत्रिका की महती विशेषता है।

"महामंत्र णमोक्कार" के विषय में पढ़कर मन और आत्मा दोनों को ही बहुत आनन्द आया। **"महत्त्व त्याग का"** शीर्षक से प्रकाशित रचना भी आत्मविभोर करने वाली थी। **"प्रेरक प्रसंग (तख्ती पर नाम)"** का पठन कर एहसास हुआ कि आज के युग में तो ऐसे उदारमना दानदाता तो शायद अंगुलियों पर गिनने लायक ही होंगे। धन्य है ऐसी भव्य आत्मा को जो नितांत निःस्वार्थ भाव से दान देकर भी यश, प्रतिष्ठा एवं पद की ललक नहीं रखते। हम सभी जानते हैं कि 'मानव जीवन' दुर्लभ है, मगर आज के इस भौतिकवादी माहौल– जो सर्वत्र व्याप्त है, के कारण सिर्फ 'स्व' तक सीमित हो रहे हैं; स्पष्टतः संयुक्त परिवारों का विघटन, मैकाले की शिक्षा पद्धति, पाश्चात्त्य सभ्यता का अनुसरण आदि के कारण भारतीय संस्कारों का ह्रास, फैशन परस्ती, धनसम्पत्ति का महत्त्व, बुजुर्गों के प्रति बेरुखी, पद–प्रतिष्ठा का अहं, धार्मिक क्रियाकलापों के प्रति शिथिलता के साथ प्रदर्शन और आडम्बरों का प्रभाव स्पष्ट दृश्यगत है।

एक वक्त था जब 'सादा जीवन उच्च विचार' का पोषक था– हमारा जैन समाज। मगर आज शादी–ब्याह का भोज अक्सर रात्रि में, डिग्रीधारी एवं पदाधिकारी युवा के लिए लाखों का दहेज, प्रवचन-श्रवण तक के लिए वक्त की कमी, सामायिक एवं प्रतिक्रमण तो शायद पर्युषण काल तक ही सीमित रह गया, णमोकार मंत्र का उच्चारण भी त्रुटिपूर्ण......ऐसे माहोल में कैसे संभव है आत्म कल्याण? आत्म चिन्तन कर अत्यंत वेदना का एहसास होता है, मगर समाधान कहाँ? ऐसी सामाजिक शिथिलता का हश्र क्या होगा?

–मोहनोत गणपत जैन, सिटी पुलिस के पास, जोधपुर (राज.)

With Best Compliments From

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।

– आचार्य श्री हस्ती

M/s HIMA GEMS

7th Floor,
KOKPAH,
58-60, Cameron Road,
T.S.T. Kowloon
HONGKONG
Tel 23671457

Director
HEMANT SANCHETI

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments from :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE,
CHENNAI 600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET, POONAMALLEE,
CHENNAI 600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- Hire Purchase
- Leasing
- Bills Discounting
- Foreign Exchange

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chn@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O. : No. 16, Whites Road, II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014.

Branches :

• Bangalore • Coimbatore • Ernakulam
• Kollidam • New Delhi

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From:

EVEREST GEMS LTD.

16 B, KOK PAH MANSION,
58-60 CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON,
HONGKONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : *Sunil Lunawat*
Raj Mohan Kothari

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments from :

S. D. GEMS
&
SURBHI DIAMONDS

202, RATNA DEEP, BEHIND PANCHRATHNA,
OPERA HOUSE, MUMBAI - 400 004
PHONE : (O) 3690189, 3684091 (R) 8724429, 8735824
MOBILE : 98200-30872

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

परंपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं
आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.
आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

मे. राजमल लखीचंद
(गोल्ड एम्पोरियम)
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर ✆ 562929, 564771